प्रसिद्ध अमरीकी नीग्रो

लेखक—"सिम्पिल टेक्स ए वाइफ"
के रचयिता लैंग्स्टन ह्यूज़ेज़

"प्रसिद्ध अमरीकी नीग्रो" ऐसी जीवनदायिनी कहानियो की पुस्तक है जिसने अमेरिका के इतिहास के औपनिवेशिक काल से लेकर आधुनिक काल तक के २०० वर्षो के अन्तराल की पूर्ति की है। ये वही व्यक्ति हैं जिन्होंने मानव-जीवन के विभिन्न एवं प्रमुख क्षेत्रों में योगदान किया है। इनमें कुछ तो ऐसे भी हैं जिन्होने बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सहर्ष साहसपूर्ण ढंग से सामना किया है।

इस पुस्तक द्वारा कला के क्षेत्र में हमें फिलिप ह्विटले और पॉल लारेंस की पद्यमय रचनाएँ, डब्ल्यू० सी० हैन्डी का संगीत, मैरिअन एण्डर्सन के गीत, हेनरी ओ० टेनर की चित्रकला और इरा एल्ड्रिज की नाट्यकला का परिचय मिलेगा। वैज्ञानिक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व जार्ज वाशिंगटन कार्वर ने कृषि रसायन में क्रान्तिकारी अनुसन्धान करके एवं डैनियल हेल विलियम्स ने हृदय की शल्य-चिकित्सा का पथ-प्रदर्शन कर किया है। फ्रेडरिक डगलस तथा हैरियट टबमेन ऐसे योद्धा हैं जिन्होंने अपने देशवासियों की स्वतंत्रता के लिए साहसी संग्राम किये हैं और बुकर टी० वाशिंगटन के सदृश शिक्षा-शास्त्रियों की भी जीवन-झाँकी इसमें हैं। सर्वोच्च बेसबाल लीग में प्रवेश करनेवाले प्रथम नीग्रो सदस्य जैकी राबिन्सन और संयुक्तराष्ट्र-संघ के सचिवालय के नोबिल पुरस्कार-विजेता प्रथम नीग्रो सदस्य डा० रॉल्फ बंच के जीवन-चरित्र तो और भी भिन्न हैं। इसमें धर्म, वाणिज्य, श्रम और पत्रकारिता के भी अनेक नेता हैं।

लैंग्स्टन ह्यूज़ेज़ के अतिरिक्त कोई भी ऐसा शिक्षा-शास्त्री नहीं है जो अपने देश-बन्धुओं के जीवन-चरित्र का ऐसा प्रदर्शन करने की क्षमता रखता हो। उनका जन्म १ फरवरी सन् १९०२ को मिसौरी के जॉपलिन नामक स्थान में हुआ। पेन्सिलवानिया के लिंकन विश्वविद्यालय का स्नातक होने के बाद उन्होने 'डॉक्टर ऑफ लिटरेचर' की उपाधि सन् १९४३ में प्राप्त की। वे एक प्रख्यात कवि, उपन्यास-प्रणेता, नाटककार और शिक्षण-शास्त्री भी हैं। डॉक्टर ह्यूजेज़ को उनकी अनेक साहित्यिक रचनाओं के कारण, अनेक साहित्यिक पुरस्कार प्रदान किये गये। सन् १९४६ में उन्हें नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ आर्टस ऐन्ड लेटर्स द्वारा भी १००० डालर का एक अनुदान मिला था। उन्होंने अपनी "प्रसिद्ध अमरीकी नीग्रो" पुस्तक का जीवन-चरित पुस्तकमाला में प्रमुख आकर्षक स्थान बना दिया है।

पुस्तक विभिन्न चित्रों से आवेष्टित है।

प्रसिद्ध अमरीकी नीग्रो

लेखक

लैंग्स्टन ह्यूज़ेज़

अनुवादक

राम औतार अग्रवाल

प्रकाशक

इंडियन प्रेस (पब्लिकेशंस), प्राइवेट लिमिटेड,

इलाहाबाद

१९५७

विषय-सूची

प्रस्तावना

जनसाधारण की धारणा के अनुसार अमरीका नीग्रो का इतिहास दासत्व के युग के साथ प्रारम्भ हुआ, परन्तु यह सत्य नहीं है। अमरीका में ऐसे अनेक नीग्रो थे जो कभी दास नहीं रहे। इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्ति नये-नये स्थानों की खोज में पाश्चात्य जगत् में आये। इतिहासकारों का मत है कि क्रिस्टोफर कोलम्बस के साथ पैड्रो एलोंसो निनो नाम का व्यक्ति नीग्रो जाति का ही था। सन् १५१३ में बालबोआ ने जब प्रशान्त महासागर की खोज की तो अतलांतक महासागर से प्रशान्त महासागर तक के मार्ग (जो आजकल पनामा जलडमरूमध्य कहलाता है) को साफ करने में अनेक हब्शियों ने उसकी सहायता की थी। दक्षिण-पश्चिमी अमरीका के प्राचीनतम इतिहास से सम्बन्धित चार सौ वर्ष पहले के एक अफ्रीका निवासी, ऐस्टावैनिको का उल्लेख मिलता है। यह अश्वेत अन्वेक्षक स्पेननिवासियों के एक दल के साथ नई दुनिया में आया था। फ्लोरिडा के तट पर इन लोगों का जहाज टूट गया था और चार व्यक्तियों को छोड़कर शेष सब समुद्र में डूब गये थे। ये चार व्यक्ति, जिनमें ऐस्टावैनिको भी था, आठ वर्षों तक अमेरिका निवासी इण्डियनों के मध्य घूमते रहे। अंत में दक्षिण की ओर काफी दूर बढ़ते रहने के बाद ये सब मैक्सिको नगर में बस गये। वहाँ से सन् १५३९ में ऐन्टावैनिको ने, फ्रायर मार्कोज डा निजा के साथ, सिबोला के प्रसिद्ध सात नगरों की खोज में उत्तर की ओर प्रस्थान किया। कहानियों में सुने जानेवाले इन समृद्धशाली नगरों को खोज निकालने में ये लोग असमर्थ रहे। परन्तु रियो ग्रान्ड के निकट पहुँचते-पहुँचते साथ के स्पेन-निवासी जब मरुभूमि की गर्मी से विकल होने लगे तो उन्होंने उस अफ्रीकी को अकेले कुछ इण्डियनों के साथ आगे बढ़ने के लिए भेज

दिया। ऐस्टावैनिको ने आगे जाकर ऐरिजोना के समृद्धशाली क्षेत्र को खोज निकाला और इस प्रकार से यह क्षेत्र यूरोप-निवासियों के लिए खुल गया। उसने यह खोज दासों से भरे हुए पहले जहाज के जेम्सटाउन में आने के अस्सी वर्ष पूर्व की थी। उत्तरी अमरीका में मानव-विक्रय का रिवाज इसी के बाद से प्रारम्भ हुआ।

अमरीका के इतिहास में प्रारम्भ से ही सब दास बन्धनों में नहीं रहे। कुछ दास स्वतंत्र होने के लिए भाग गये। इनमें क्रिस्पस ऐटक्स भी था जो अमरीकी क्रान्ति के प्रारम्भ में अँगरेजों से लड़ता हुआ मारा गया। कुछ दासों को पृथक् से मजदूरी करके धन एकत्र करने की आज्ञा दे दी गई और उन्होंने अपने स्वामियों को वह धन देकर स्वयं को मुक्त कर लिया। कुछ दासों को, जैसा कि फिलिस व्हिट्ले के साथ हुआ, उनके स्वामियों ने स्वेच्छा से मुक्त कर दिया। इसके अतिरिक्त सांजर ट्रूथ, हैरिअट टबमैन तथा फ्रेडरिक डगलस जैसे लोगों ने भागकर स्वयं अपने को ही मुक्त नहीं किया वरन् अन्य दासों को भी मुक्त कराने के कार्य में अपना जीवन लगा दिया। परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि अमरीका के उत्तरी और दक्षिणी राज्यों में युद्ध होने से पूर्ण अमरीका में रहनेवाले नीग्रो जाति के स्वतन्त्र और मुक्त सभी व्यक्तियों पर लगभग ढाई सौ वर्ष तक किसी न किसी रूप में दास-प्रथा का प्रभाव अवश्य पड़ा। युद्ध के बाद भी नीग्रो नागरिकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। सन् १८६३ में अब्राहम लिंकन द्वारा मुक्ति-घोषणा के बाद स्वतंत्र परन्तु भूमि, धन और शिक्षा-विहीन नीग्रो नागरिक पूर्ण नागरिकता के आदर्श की ओर सतत प्रयत्न करते रहे हैं। अमरीका के कुछ भागों में पूर्ण नागरिकता का यह ध्येय अभी तक प्राप्त नहीं हो पाया है, यद्यपि वहाँ भी इस क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति हुई है।

प्रस्तावना

इस पुस्तक में जिन अमरीकी नीग्रो का वर्णन किया गया है उन्होंने केवल उन कठिनाइयों के बीच ही प्रगति नहीं की जो एक सामान्य अमरीकी के सामने आती है, प्रत्युत उन्हें नीग्रो होने के कारण अनेक अतिरिक्त कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ा। सबसे बड़ी कठिनाई दासता की थी, जिसमें एक मनुष्य का अपने ऊपर भी अधिकार न था। इसके अतिरिक्त मतदान का अधिकार न होना, राज्य के विश्वविद्यालय में प्रवेश न पा सकना, सार्वजनिक पुस्तकालय से पुस्तक लेने की आज्ञा न होना, कुछ मुहल्लों के मकानों को खरीदने या किराये पर लेने की आज्ञा न होना, अथवा संयुक्तराज्य अमरीका के कुछ भागों में रंगमंच पर संगीत-प्रदर्शन करने का अधिकार न होना आदि ऐसी कठिनाइयों का नीग्रो नागरिकों को सामना करना पड़ा है। ये कठिनाइयाँ ऐसी हैं जिनका इस पुस्तक के प्रत्येक व्यक्ति ने किसी न किसी रूप में सामना किया है। परन्तु उसने अपनी महान् शक्ति अथवा विद्वत्ता द्वारा उनको पार करके स्वयं को असाधारण व्यक्ति बनाया है। उन्होंने यह कैसे किया---यह उनके जीवन-चरित्र का एक भाग है। किन परिस्थितियों में उन्होंने ऐसा किया। यह उनकी कहानी का दूसरा भाग है। उनके व्यक्तिगत प्रयत्नों और परिस्थितियों के प्रकाश में उनके जीवन को समझने के लिए इन दोनों भागों को मिलाना अत्यन्त आवश्यक है।

अमरीकी जनतंत्र ने विश्व में सबसे अधिक संख्या में प्रसिद्ध नीग्रो लोगों को उत्पन्न किया है। इनमें औपनिवेशिक कवयित्री फिलिस ह्विट्ले से लेकर पुलीज़र पुरस्कार के विजेता आधुनिक कवि ग्वेन्डोलिन ब्रुक्स, निर्भय सेनानी फ्रेडरिक डगलस से लेकर वर्तमानकालीन विश्व चैम्पियन जो लुई, उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ के महान् शेक्सपीरिअन अभिनेता इरा ऐल्ड्रिज से लेकर थियेटर, रेडियो तथा चलचित्र जगत् के कलाकार ईथिल वाट्स अथवा स्वर्गीय कनाडा ली; दासता के युग के गण्यमान्य पादरी रिचर्ड ऐलेन से लेकर

बोस्टन विश्वविद्यालय के डीन होवर्ड थर्मेन जैसे लोग सम्मिलित हैं। अमरीका में अनेक प्रसिद्ध नीग्रो नागरिक हुए है। इन्होंने विज्ञान, राजनीति, कला, क्रीड़ा, धर्म तथा वाणिज्य आदि मानव-जीवन के प्रत्येक कार्यक्षेत्र में काम किया है। उनमें से कुछ के जीवनचरित्रों पर प्रकाश डालने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है परन्तु इनके चरित्र हमारे देश के अन्य अनेक ऐसे व्यक्तियों के जीवन का प्रतिनिधित्व करते हे जिन पर हमें गर्व है।

फिलिस व्हिट्ले

जन्म लगभग १७५३—मृत्यु १७८४

वह एक दुबली-पतली, छोटी सी चतुर और शर्मीली सुन्दर अफ्रीकी बालिका थी। उसका चाकलेट के रंग जैसा शरीर था। उसकी कोमल आकृति और चमकाली आँखों में कुछ ऐसा आकर्षण था कि जैसे ही सिनेगल से आने-वाले जहाज से वह उतरी, जॉन व्हिट्ले ने उसे अपनी पत्नी और समवयस्क बच्चों के लिए खरीद लिया। व्हिट्ले के साथ बोस्टन की सड़कों पर से जाते समय वह मासूम बालिका नई दुनिया के विचित्र दृश्यों को आँखें फैलाकर आश्चर्य से देख रही थी। सड़क के ठण्डे पत्थरों पर नंगे पैरों जाती हुई इस बालिका को पता न था कि वह कहाँ जा रही है। वह नहीं समझ पा रही थी कि अपनी इस दशा पर हँसे या आँसू बहाये।

जॉन व्हिट्ले दर्जी का काम करते थे। उनकी आर्थिक दशा काफी अच्छी थी। वह बालिका को अपने घर ले गये, जहाँ सबने उसके प्रति काफी दया दिखाई। बालिका की आयु के बारे में किसी को कुछ मालूम न था, परन्तु उसके उखड़ते हुए बचपन के दाँतों को देखकर उसकी स्वामिनी ने यह अनुमान लगाया कि वह छः या सात वर्ष की होगी। सन् १७६१ में न तो बोस्टन में ही कोई सिनेगल भाषा समझता था और न वह बालिका उस समय अँगरेजी जानती थी, इस कारण उसके पिछले जीवन और जन्म के नाम को आज तक कोई नहीं जान सका। व्हिट्ले परिवार के लोग उसे फिलिस नाम से पुकारने लगे और उस नाम के साथ उन्होंने व्हिट्ले भी जोड़ दिया। यह बालिका इतनी विदुषी निकली कि इक्कीस वर्ष की हाने तक फिलिस व्हिट्ले नाम केवल उपनिवेश राज्यों में ही नहीं बल्कि इंगलैण्ड तक में प्रसिद्ध हो गया। इस

छोटी सी अफ्रीकन दासी की गणना उस समय के सर्वप्रसिद्ध कवियों में की जाने लगी।

भाग्यवश फिलिस को एक अच्छे स्वभाववाली स्वामिनी मिली थी जिन्होंने उसकी कुशाग्र बुद्धि को देखकर उसे लिखना-पढ़ना सिखा दिया। उस समय अमरीका के बहुत से भागों में दास-दासियों को पढ़ना-लिखना सिखाना कानून और रिवाज के विरुद्ध समझा जाता था। फिर भी कुछ भाग्यशाली दास-दासियाँ पढ़ना-लिखना सीख ही जाते थे। इनमें से कुछ तो फिलिस की कविताओं के प्रकाशित होने से पूर्व ही प्रसिद्ध कवि भी हो चुके थे। इन कवियों में लूसी, टैरी और जुपिटर हैमण्ड के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

फिलिस तथा अन्य दास-दासियों से भरे हुए जहाज ने जिस समय बोस्टन के बन्दरगाह में लंगर डाला था उस समय अमरीका के तेरह उपनिवेश राज्यों में ब्रिटिश तानाशाही के खिलाफ विद्रोह की आग फैल रही थी। इँगलैण्ड के राजा जॉर्ज तृतीय के सैनिक बोस्टन की सड़कों पर लगातार गश्त लगाते रहते थे। जिस सड़क पर फिलिस का घर था उसी सड़क पर अपनी किशोरावस्था में फिलिस ने एक बार विद्रोही नागरिकों के एक दल को ब्रिटिश सैनिकों से भिड़ते हुए देखा। बोस्टन के इन विद्रोही नागरिकों में उस रात क्रिस्पस ऐटक्स नाम का एक विशालकाय नीग्रो भी था। ब्रिटिश सैनिकों की गोली का शिकार होनेवाला और अमरीका की स्वतन्त्रता के लिए रक्त बहानेवाला सबसे पहला व्यक्ति क्रिस्पस ऐटेक्स ही था। उसकी स्मृति में आज भी बोस्टन में एक स्मारक बना हुआ है।

इस घटना के पाँच वर्ष बाद जनरल जार्ज वाशिंग्टन के नेतृत्व में स्वतन्त्रता-संग्राम छिड़ा। बोस्टन के घेरे के समय फिलिस ने जॉर्ज वाशिंग्टन के विषय में एक कविता लिखी। कविता की अन्तिम पंक्तियों का भाव है—

फिलिस ह्विट्ले

"हे महान् सेनानी! बढ़े चलो, सद्धर्म तुम्हारे साथ है।
देवी तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करे। हे वाशिंग्टन!
चमकते हुए स्वर्ण के मुकुट, प्रासाद और सिंहासन!
तुम्हारे हों।"

राष्ट्रपिता जार्ज वाशिंग्टन ने युवा निग्रो कवयित्री को धन्यवाद देते हुए एक पत्र लिखा। पत्र में उन्होंने उसकी असाधारण काव्य-प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। पत्र के अंत में उन्होंने लिखा कि उस जैसी योग्य और प्रतिभाशालिनी कवयित्री से मिलकर उन्हें अपार हर्ष होगा।

क्रान्ति के समाप्त हो जाने पर और अमरीका के स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् फिलिस ने स्वतन्त्रता और शान्ति शीर्षक एक अत्यन्त सुन्दर कविता लिखी। इस कविता में उसने स्वतन्त्रता की सुन्दर देवी का अत्यन्त भावपूर्ण शब्दों में अभिनन्दन किया।

अमरीकी क्रान्ति के समाप्त हो जाने के पश्चात् भी न्यू इंगलैण्ड-वासियों ने दास-प्रथा का त्याग नहीं किया था। परन्तु ह्विट्ले परिवार ने सन् १७७२ ही में फिलिस की प्रतिभा से प्रभावित होकर उसे व्यक्तिगत स्वतन्त्रता दे दी थी। वैसे भी फिलिस के साथ कोई बुरा व्यवहार नहीं किया गया था। उसका पालन-पोषण एक सुसंस्कृत घर में हुआ। उन दिनों दास-दासियों को घर में अलग कमरा नहीं दिया जाता था परन्तु फिलिस की स्वामिनी ने उसको एक ऐसा गरमी और प्रकाशयुक्त कमरा दिया जहाँ वह, अपना काम समाप्त करने के बाद, कुछ लिख-पढ़ सके। अवश्य ही फिलिस ने इन सुविधाओं से काफी लाभ उठाया और उस युग में, जब कि किसी भी जाति की स्त्रियों के लिए उत्तम शिक्षा पाना, कविताएँ लिखना या लेटिन भाषा पढ़ना सुलभ नहीं था, फिलिस की गणना बोस्टन की सुसंस्कृत महिलाओं में की जाने लगी। फिलिस ने केवल बाइबिल ही नहीं पढ़ी, प्रत्युत उसने मिल्टन

ड्राइडन तथा अन्य प्रसिद्ध साहित्यिकों की रचनाओं का भी अध्ययन किया। अलेक्जेन्डर पोप द्वारा अनूदित होमर के ग्रन्थ से उसे विशेष प्रेम था और उस समय की साहित्यिक धारा के अनुकूल होमर के छन्द और शैली का उसकी रचनाओं पर काफी प्रभाव पड़ा।

व्हिट्ले परिवार के अनेक मित्रों के घरों में फिलिस का स्वागत बड़े आदर के साथ किया जाता था। उसको ओल्ड साउथ चर्च की सदस्या बनाया गया। बोस्टन के कुछ गण्यमान्य व्यक्ति उसके विशेष प्रशंसक थे और उसका काव्य एक चर्चा का विषय बन गया था। कुछ लोग फिलिस की कविता को सन्देह की दृष्टि से देखते थे। परन्तु वहाँ ऐसे भी अनेक लोग थे जो समाचार-पत्रों में इस बात की घोषणा करते थे कि वे फिलिस की प्रतिभा से भली भाँति परिचित थे और यह जानते थे कि वह स्वयं ही कविताएँ लिखती है।

फिलिस के साथ एक दासी जैसा व्यवहार नहीं हुआ था, इस कारण दास-प्रथा के बारे में उसने बहुत कम लिखा है। फिर भी बोस्टन में वह ऐसे अनेक दासों को जानती थी जिनकी दशा बहुत शोचनीय थी। अर्लडार्ट माउथ को समर्पित उसकी कविता के एक छन्द से यह पता चलता है कि दास-प्रथा को वह तिरस्कार की दृष्टि से देखती थी। छन्द का भाव इस प्रकार है :—

"भाग्य के कठोर हाथों ने बाल्यावस्था में ही मुझे अफ्रीका की सुखदायिनी भूमि से छीन लिया। आह ! वह क्षण कितना दुखपूर्ण होगा। मेरे माता-पिता के हृदयों में कितनी वेदना पनपती होगी। उस व्यक्ति का हृदय अवश्य पत्थर का रहा होगा जिसने एक पिता को गोद से उसको बच्ची को छीना। यही मेरी कहानी है। हे ईश्वर ! किसी को भी ऐसा अत्याचार न सहना पड़े।"

फिलिस ने जिस समय अपनी पहली कविता लिखी थी उस समय वह केवल तेरह वर्ष की थी। सोलह वर्ष की अवस्था में उसकी "पूज्य जार्ज ह्विट्फील्ड की मृत्यु पर" शीर्षक कविता प्रकाशित हुई। उसके दुर्बल शरीर

को देखकर बीस वर्ष की अवस्था में ही उसकी स्वामिनी ने उसे समुद्र द्वारा इँगलैण्ड की यात्रा करने की अनुमति दे दी। लन्दन में 'धर्म और नीति सम्बन्धी विविध विषयों पर कविताएँ' नाम की उसकी प्रथम पुस्तक प्रकाशित हुई। इँगलैण्ड में फिलिस ह्विट्ले काउन्टेस हटिंग्डन की अतिथि बनी। जिन्होंने उसे अनेक बड़े साहित्यिकों से मिलने की सुविधा दी। काउन्टेस का विचार राजा से उसकी भेंट कराने का था। परन्तु बीच में ही बोस्टन में श्रीमती ह्विट्ले के असाधारण रूप से अस्वस्थ हो जाने के कारण उसे वापस घर आना पड़ा। लन्दन छोड़ते समय वहाँ के मेयर ने फिलिस को मिल्टन के "पैराडाइज लॉस्ट" की एक अत्यन्त सुन्दर प्रति भेंट की।

फिलिस के बोस्टन लौटने के कुछ ही वर्षों बाद श्रीमती ह्विट्ले का देहान्त हो गया। कुछ वर्ष पश्चात् जॉन ह्विट्ले का भी देहान्त हो गया। उनके बच्चे मेरी और नेथेनियल भी अब घर पर नहीं रहे थे। मेरी का विवाह हो गया था। उसका भाई योरप चला गया था। सम्भवत: अपना घर बसाने की इच्छा से फिलिस ने एक व्यक्ति से विवाह कर लिया जो दुर्भाग्यवश फिलिस के योग्य न निकला। उसका पति, जॉन पीटर्स स्थिर स्वभाव का व्यक्ति न था। वह कभी नानबाई बन जाता तो कभी बाल काटने का काम शुरू कर देता, कभी पंसारी के मुंशी का काम करने लगता तो कभी तरह-तरह के वेश बदलकर स्वयं को डाक्टर या वकील बताने लगता। शायद फिलिस से उसने इसलिए विवाह किया था कि वह प्रसिद्ध थी, और वह बिना कुछ किये ही एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बन जाना चाहता था। उनके तीन बच्चे पैदा हुए जिनमें से दो बिना किसी देख-भाल के कारण बचपन में ही मर गये। तीसरे बच्चे के जन्म के बाद जॉन पीटर्स फिलिस को एक साधारण से होटल में नौकरी करके पेट पालने के लिए छोड़कर चला गया। फिलिस और उसका बच्चा दोनों बीमार हो गये और शीत ऋतु की ठण्ड में, क्रिस्मस के उत्सव से कुछ पहले, दोनों की मृत्यु हो

गई। दोनों को साथ ही दफनाया गया। यह घटना सन् १७८४ की है। कुछ ही समय पूर्व फिलिस ह्विट्ले की कविताओं का प्रथम अमरीकी संस्करण बोस्टन में प्रकाशित हुआ था।

उस युग में, आज की ही तरह, काव्य-रचना के कार्य से बहुत कम रुपया मिलता था। फिलिस की मृत्यु निर्धनता में हुई। अन्तिम क्रिया हो जाने के बाद उसके पति का कर्जा चुकाने के लिए उसकी 'पैराडाइज लॉस्ट' की दुर्लभ एवं सुन्दर प्रति बेचनी पड़ी। इस समय वह पुस्तक हावर्ड विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में सुरक्षित रखी हुई है। उसकी मृत्यु के बाद से अब तक फिलिस की कविताओं के आठ संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। सम्पूर्ण अमरीका में आज अनेकों स्कूल, महिला संघ आदि के नाम इस प्रसिद्ध कवयित्री के नाम पर रखे गये हैं। अपने छोटे से जीवन में उसने अनेक चढ़ाव-उतार देखे। अफ्रीका में जन्म लेकर उसने बोस्टन और लन्दन की सड़कों की सैर की। दास-दासियों की झोपड़ियों और राजाओं के महल, प्रसिद्धि और निर्धनता, होमर, मिल्टन और पोप का काव्य तथा होटल की दासवृत्ति—सब में उसके जीवन की छाप है। जीवन के अन्तिम वर्षों में, शायद लज्जा और निर्धनता के कारण फिलिस ने अपने बहुत से मित्रों और सम्बन्धियों से मिलना-जुलना बन्द कर दिया था। समाचार-पत्रों में उसकी मृत्यु की एक सक्षिप्त सी सूचना पढ़कर उन सबको बहुत आश्चर्य और दुःख हुआ।

परन्तु फिलिस ने श्रीमती ह्विट्ले के उपकारों को कभी नहीं भुलाया। उनके देहान्त होने के पश्चात् फिलिस ने अपने एक मित्र को लिखा :—

"स्वामिनी की मृत्यु का मुझे बहुत दुःख है; उनकी मृत्यु के साथ मैंने अपनी माँ, बहन, भाई सभी को खो दिया है। जिस समय अपने घर में उन्होंने मुझे शरण दी थी उस समय मैं एक अपरिचिता और परित्यक्ता थी। उन्होंने मुझे दासी नहीं बल्कि बेटी बनाकर रखा। अत्यन्त प्रेम के साथ उन्होंने

मुझे सर्वोत्तम शिक्षा दी। मैं इसे सदैव याद रखूँगी। उनका निजी जीवन उनकी शिक्षाओं से कहीं अधिक ऊँचा था; उन्हें देखकर यह कहना पड़ता है कि श्रेष्ठ जीवन का उदाहरण उपदेश की तुलना में बहुत अधिक ऊँचा है।''

दास-प्रथा के उस युग में एक कोमल हृदय अफ्रीकी बालिका के लिए भाग्य और अधिक दयालु नहीं हो सकता था। ह्विट्ले परिवार के लोग काफी अच्छे थे। परन्तु उनकी इस दया के होते हुए भी हो सकता है, बालिका होने के कारण फिलिस कभी-कभी रात के अँधेरे में अपनी माँ को याद करके रोती हो। न्यू इँगलैण्ड के कँपा देनेवाले शीत में हो सकता है उसे दूर सिनेगल की चमकती हुई धूप और ताड़ के पेड़ याद आते हों। अपनी किशोरावस्था में पोप की कविताओं को दीपक के प्रकाश में पढ़ते समय, बहुत सम्भव है, उसकी धुँधली स्मृति में अफ्रीका के नगाड़ों की गूँज सुनाई देती हो। वह उन्हें अब नहीं सुन सकती, यह सोचकर क्या उसने कभी अनाथ बालिका की भाँति अकेलेपन का अनुभव किया? उसने इस बारे में कभी कुछ नहीं लिखा इस कारण, कोई नहीं जानता कि उसके मन में कैसे विचार उठते थे। उस युग में काव्य में निजी जीवन की बातें लिखने का रिवाज नहीं था।

रिचर्ड ऐलेन

जन्म लगभग १७६०—मृत्यु १८३१

दास-प्रथा के युग में धर्म एक ऐसा सहारा था जिससे एक दास को भी वंचित नहीं किया जा सकता था। उस समय धर्म का इतना अधिक महत्त्व था कि कुछ लोग ईसाई धर्म के नाम पर अफ्रीकी "हब्शियों" को, उनकी आत्मा का उद्धार करने के बहाने, बहुधा दास बना डालते थे। एक बार इस प्रकार से उनकी "आत्मा का उद्धार" करने के पश्चात् ये लोग उनके साथ इतना बुरा व्यवहार करते थे कि उनके लिए ईश्वरोपासना तक करना कठिन हो जाता था।

अमरीका के महान् धमर्पोदेशक नीग्रो रिचर्ड ऐलेन का जन्म फिलाडेल्फिया में लगभग १७६० में, एक दास के रूप में, हुआ था। बाल्यावस्था में ही उन्हें डेलावेअर के एक कृषक के हाथ बेच दिया गया। अपनी युवावस्था में वह एक धर्मोपदेशक हो गये और अपने स्वामी की आज्ञा लेकर खेतों पर ही प्रार्थना-सभाएँ करने लगे। अपनी वक्तृत्वशक्ति और सचाई के बल पर उन्होंने अपने स्वामी तक को अपने मत का अनुयायी बना लिया। अमरीकी क्रान्ति के समय रिचर्ड ऐलेन ने खचड़ा खींचने का काम करके धन कमाना प्रारम्भ किया और सन् १७७७ तक उन्होंने दास-वृत्ति से मुक्त होने योग्य धन एकत्र करके अपने लिए स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली। जब वह फिलाडेल्फिया, एक स्वतन्त्र मनुष्य की तरह, रहने के लिये लौटे उस समय उनकी आयु २६ वर्ष की थी।

ऐलेन के धर्मोपदेशों और नेतृत्व में कुछ ऐसा विलक्षण आकर्षण था कि अनेक व्यक्ति उनकी प्रार्थना-सभाओं की ओर आकर्षित होने लगे। उन दिनों

फिलाडेल्फिया में नीग्रो जाति के लोगों की अपनी कोई पृथक् धर्म परिषद् न थी। इस कारण युवकरिचर्ड ने सेन्ट जार्ज चर्च में जाना प्रारम्भ कर दिया। यह चर्च उस समय स्वतन्त्र नागरिक और अश्वेत दास दोनों ही के लिये खुला था। इस चर्च में रिचर्ड ऐलेन को कभी-कभी उपदेश देने की भी आज्ञा मिल जाती थी। ऐसे अवसरों पर चर्च में नीग्रो जाति के लोगों की संख्या बहुत अधिक बढ़ जाती थी। यह संख्या धीरे-धीरे इतनी अधिक बढ़ने लगी कि अधिकारी लोग अश्वेत भक्तों का बहिष्कार करने की बात सोचने लगे। चर्च के कुछ श्वेत सदस्यों ने ऐलेन के उपदेश देने का विरोध किया और कुछ तो यहाँ तक चाहने लगे कि नीग्रो भक्तों को चर्च में प्रवेश ही न करने दिया जाय। ऐसी स्थिति में रविवार को एक दिन जब रिचर्ड ऐलेन और उनके दो मित्र, एब्सोलम जोन्स और विलियम ह्वाइट प्रार्थना कर रहे थे, चर्च के एक अधिकारी ने बीच में ही उनकी प्रार्थना भंग कर दी और उन्हें बलपूर्वक उठाकर उनसे वहाँ से निकल जाने को कहा। इस घटना से क्षुब्ध होकर ऐलेन ने, जोन्स की सहायता से, स्वतन्त्र अफ्रीकी समाज की स्थापना की, जिसके आधार पर आगे चलकर सन् १७९४ में बैथेल मैथोडिस्ट ऐपिस्कोपल चर्च की स्थापना हुई, जहाँ पर नीग्रो शान्ति के साथ प्रार्थना कर सकते थे।

इस चर्च की स्थापना के एक वर्ष पूर्व फिलोडेल्फिया नगर में पीले बुखार की ऐसी भयङ्कर बीमारी फैली थी कि रोगियों को देखने के लिए डाक्टरों और नर्सों की कमी पड़ गई। देखभाल करनेवालों का इतना अभाव हो गया कि अनेक शव बिना दफनाये ही पड़े रहने लगे। अधिकांश श्वेत व्यक्ति नगर छोड़कर भाग गये थे वे। रोगी अथवा मृतक के पास जाने से डरते थे। इस कारण श्वेत लोगों ने, यह सोचकर कि नीग्रो जाति में मरने वालों की संख्या अपेक्षाकृत कम है, एक विज्ञप्ति द्वारा नीग्रो नागरिकों से रोगियों की परिचर्या करने तथा मृतकों को दफनाने के लिए कहा। जो दास थे उन्हें यह बाध्य होकर

रिचर्ड ऐलेन

करना पड़ा। स्वतन्त्र नीग्रो नागरिक ऐसी विज्ञप्ति से बहुत अप्रसन्न हुए जिसके द्वारा उनकी जाति के लोगों से इतनी असाधारण और भयङ्कर बीमारी से लड़ने को कहा गया। एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें रिचर्ड ऐलेन तथा एब्सोलम जोन्स जैसे गण्यमान्य व्यक्तियों को उचित सम्मति के लिए आमन्त्रित किया गया। प्रार्थना और गम्भीर विचारविमर्श के पश्चात् यह निश्चय किया गया कि ऐसी आपत्ति के समय पीड़ितों की सहायता करना सब ईसाइयों का कर्त्तव्य है, इस कारण अश्वेत व्यक्तियों की एक समिति ने नगर के मेयर को बिना किसी शर्त के अपनी सेवाएँ अर्पित करने का आश्वासन दिया।

फिलाडेल्फिया के असंख्य नीग्रो नागरिकों ने श्वेत नागरिकों के घरों में जाकर सहायता करनी आरम्भ कर दी। उन्होंने मरते हुए रोगियों की परिचर्या की तथा उपेक्षित शवों को दफनाया। उस समय के एक बड़े चिकित्सक डाक्टर बेंजामिन रश ने ऐलेन और जोन्स को अपने सहायक के रूप में लेकर उन्हें रोगियों की देखभाल करना तथा दवा देना सिखाया। नये लोगों को यह काम सिखाना अत्यन्त आवश्यक था, क्योंकि रोग के कारण बहुत से चिकित्सक मर गये थे। शेष या तो थक चुके थे या अपने-अपने परिवारों के साथ नगर छोड़कर भाग गये थे। नगर में सर्वव्यापी भय फैला हुआ था। कोई भी स्वस्थ मनुष्य छूत लगने के भय से रोगी के निकट जाना नहीं चाहता था। यदि अश्वेत नागरिक सेवा शुश्रूषा के लिये आगे न बढ़ते तो यह भयङ्कर बीमारी नगर की सम्पूर्ण जन-संख्या को नष्ट कर देती।

महामारी शान्त हो जाने के बाद मैथ्यूकैरे नाम के एक श्वेत नागरिक ने इस भयङ्कर रोग के सम्बन्ध में एक लेख प्रकाशित किया जिसमें उसने ऐलेन और जोन्स के कार्यों की प्रशंसा की। परन्तु उसके साथ-साथ उसने यह भी लिखा कि नीग्रो नागरिकों से इससे भी अधिक कार्य की आशा की जाती थी और उन पर यह आरोप लगाया कि कुछ नीग्रो नागरिकों ने इस कार्य के द्वारा

धन भी इकट्ठा किया। वास्तव में महामारी के जोर के समय मैथ्यूकैरे स्वयं नगर छोड़कर भाग गया था, जब कि ऐलेन, जोन्स और उनके साथी निरन्तर सेवा कार्य करते रहे थे। बीमारी से लगभग तीन सौ नीग्रो मरे थे। मैथ्यूकैरे के लेख के उत्तर में ऐलेन और जान्स ने एक विज्ञप्ति प्रकाशित की जिसमें उन्होंने प्राप्त धन का विस्तृत विवरण दिया और इस बात का स्पष्टीकरण किया कि प्राप्त धन इतना कम था कि वह मजदूरी देने और कफन खरीदने तक के लिये पर्याप्त न था। विज्ञप्ति में उन्होंने अपनी सेवाओं का विस्तार-पूर्वक वर्णन किया और बताया कि किस प्रकार के धर्म का सहारा लेकर और उस ईश्वर में पूर्ण विश्वास करके, जो धधकते हुए अग्निकुंड में भी रक्षा करता है, वे आगे बढ़े थे। उन्होंने लिखा, "ईश्वर ने हमें समस्त भयों से मुक्त करके हमें शक्ति प्रदान की और हमारे हृदयों को अधिक-से-अधिक उपकारी बनने की प्रेरणा दी।" निश्चय ही नगर परिषद् और मेयर ने इस बात का अनुभव किया कि फिलाडेल्फिया के नीग्रो नागरिकों ने प्लेग की भयङ्कर बीमारी के समय सार्वजनिक कष्ट निवारण करने में बहुत सहयोग दिया था। एक प्रस्ताव द्वारा उन्होंने उनकी सेवाओं के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

एक उपदेशक और सार्वजनिक नेता के रूप में रिचर्ड ऐलेन की बहुत ख्याति फैली और उनके नेतृत्व में नीग्रो धर्म-प्रेमियों की संख्या काफी वेग से बढ़ी। उनका चर्च, जो कि मदर बैथेल के नाम से विख्यात था, खूब फूला-फला। सन् १८२० तक फिलाडेल्फिया में अश्वेत भक्तों की संख्या चार हजार से भी ऊपर पहुँच गई। अफ्रीकन मैथोडिस्ट ऐपिस्कोपल के तत्त्वावधान में इस मत के चर्चों की स्थापना पश्चिम में पिट्सबर्ग और दक्षिण में चार्ल्सटन (दक्षिण केरोलिना) तक हो चुकी थी। परन्तु सन् १८२२ में चार्ल्सटन में 'डेनमार्क वैसे' दास-विद्रोह के कारण दक्षिण में पृथक् नीग्रो चर्चों के प्रसार में थोड़ी बाधा उपस्थित हुई। दास-वृत्ति के समर्थकों को भय था कि इस प्रकार

के धर्मसंघों द्वारा नीग्रो जाति में एकता स्थापित हो जायगी। परिणामस्वरूप अश्वेत धर्म प्रचारकों को कारावास में डाल दिया गया और चर्च जाने के लिए दासों को अनेक प्रकार की यन्त्रणाएँ दी जाने लगीं। सन् १८३० में वर्जिनिया में, नैट टर्नर के नेतृत्व में हुए एक विद्रोह के पश्चात्, कानूनों द्वारा समस्त नीग्रो धर्म-प्रचारकों पर कठोर नियन्त्रण लगा दिये गये। यह सब कुछ होते हुए भी प्रार्थना-सभाएँ जारी रहीं। सभाओं का आयोजन जंगलों और कोठरियों तक में किया जाने लगा। कभी-कभी जब कठिन नियन्त्रण के कारण किसी भी प्रकार की सभा का आयोजन करना असम्भव हो जाता तो नीग्रो स्त्री-पुरुष अकेले ही प्रार्थना करने लगते।

एक पृथक् नीग्रो चर्च के निर्माण की सम्भावना के विषय में दासों के स्वामियों का भय करना बिलकुल स्वाभाविक था। वे अनुभव करने लगे थे कि श्वेतों में दास-दासियों द्वारा गाया जानेवाला इजराइलियों से सम्बन्धित गीत वास्तव में स्वतन्त्रता की पुकार है जो उनके मध्य में थके हुए दास-दासियों के मुख से निकला है। उस समय से अब तक नीग्रो चर्चों ने अनेक महान् नेताओं को जन्म दिया है। इनमें प्रिंसहॉल जिन्होंने **बोस्टन चाय पार्टी*** कुछ दिनों में

---

* सप्तवर्षीय युद्ध में हुए अत्यधिक व्यय की पूर्ति के लिए इंगलैण्ड की पार्लिया-मेंट ने सन् १७६५ ई० में स्टाम्प-ऐक्ट नामक एक अधिनियम पास किया। इसके अनुसार अमरीकियों को अपने कानूनी दस्तावेजों पर स्टाम्प लगाना अत्यन्त आवश्यक हो गया। यहाँ यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि इंगलैण्ड की पार्लियामेंट में अमरीकी प्रतिनिधि नहीं बुलाए जाते थे। अतः अमरीकियों ने "प्रतिनिधि नहीं तो कर नहीं"—नारा लगाते हुए स्टाम्प ऐक्ट का ऐसा भयंकर विरोध किया कि इंगलैण्ड की पार्लियामेंट को वह कानून रद्द करना पड़ा।

इसके कुछ समय बाद यह दिखाने को कि इंगलैण्ड की पार्लियामेंट को उपनिवेशों पर कर लगाने का नैतिक अधिकार है, ब्रिटिश पार्लियामेंट ने अमरीका जानेवाली चाय आदि वस्तुओं पर नाममात्र को कर लगाया। इस बार फिर अमरीकी जनता भड़क उठी

कैम्ब्रिज में एक चर्च की स्थापना की एवं नीग्रो नागरिकों में पारस्परिक प्रेम-वर्धन के लिए फ्रीमेसनरी (भ्रातृ-संघ) की नींव डाली, तथा ऐडम पोवेल, जो अबोसीनिया बैप्टिस्ट चर्च के अध्यक्ष एवं न्यूयार्क नगर से कांग्रेस के सदस्य थे, विशेषरूप से उल्लेखनीय है।

रिचर्ड ऐलेन उस चर्च के प्रमुख पादरी हो गये जिसकी उन्होंने स्थापना की थी। परन्तु उनका कार्य-क्षेत्र अपने मत तक ही सीमित न था। स्वतंत्र अफ्रीकी समाज के नेता होने के नाते उन्होंने दास-प्रथा के उन्मूलन के लिए अनेक निवेदन-पत्र लिखे। अमरीका के प्रथम नीग्रो समाचार-पत्र "फ्रीडम्स जनरल" के लिए भी वह लेख लिखते थे। सन् १८१७ में फिलाडेल्फिया में ऐलेन के नेतृत्व में तीन हजार नीग्रो एक महत्त्वपूर्ण विषय पर विचार करने के लिए एकत्र हुए। जाति-भेद की समस्याओं को हल करने के लिए अमरीकी उपनिवेशवादी समाज ने नीग्रो जाति के लोगों को अफ्रीका वापिस भेजने की योजना बनाई थी। फिलाडेल्फिया की सभा ने इस योजना का तीव्र विरोध किया। उपनिवेशवाद के समर्थक कुछ लोगों ने जब नीग्रो नागरिकों को रात्रि के समय पकड़कर बलप्रयोग द्वारा अफ्रीका जाने के लिए उनकी स्वीकृति लेने का प्रयत्न किया तो न्यूयार्क, पैनसिलवानिया, डेलावेअर तथा मेरीलैण्ड के नीग्रो नागरिकों ने इस प्रकार के अपमानों से अपनी रक्षा करने के लिए एक स्थायी संघ निर्माण करने का विचार करना प्रारम्भ कर दिया। स्वतंत्र नीग्रो नागरिकों

और उसने "प्रतिनिधि नहीं तो कर नहीं" आन्दोलन शुरू किया। जब सन् १७७३ ई० में ईस्ट-इंडियन कंपनी के चाय की पेटियों से लदे हुए कुछ जहाज बोस्टन बंदरगाह पर आये तो वहाँ के कुछ अमरीकी अपनी शकल 'रेड इंडियनों' के समान बनाकर उन जहाजों में घुस गये। उन्होंने उसमें से सब चाय की पेटियों को निकाल कर समुद्र में फेंक दिया और जहाजों में आग लगा दिया। इस प्रकार उन्होंने यह प्रकट कर दिया कि इंगलैण्ड की पार्लियामेंट को उन पर कर लगाने का अधिकार नहीं है। यह घटना इतिहास में 'बोस्टन की चाय पार्टी' के नाम से प्रसिद्ध है।

की स्वतंत्रता और अधिकारों का अपहरण करनेवाले कानूनों को बढ़ते हुए देखकर अश्वेत नागरिक और भी अधिक व्यग्र हो उठे।

सन् १८३० में फिलाडेल्फिया में एक समिति की बैठक हुई जिसमें बिशप ऐलेन भी उपस्थित थे। इस समिति ने प्रथम अश्वेत संघ का निर्माण किया। ऐलेन को इसका सभापति चुना गया। यह निश्चित हुआ कि अश्वेत संघ प्रत्येक सम्भव वैध साधन द्वारा नीग्रो जाति के लोगों को साधारण मनुष्यों के स्तर तक उठाने का प्रयत्न करेगा। नीग्रो नेताओं ने नीग्रो नागरिकों को अध्यवसायी बनने, भूमि खरीदने, एकता स्थापित करने तथा प्रत्येक ऐसे अवसर से लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया जो मानवता के पोषक उन्हें स्वतंत्र व्यक्तियों के स्तर तक पहुँचाने के लिए उनके सम्मुख रखें। यह स्पष्ट हो गया कि नीग्रो अपने लिए पूर्ण नागरिकता, तथा अपने दास बन्धु-बान्धओं के लिए स्वतंत्रता चाहते थे। वे अफ्रीका में नहीं बल्कि अमरीका में, जहाँ उनका जन्म हुआ था, अपने लिए नागरिक के रूप में स्थान प्राप्त करना चाहते थे। बिशप रिचर्ड ऐलेन ने इस प्रथम अश्वेत संघ के संविधान पर अपने हस्ताक्षर किये।

मृत्यु से बहुत पहले ही ऐलेन को "भ्रातृत्व प्रेम की नगरी" का एक गण्यमान्य नागरिक माना जाने लगा था। आज उनका स्मरण मुख्यतः अफ्रीकन मैथोडिस्ट ऐपिस्कोपल चर्च के संस्थापक के रूप में किया जाता है। इस संस्था की सदस्य संख्या दस लाख से भी ऊपर है। इस संस्था के अपने सैकड़ों भव्य चर्च हैं, इसने अनेक विद्यालयों की स्थापना की है, और उसका अपना एक बड़ा प्रकाशन गृह भी है। केवल समस्त अमरीका में ही नहीं वरन् विदेशों में भी, जहाँ इस संस्था के सदस्य शिक्षक और उपदेशक के रूप में गये हैं, यह एक राष्ट्रीय शक्ति मानी जाती है।

इरा ऐल्ड्रिज

जन्म १८०७--मृत्यु १८६७

अमरीका में जन्म लेने वाले पहले महान् नीग्रो अभिनेता के पिता डैनियल ऐल्ड्रिज एक धर्मोपदेशक थे। वह न्यूयार्क में एक प्रेसबिटीरिअन चर्च के पादरी थे। सन् १८०७ में जब उनके पुत्र का जन्म हुआ तो उसका नाम इरा रखा गया। इस बात का अभी तक ठीक प्रकार से पता नहीं लगा है कि इरा ऐल्ड्रिज का जन्म मैनहैटन में हुआ या मेरीलैण्ड में। न्यूयार्क नगर के अफ्रीकन फ्री स्कूल के रजिस्टर में उनका बाल्यकाल में लिखा गया नाम पाया गया है और लगभग इसी समय से जन-साधारण को उनके जीवन के विषय में पूर्ण जानकारी मिलती है। वह अपने जीवन में शीघ्र ही एक अभिनेता बन गये।

अपने स्कूली जीवन में ही इरा ऐल्ड्रिज ब्लीकर स्ट्रीट पर स्थित अफ्रीकन ग्रोव में होने वाले नाटकों में भाग लेने लगे थे। उस समय उन्हें केवल नाटकों में दिखाये जाने वाले जन-समूह में ही सम्मिलित किया जाता था, वहाँ पर उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में नीग्रो अभिनेताओं की एक कम्पनी ने शेक्सपीअर एवं अन्य नाटककारों के नाटकों का प्रदर्शन किया। कम्पनी द्वारा प्रदर्शित "रिचर्ड दि थर्ड" और "औथैलो" नाम के नाटकों में निर्देशक जेम्स ह्यूलैट ने स्वयं अभिनय किया। उन्होंने अपने लिखे हुए सङ्गीत रूपक में भी नृत्य किया। नाट्यशाला के निकट ही नीग्रो भोजनालय था, जहाँ पर जार्ज वाशिंगटन बहुधा भोजन किया करते थे। अफ्रीकन फ्री स्कूल भी नाट्यशाला

के अत्यन्त निकट था, इस कारण बालक इरा को वहाँ जाने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती थी।

कुछ श्वेत दङ्गाइयों ने अफ्रीकन ग्रोव में होने वाले नाटकों को जब अनुचित कार्यों द्वारा बीच में ही भङ्ग करना प्रारम्भ किया तो पुलिस ने बल-पूर्वक नाट्यशाला को बन्द कर दिया। अफ्रीकन ग्रोव की नाट्यशाला के बन्द हो जाने के पश्चात् इरा ऐल्ड्रिज ने चैथम थियेटर में नौकरी कर ली। यहाँ पर उन्हें अभिनय करते हुए कलाकारों को देखने-सुनने की सुविधा हो गई। इसके साथ-साथ वह अवैतनिक रूप से भाग लेते रहे। उन्होंनें सैरीडन के नाटक "पिजारो" में एक मुख्य भूमिका में अभिनय भी किया। उनके अभिनय प्रेम को देखकर उनके पिता क्षुब्ध थे। वह एक धर्मोपदेशक थे, और उन दिनों नाट्यशालाओं को अश्लील समझा जाता एवं अभिनय को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता था। सम्भवतः इसी कारण उनके पिता ने इरा ऐल्ड्रिज को किशोरावस्था में अध्ययन के लिये विदेश भेजने का निश्चय किया।

ग्लास्गो विश्वविद्यालय में उन दिनों अनेक नीग्रो विद्यार्थी थे और इस विश्वविद्यालय में दासता के विरोधी अनेक नेताओं ने शिक्षा पाई थी। स्काट-लैण्ड में इरा ने भली-भाँति मन लगाकर अध्ययन किया परन्तु उन्होंने अध्ययन पूर्ण करने के पहिले ही विश्वविद्यालय छोड़ दिया। शीघ्र ही उनके हृदय में अभिनय के प्रति प्रेम जागृत होने लगा। २० वर्ष के होनें के पूर्व ही उन्होंनें लन्दन की रोयल्टी नाट्यशाला में ओथैलो जैसे पात्र का कठिन अभिनय किया। अभिनय में उन्हें अपूर्व सफलता मिली। इसके पश्चात् उन्होंने योरप के देशों में भ्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। योरप में उनकी इतनी ख्याति फैली कि उन देशों में भी, जहाँ ऐल्ड्रिज की भाषा नहीं समझी जाती थी, उनके अभिनय को देखने के लिए नाट्यशालाओं के बाहर दर्शकों की अपार भीड़ लगी रहती थी। समाचार-पत्रों में उनके बारे में लम्बे-लम्बे लेख प्रकाशित होने लगे। ईरा

इरा ऐल्ड्रिज

ऐल्ड्रिज का अभिनय-जीवन काफी लम्बा रहा। ४० वर्ष तक वह एक सफल अभिनेता का कार्य करते रहे।

महान् अंगरेज अभिनेता ऐडमण्ड कीन ने एक बार डब्लिन की एक नाट्यशाला में ऐल्ड्रिज को अभिनय करते हुए देखा। ऐल्ड्रिज के अभिनय से वह इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने ऐल्ड्रिज के सम्मुख "ओथैलो" नाटक को साथ-साथ प्रदर्शित करने का प्रस्ताव रखा। नाटक में कीन ने स्वयं को खलनायक एआगो का अभिनय करने के लिए प्रस्तुत किया। सन् १८३३ में उन्होंने शेक्सपीअर की इस महान् कृति को लन्दन के कौवेन्ट गार्डन में प्रदर्शित किया। कहा जाता है कि यह नाटक अब तक प्रदर्शित सभी नाटकों से उत्तम था। दोनों साथ-साथ इँगलैण्ड के प्रान्तों और योरप में भ्रमण करते रहे। शेक्सपीअर के एक प्रसिद्ध नाटक में एक अफीकी पात्र के अभिनय में ऐल्ड्रिज को किसी प्रकार का वेश आदि बदलने तक की आवश्यकता न थी। वह शरीर से स्वयं साँवले, लम्बे, आकर्षक और अत्यन्त सुन्दर थे। उनका उच्चारण स्पष्ट था और उनके स्वर में मधुर गूँज थी।

यद्यपि इरा ऐल्ड्रिज की ख्याति मुख्यतः उनके ओथैलो के अभिनय के कारण थी परन्तु उन्होंने अन्य महत्त्वपूर्ण पात्रों का भी सफलतापूर्वक अभिनय किया। उन्होंने टाइटस ऐन्ड्रोनिकस को, जो कि इँगलैण्ड में पिछली दो शताब्दियों से नहीं प्रदर्शित हुआ था, फिर से प्रदर्शित किया। फ्रांस के महान् साहित्यकार एलेक्जैन्डर ड्यूमा ऐल्ड्रिज के प्रशंसकों में से थे। संगीतज्ञ, रिचर्ड वाग्नर भी उनकी कला के अनन्य भक्त थे। स्वीडन के राजा ने उन्हें स्टाक-होल्म आने के लिए व्यक्तिगत निमन्त्रण दिया। प्रशा के राजा ने उन्हें शैवेलि-अर की उपाधि दी और रूस के जार ने उन्हें लिओपोल्ड के क्रास के सम्मान से विभूषित किया। मास्को और सेन्टपीटर्सबर्ग में उनका अपूर्व स्वागत किया गया।

इरा ऐल्ड्रिज

गास्को विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने ऐल्ड्रिज का सबसे अधिक सम्मान किया। नाटक समाप्त हो जाने के बाद वे बहुधा ऐल्ड्रिज की गाड़ी से घोड़े अलग करके स्वयं उन्हें होटल तक खींचकर ले जाते थे।

अन्तर्राष्ट्रीय कलाकार इरा ऐल्ड्रिज अपने समय के महान् अभिनेता थे। जहाँ भी वह गये, उनका अपूर्व स्वागत हुआ। प्रसिद्ध होने के पश्चात् वह अपने जन्म-स्थान को कभी वापिस नहीं लौटे। योरप में विवाह करके उन्होंने अपना समस्त जीवन वहीं व्यतीत किया। ६० वर्ष की अवस्था में पोलेण्ड की यात्रा के समय उनकी मृत्यु हो गई। मृत्यु से पहले तक उन्होंने अभिनय करना नहीं छोड़ा था। स्ट्रेट फार्ड-आन-एवन के शेक्सपीअर स्मारक थियेटर में स्थापित इरा ऐल्ड्रिज स्मारक पद आज भी उनकी याद दिलाता है।

फ्रेडरिक डगलस

जन्म लगभग १८१७—मृत्यु १८९५

जिन दिनों इरा ऐल्ड्रिज शेक्सपीअर के नाटकों का प्रदर्शन कर रहे थे उन्हीं दिनों यूरोप में एक और अमरीकन नीग्रो ने प्रसिद्धि प्राप्त की। उन्होंने तीन बार महासागर पार किया जिसमें एक बार उन्हें अपनी जीवन-रक्षा के लिए अमरीका छोड़ना पड़ा था। परन्तु वह विदेश में नहीं रहे। अपनी जाति के लोगों की स्वतन्त्रता के लिए उन्होंने समय-समय पर घर लौटकर युद्ध किया। इस महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का नाम फ्रेडरिक डगलस था। उनके पिता यद्यपि एक श्वेत नागरिक थे परन्तु फ्रेडरिक का जन्म एक दास के रूप में ही हुआ। उनकी दादी ने उनका पालन-पोषण किया। होश सँभालने के पश्चात् उन्होंने अपनी माँ को अपने जीवन में पाँच-छः बार से अधिक नहीं देखा। एक दिन सूर्यास्त के पश्चात् उनकी माँ बारह मील पैदल चलकर उन्हें देखने के लिए आई थीं, परन्तु अगले दिन सूर्योदय से पूर्व ही उसे बारह मील दूर खेतों पर काम करने के लिए वापिस लौट जाना पड़ा। अपनी माँ से उनकी यह अंतिम भेंट थी।

मेरीलैण्ड में फ्रेडरिक का जन्म हुआ था पर उस समय उनका नाम डगलस नहीं था। उनका बचपन का नाम बेली था। बाल्यावस्था में ही फ्रेडरिक को उनकी दादी से छीन लिया गया और उन्हें, लगभग बारह अन्य दास बालकों के साथ, खेतों पर काम करने के लिए एक दुष्ट क्रूर स्वभाव वाली स्त्री को सौंप दिया गया। यह स्त्री इन बालकों को कोड़े लगाती और बहुधा भूखे पेट ही गन्दी जमीन पर सोने के लिए विवश करती थी। फ्रेडरिक फटे चिथड़ों में

फ्रेडरिक डगलस

इधर-उधर घूमते रहते और कभी-कभी भूख से इतने व्याकुल हो जाते कि अपने स्वामी की फेंकी हुई जूठन पर भूख शान्त करने के लिए टूट पड़ते। फेंकी हुई जूठन को उठाने में कभी-कभी उन्हें भूखे कुत्तों तक से लड़ना पड़ता था! भाग्यवश बाल्यावस्था में ही उन्हें बाल्टीमोर, अपने स्वामी के सम्बन्धियों के परिवार में छोटे लड़के की सेवा करने के लिए, भेज दिया गया। फ्रेडरिक को एक अच्छा लड़का समझकर उनकी नई स्वामिनी ने उन्हें अंगरेजी के अक्षर का ज्ञान कराया। परन्तु उसके पति ने शीघ्र ही रोक दिया और कहा, "यदि तुम इसे पढ़ना सिखाओगी तो यह लिखना भी सीखना चाहेगा, और लिखना सीखने के बाद यह यहाँ से भाग जायगा परन्तु फ्रेडरिक ने सड़क पर खेलने वाले साथियों की सहायता से अक्षर ज्ञान प्राप्त कर ही लिया। तेरह वर्ष की अवस्था में उन्होंने, जूतों पर पालिश करके इकट्ठे किए हुए पैसों द्वारा, 'कोलम्बियन ओरेटर' नाम की पुस्तक खरीद ली। इस पुस्तक में विलियम पिट तथा अन्य महान् व्यक्तियों के भाषण थे। फ्रेडरिक के पास केवल यही एक पुस्तक थी इस कारण वह इसी को बार-बार पढ़ते रहे। पुस्तक में दिये गये बहुत से भाषण स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में थे। यद्यपि ये भाषण श्वेत व्यक्तियों से सम्बन्धित थे परन्तु फ्रेडरिक ने उन्हें अच्छी तरह याद कर लिया। पुस्तक का उन पर बहुत प्रभाव पड़ा। उन्होंने कहा "दास होने से तो एक पशु या पक्षी होना कहीं अधिक अच्छा है।"

फलस्वरूप उन्होंने अपना समस्त जीवन स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दिया। कठिन परीक्षाओं और कठोर यन्त्रणाओं के बारे में उन्होंने एक पुराना गीत सुना था। बालक फ्रेडरिक को इन कठोर यंत्रणाओं का भली-भाँति अनुभव था। लौसन नाम के एक नीग्रो के सम्पर्क में आकर फ्रेडरिक ने धर्म में अपने लिए सहारा ढूँढ़ने का प्रयत्न किया। लौसन स्वयं अच्छी तरह नहीं लिख पढ़ सकते थे। इस कारण फ्रेडरिक ने उन्हें बाइबिल पढ़ना

सिखाया और लौसन ने इसके बदले में उन्हें बाइबिल के उपदेशों का मर्म समझाया। लौसन ने उनके स्वतंत्रता-प्राप्ति के ध्येय को दृढ़ता प्रदान की, और उनसे कहा, "यदि तुम स्वतंत्रता चाहते हो तो ईश्वर में पूर्ण विश्वास रख कर प्रार्थना करो। वह तुम्हें अवश्य स्वतंत्रता देगा।" फ्रेडरिक को इस बात का भी पता लगने लगा था कि अमरीका में कुछ ऐसे श्वेत व्यक्ति भी हैं जो दासता की शृंखलाओं के विरुद्ध हैं। ऐसे लोगों को "उन्मूलनवादी" (एबोलीश्निस्ट) कहा जाता था। बाल्टामोर के समाचार-पत्र इन व्यक्तियों को अराजकतावादी और दुष्ट बताकर सदैव इनकी आलोचना करते रहते थे। परन्तु फ्रेडरिक डगलस के विचार में उन्मूलनवादी लोग दासों को सहानुभूति की दृष्टि से देखते थे।

जितना ही अधिक फ्रेडरिक बाइबिल और समाचार-पत्रों का अध्ययन करते उतना ही अधिक वह इस बात का अनुभव करते कि अध्ययन द्वारा ही सफलता प्राप्त की जा सकती है। कुछ समय पूर्व उनके स्वामी ने जो चेतावनी दी थी वह ठीक निकली। फ्रेडरिक के मन में लिखने की इच्छा जागृत होने लगी। रात्रि के समय फ्रेडरिक जहाँ सोते थे वहाँ पर उन्होंने एक पीपे से मेज का काम लेकर छिपे-छिपे, बाइबिल और भजनों की एक पुस्तक की सहायता से, स्वयं पढ़ना-लिखना सीखना प्रारम्भ कर दिया। जब घर पर कोई नहीं रहता तो वह अपने स्वामी की कलम और दावात लेकर लिखने का अभ्यास करते। थोड़े दिनों में उन्होंने लिखना सीख लिया। परिवार के एक अन्य भाग की सेवा करने के लिए उन्हें एक छोटे से नगर में भेजा गया। उस नगर में एक स्वतंत्र नीग्रो नागरिक ने एक स्कूल खोल रखा था, जहाँ प्रत्येक रविवार को नीग्रो बालकों को लिखना-पढ़ना सिखाया जाता था। फ्रेडरिक से उस स्कूल में एक शिक्षक का कार्य करने के लिए कहा गया। परन्तु उनके शिक्षा देने के दूसरे दिन ही श्वेत लोगों की एक भीड़ ने लाठियों और

पत्थरों के साथ स्कूल पर आक्रमण कर दिया और सबको वहाँ से निकालकर भगा दिया। युवा फ्रेडरिक को चेतावनी दी गई कि यदि उन्होंने फिर पढ़ाने का काम किया तो उन्हें बहुत भारी दंड दिया जायगा। नगर के उस छोटे से समाज में सोलह वर्ष का यह दास जो कि लिखना-पढ़ना जानता था, ऐसा "खतरनाक नीग्रो" समझा जाने लगा, जो अन्य नीग्रो लोगों के मस्तिष्क में खतरनाक विचार भर रहा था। उनके स्वामी ने सशंक होकर उन्हें ऐसे व्यक्ति के पास भेज दिया जो अनेक प्रकार की शारीरिक यन्त्रणाएँ देकर बिगड़े हुए दासों को आज्ञाकारी और दीन बनाने के लिए प्रसिद्ध था।

उस व्यक्ति का नाम कोवे था। उसका खेत चेसापीक की खाड़ी के एक रेतीले और निर्जन स्थान पर था। उद्दंड दासों को एक वर्ष तक अपने पास रखकर उन्हें उनके स्वामियों के प्रति आज्ञाकारी बनाने के कार्य में कोवे अत्यन्त निपुण समझा जाता था। फ्रेडरिक के वहाँ पहुँचने के तीन दिन बाद कोवे ने उन्हें ऐसे बैलों को लेकर जंगल से लकड़ी लाने के लिए भेजा जो उस समय तक अच्छी तरह पालतू नहीं बनाये गये थे। फ्रेडरिक ने इससे पहले कभी बैलों को नहीं हाँका था परन्तु भय के कारण वह काम करने से इन्कार नहीं कर सकता था। बैल बीच में ही भाग खड़े हुए, उन्होंने गाड़ी को उलट दिया। और एक दरवाजे को तोड़ डाला। इसके लिए सोलह वर्ष के उस बालक के कपड़े फाड़ दिये गये और उसकी नंगी खाल पर बैलों वाले कोड़ों से प्रहार किया गया। इस घटना के अनेक वर्ष बाद फ्रेडरिक ने अपनी आत्मकथा में लिखा कि "कोवे द्वारा की गई चोटों से निरन्तर रक्त बहता रहता था, और मेरी पीठ पर मेरी उँगली के बराबर बड़े-बड़े चोट के निशान बन गये थे। कोड़ों की मार के कारण हुए घाव हफ्तों तक ठीक नहीं होते थे, क्योंकि मोटा कपड़ा, जो मुझे पहिनने के लिए दिया जाता था, उन घावों को भरने नहीं देता था.........
प्रारम्भ के छः महीनों तक मुझ पर निरन्तर डंडों की मार पड़ती रही। दुखती

हुई हड्डियाँ और घायल पीठ ही मेरे कभी न बिछुड़ने वाले मित्र थे।" कोवे ने अपने प्रहारों से फ्रेडरिक की पीठ पर जो चिह्न बनाये थे वे कभी न मिटे।

सूर्योदय के पूर्व से लेकर सूर्यास्त के बाद तक कोवे अपने दासों से कठोर परिश्रम कराता था। एक दिन सूर्य की तेज धूप में फ्रेडरिक उस स्थान पर बेहोश हो गये जहाँ पर गेहूँ को भूसे से अलग किया जा रहा था। उन्हें मतली सी आने लगी और उनके सिर में भयंकर पीड़ा होने लगी। निर्बलता के कारण वह मरणासन्न जैसे हो गये। कोवे ने उनसे उठकर काम करने के लिए कहा, परन्तु उनमें काम करने की शक्ति नहीं थी। कोवे के मार-पीट करने पर उन्हें खड़ा होना पड़ा परन्तु वह फिर बेहोश हो गये। इस पर कोवे ने पेड़ का एक तख्ता उठाकर उनके सिर पर दे मारा और उन्हें वहीं रक्त में सना हुआ छोड़ दिया। उस रात फ्रेडरिक किसी प्रकार अपने को जंगल के बीच घसीटते हुए सात मील दूर अपने स्वामी के पास पहुँचे और उससे प्रार्थना की कि वह उन्हें कोवे के दासत्व से छुड़ा कर अपने पास रख ले परन्तु उनके स्वामी ने उसकी एक न सुनी! उसने फ्रेडरिक पर काम से जी चुराने का आरोप लगाकर उन्हें वर्ष पूरा होने तक कोवे के पास रहने के लिए वापिस भेज दिया। इस पर फ्रेडरिक ने निश्चय किया कि भविष्य में वह अपनी रक्षा करेंगे और किसी को अपने ऊपर हाथ नहीं उठाने देंगे। वह कोवे के खेतों पर वापिस आ गये। उस दिन रविवार था इस कारण कोवे ने उन्हें सोमवार को दंड देने का निश्चय किया। अगले दिन जब कोवे उनके निकट पहुँचा तो उसे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि फ्रेडरिक अपनी रक्षा के लिए लड़ने को तैयार हैं। कोवे जब उन्हें मारने के लिए बढ़ा तो चुपचाप कोड़े सहने के स्थान पर फ्रेडरिक ने उसे उठाकर भूमि पर पटक दिया। कई बार इसी प्रकार की घटना घटी। अंत में कोवे ने उन्हें पीटने का विचार छोड़ दिया। उसके बाद फ्रेडरिक जितने दिन वहाँ रहे, उनको कभी

नहीं पीटा गया। परन्तु उसने उनसे इतना काम लिया कि उनकी अवस्था मृतक जैसी हो गई।

इन कष्टों का वर्णन करते हुए फ्रेडरिक ने अपनी आत्मकथा "लाइफ एण्ड टाइम्स" में लिखा, "उस संघर्ष के पश्चात् मैंने अपने को बिलकुल बदला हुआ पाया। पहले मैं कुछ भी नहीं था, अब मैं एक मनुष्य था।" सन् १८३४ के बड़े दिन के पर्व को कोवे के साथ उनका एक वर्ष पूरा हो गया। परन्तु उनकी आत्मा दीन बनने के स्थान पर और अधिक शक्तिशाली हो गई थी। दास-प्रथा के अत्याचारों के प्रति उनकी घृणा और भी अधिक तीव्र हो गई। जब उन्हें नये स्वामी के पास भेजा गया तो पहले की अपेक्षा स्थिति अच्छी होते हुए भी उन्होंने स्वतन्त्र होने की योजना बनानी प्रारम्भ कर दी। फ्रेडरिक ने पाँच अन्य दासों को अपने साथ भागने के लिये राजी किया। प्रस्थान के पहले किसी ने उनके साथ विश्वासघात किया। फ्रेडरिक को पकड़कर जेल में ठूँस दिया गया। जब वह जेल से मुक्त हुए तो खेतों के स्वामी ने उन्हें वहाँ पर रखने से इन्कार कर दिया। (उन्हें "खतरनाक नीग्रो" समझा जाने लगा।) इस कारण उन्हें बाल्टीमोर वापिस भेज दिया जहाँ उन्हें बन्दरगाह पर जहाजों की मरम्मत करने का काम करने के लिए नियुक्त किया गया। परन्तु श्वेत श्रमिकों ने नीग्रो श्रमिकों के साथ काम करने में अपनी अनिच्छा प्रकट की। एक दिन अनेक श्वेत श्रमिकों ने मिलकर फ्रेडरिक को (जो कि अपनी इच्छा से वहाँ काम करने नहीं गये थे) घेर लिया और उन्हें इतना पीटा कि वह मरणासन्न हो गये। वास्तव में उन्हें इतनी बुरी तरह से पीटा गया था कि उनके स्वामी ने, यह सोचकर कि कहीं उसे इतने काम के दास से हाथ न धोना पड़े, उन्हें दोबारा बन्दरगाह पर नहीं भेजा। इसके बदले उसने फ्रेडरिक को इस शर्त पर मजदूरी करने के लिए छोड़ दिया कि वह काम करके जो कुछ भी मजदूरी पाये उसे प्रत्येक

शनिवार की रात को अपने स्वामी को सौंप दे। कभी-कभी वह फ्रेडरिक का मजदूरी का एक चौथाई भाग दे देता था। इससे फ्रेडरिक को न्यूयार्क तक का किराया चुकाने योग्य धन एकत्र करने का अवसर मिल गया। भागने में यद्यपि जीवन के जाने तक का डर था परन्तु फ्रेडरिक ने साहस करके एक बार फिर दासत्व के बन्धनों से मुक्त होने का निश्चय किया। जहाज के कर्मचारी का वेश बनाकर आवश्यक कागजों को अपने साथ लेकर फ्रेडरिक बाल्टीमोर से जाने वाली रेलगाड़ी पर सवार हो गये। एक दिन बाद वह न्यूयार्क पहुँच गये। स्वतन्त्र भूमि पर जब उन्होंने प्रथम बार पैर रखा तब उनकी आयु २१ वर्ष थी। अन्ततः उनका स्वप्न पूरा हुआ। वह अब स्वयं अपने स्वामी थे।

उनके सम्मुख एक नवीन संसार के द्वार खुल गये थे। अपने एक मित्र को उन्होंने अपने सबसे पहले पत्र में लिखा कि दासत्व से मुक्ति पाने के पश्चात्, "मैने अनुभव किया मानों मैं भूखे सिंहों की माँद से निकल आया हूँ।" परन्तु बहुत शीघ्र ही उनका सब धन समाप्त हो गया। उस बड़े नगर में किसी ने भी उनकी ओर ध्यान नहीं दिया। वे नहीं जानते थे कि किस पर विश्वास किया जाय इस कारण वह किसी भी व्यक्ति के पास यह सोचकर जाने से डरते थे कि कहीं उन्हें दासों की भूमि में वापस न भेज दिया जाय। अपनी इस अवस्था का वर्णन करते हुए बाद में उन्होंने लिखा, "मै बेघर था। मेरी न तो किसी से जान पहचान थी और न मेरे पास पैसा था। मेरी कोई साख नहीं थी। मेरे पास कोई काम भी नहीं था। मैं नहीं जानता था कि मुझे क्या करना चाहिये या सहायता के लिए किसके पास जाना चाहिए। ऐसी दारुण अवस्था में एक मनुष्य पाई हुई स्वतन्त्रता के बारे में ही केवल नहीं सोच सकता, उसे और बातों पर भी विचार करना होता है। इस प्रकार से न्यूयार्क की सड़कों पर इधर-उधर घूमता हुआ और रात व्यतीत करने के लिए

घाट पर खड़े हुए पीपों के मध्य शरण लेता हुआ, अन्त में मैं मुक्त था······ दासता से मुक्त······परन्तु उसके साथ भोजन और घर-बार से भी मुक्त।''

जहाजों के मालगोदाम के पास एक जहाज कर्मचारी रहता था। उसने फ्रेडरिक को सोने के लिए स्थान दिया और उन्हें एक ऐसी समिति के पास पहुँचा दिया जिसका काम भागे हुए दासों की सहायता करना था। न्यूयार्क में अपने को छिपाते हुए ही फ्रेडरिक ने उस लड़की से विवाह कर लिया जिसके साथ बाल्टीमोर में उनका प्रेम हो गया था और जो उनके पीछे-पीछे न्यूयार्क भाग कर आ गई थी। दोनों ने मिलकर मेसाचुसेट्स के लिए प्रस्थान किया। उन दिनों नीग्रो यात्रियों को जहाज में केबिन नहीं मिलती थी इस कारण उन्होंने जहाज की छत पर ही शरण ली। न्यूबैडफोर्ड में उन्हें समुद्र तट पर काम मिल गया। वहाँ उन्होंने अपना पुराना नाम, बेली, त्यागकर ''दि लेडी ऑव दि लेक'' नाम की पुस्तक के एक पात्र के नाम पर अपना नाम डगलस रखा। इस समय के बाद से वह फ्रेडरिक डगलस के नाम से पुकारे जाने लगे। शीघ्र ही यह नाम संसार के समाचार-पत्रों में बड़े-बड़े अक्षरों में प्रकाशित होने वाला था। क्योंकि युवक फ्रेडरिक ने स्वयं को ही स्वतंत्र करके संतोष नहीं किया, प्रत्युत वह एक उन्मूलनवादी बन गये।

सन् १८४१ में नान्टुकेट में दासता-विरोधी समाज की एक सभा में डगलस ने अपना प्रथम भाषण दिया। इससे पूर्व उन्होंने कभी भाषण नहीं दिया था। इस कारण बोलने में थोड़ी-सी कठिनाई का अनुभव करते हुए भी उन्होंने श्रोताओं के सम्मुख अपनी बाल्यावस्था, अपनी दासता और अपनी मुक्ति की कहानी का वर्णन किया। उनके भाषण से श्रोतागण अत्यन्त प्रभावित हुए। डगलस के बाद भाषण देनेवाले विलियम लायर्ड गैरीसन ने चिल्लाकर कहा, ''यह एक मनुष्य है या एक निर्जीव वस्तु?'' उन्होंने कहा कि यद्यपि दासों के स्वामियों ने फ्रेडरिक के साथ एक निर्जीव वस्तु जैसा व्यवहार किया परन्तु

फ्रेडरिक एक वास्तविक मनुष्य था, ऐसा मनुष्य जो सबसे अधिक मनुष्यता का व्यवहार पाने का अधिकारी है।

उस समय डगलस की अवस्था २४ वर्ष की थी। वह छः फुट लम्बे थे। उनके बाल सिंह जैसे थे और वे अत्यन्त सुन्दर थे। जितने अधिक उन्होंने भाषण दिये उतने ही अधिक वह प्रभावशाली होते गये। जल्दी ही उन्हें जहाज के मालगोदाम का काम छोड़कर स्वतंत्रता-संग्राम के लिए भाषण इत्यादि देने के लिए जुट जाना पड़ा। सन् १८४५ में वह प्रथम बार इँगलैण्ड गये। वहाँ उन्होंने दासों के साथ सहानुभूति रखनेवाले व्यक्तियों को अमरीका के लाखों दासों की दारुण दशा का ज्ञान कराया। वहाँ से लौटकर उन्होंने रोशेस्टर में 'दि नार्थ स्टार' नाम के एक समाचार-पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ कर दिया। उस समय के बाद से पचास वर्ष तक डगलस एक सार्वजनिक नेता रहे। वैन्डैल फिलिप्स, हैरिअट बीचर स्टोवे, चार्ल्स समर तथा ल्यूक्रेशिया मौर जैसे गण्यमान्य पुरुषों और महिलाओं के साथ उन्होंने अनेक भाषण दिये। उन्होंने अपनी जीवन-गाथा प्रकाशित कराई। सन् १८५० के फ्यूगिटिव स्लेव लॉ (भागनेवाले दासों से सम्बन्धित कानून) का उल्लंघन करके उन्होंने अनेक भागे हुए दासों को अपने घर में आश्रय दिया। अनेक बार जन-समूह ने उनकी सभाओं पर आक्रमण किया। कभी-कभी उन पर पत्थर भी बरसाये जाते थे। जॉन ब्राउन के प्रसिद्ध आक्रमण के पश्चात् जब दासों के स्वामियों और समाचार-पत्रों ने उन्हें बिना कारण ही इस घटना के साथ जोड़ना प्रारम्भ कर दिया तो उन्हें अपनी जीवन-रक्षा के लिए कनाडा को प्रस्थान करना पड़ा। यहाँ से उन्होंने इँगलैण्ड की दूसरी बार यात्रा की। जब अमरीका के विभिन्न राज्यों में युद्ध छिड़ गया तो वह राष्ट्रपति लिंकन को सम्मति देने और सेना का आयोजन करने अपने देश वापिस आ गये। युद्ध में स्वयं उनके पुत्रों ने सक्रिय भाग लिया। स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए तथा अमरीकी संघ को दृढ़ बनाने के लिए लड़े गये इस युद्ध में

दो लाख से भी अधिक नीग्रो सैनिकों ने भाग लिया। इनमें से बहुतों को डगलस के ओजस्वी भाषणों से प्रेरणा मिली थी।

युद्ध की समाप्ति पर डगलस अमरीका के रिपब्लिकन दल के एक नेता हो गये। उन्हें संयुक्त-राज्य मार्शल बनाया गया। बाद में कोलम्बिया के जिले में हुए वीरता के कार्यों का विवरण संकलित करने के लिए उनकी नियुक्ति की गई और सन् १८८९ में उन्हें, हैटी रिपब्लिक में संयुक्त-राज्य अमरीका का दूत बनाकर भेजा गया। डगलस केवल नीग्रो जाति के नेता ही नहीं थे, प्रत्युत अन्य क्षेत्रों में भी उन्होंने बहुत कार्य किया। स्त्रियों को मताधिकार देने के प्रश्न पर जब प्रथम अधिवेशन का अयोजन किया गया तो उसमें केवल डगलस ही एक पुरुष थे जिन्होंने स्त्रियों को पुरुषों के समान मताधिकार देने का समर्थन किया। "दि नार्थ स्टार" नाम के अपने समाचार-पत्र के प्रथम संस्करण में उन्होंने घोषणा की, "अधिकारों का लिंगभेद से कोई सम्बन्ध नहीं है"। डगलस ने राष्ट्रीय नैतिक संघों एवं अन्य समाज सुधारक आन्दोलनों में भी सक्रिय भाग लिया। दासता से मुक्ति के पश्चात् डगलस ने निग्रो लोगों के लिए किसी प्रकार के विशेष अधिकारों की माँग नहीं की। उनके लिए वह केवल वही स्वतंत्रता चाहते थे जो प्रत्येक नागरिक के लिए होनी चाहिए। 'अश्वेत व्यक्ति क्या चाहते हैं,' इसका स्पष्टीकरण करते हुए उन्होंने एक प्रसिद्ध भाषण में कहा, "अमरीका निवासी बहुधा यह जानने के लिए उत्सुक रहे हैं कि वे हमारे लिए क्या करें? प्रारम्भ से ही मेरा केवल एक ही उत्तर रहा है। हमारे लिए कुछ मत करो यदि नीग्रो स्वयं अपने पैरों पर नहीं खड़ा हो सकता तो उसे गिर जाने दो। मैं केवल यह चाहता था कि उसे अपने पैरों पर खड़े होने का एक अवसर दो। यदि उसे स्कूल जाते हुए देखते हो तो उसे जाने दो। उसे रोको मत। यदि तुम उसे मतदान करने जाते देखते हो, तो बिना किसी प्रकार की बाधा डाले उसे अपना मत देने दो। यदि तुम उसे काम

करने के लिए जाते हुए देखते हो, तो उसे जाने दो। बस उसे अपने आप पर छोड़ दो।''

डगलस बहुधा कहा करते थे कि यदि उन्होंने किसी स्कूल में शिक्षा पाई तो वह स्कूल दासता का स्कूल था। उनकी पीठ पर बने हुए निशान ही उनकी सनद थे। परन्तु उनकी बुद्धि और वाक्पटुता अनेक शिक्षित व्यक्तियों से कहीं बढ़कर थी। उनके भाषणों ने हजारों व्यक्तियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। वे एक लेखक भी थे। उनकी आत्मकथा 'लाइफ एण्ड टाइम्स एक महान् अमरीकी ग्रन्थ है। उनकी प्रभावोत्पादक शैली में जिस तीखे व्यंग्य का मिश्रण रहता था उसका परिचय उनके उस पत्र की अन्तिम पंक्तियों से मिलता है जो दासता से मुक्त होने के दस वर्ष बाद उन्होंने अपने पुराने स्वामी को लिखा था। इस पत्र में उन्होंने उन सभी बुराइयों का उल्लेख किया जो उस व्यक्ति ने उनके साथ की थी, परन्तु पत्र के अंत में उन्होंने लिखा—

''मेरे घर से अधिक सुरक्षित स्थान तुम्हें संसार में अन्य कहीं नहीं मिलेगा। मेरे पास ऐसी कोई वस्तु नहीं होगी जिसे आवश्यकता पड़ने पर मैं तुम्हें न दे सकूँ। निश्चय ही मैं तुम्हारे सम्मुख इस बात का उदाहरण रखने में गर्व का अनुभव करूँगा कि एक मानव को दूसरे मानव के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए।

''तुम्हारा दास नहीं वरन् तुम्हारा साथी मानव, फ्रेडरिक डगलस''

हैरिअट टबमैन

जन्म लगभग १८२३—मृत्यु १९१३

दासता के बन्धनों से मुक्त होने के लिए भाग जाने वाली दासी, हैरिअट टबमैन ने अमरीका के उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के बीच हुए युद्धों में स्वयं भाग लिया था। युद्धों का वर्णन उसने इन शब्दों में किया, ''बन्दूकों का छूटना बिजली के चमकने के समान था, तोपों की आवाज बादलों की गर्जना के समान थी, और रक्त की बूँदें इस प्रकार गिर रहीं थीं मानों वर्षा हो रही हो, और भूमि पर बिछी हुई मृत व्यक्तियों की लाशें पकी हुई फसल के समान मालूम पड़ती थीं। फ्रेडरिक डगलस की भाँति हैरिअट टबमैन ने अपने जीवन को युद्ध से पहले स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए और युद्ध के बाद अपनी जाति के मनुष्यों की भलाई के लिए अर्पित कर दिया।

डगलस की ही भाँति हैरिअट का जन्म मेरीलैण्ड में एक दासी के रूप में हुआ था। वह ग्यारह बहिन भाइयों में से एक थी। उसके जन्म का हिसाब किसी ने नहीं रखा, इस कारण उसके जन्म-वर्ष के विषय में कोई भी ठीक-ठीक नहीं जानता। परन्तु वह इतने अधिक वर्षों तक जीवित रही और उसके विषय में इतना अधिक लिखा गया कि उसके जीवन से सम्बन्धित अधिकांश घटनाओं का सही-सही विवरण मिलता है। वह एक गृहस्थ बालिका थी। स्वभाव से रूच्छ, स्वेच्छाचारिणी और स्वछन्द होने के साथ-साथ वह सदैव दासता के विरुद्ध विद्रोह करती रही। फिलिस व्हिटले या डगलस की तरह हैरिअट का सिवा कोड़े के अन्य किसी भी प्रकार की शिक्षा नहीं मिली थी। बाल्यकाल में ही उसे एक बड़े घर में काम करने के लिए भेज दिया गया। काम के पहले ही दिन उसकी स्वामिनी ने उसे चार बार कोड़ों से पीटा। एक

हैरिअट टबमैन

दिन वह भाग खड़ी हुई और पाँच दिन तक सूअरों के लिए फेंके गये टुकड़ों को खाकर सूअरों के बाड़े में छिपी रही। एक बार उसने कहा, "मैं सुनती थी कि इस संसार में कुछ अच्छे स्वभाव के स्वामी-स्वामिनियाँ भी हैं, परन्तु मैंने कभी ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं देखा।"

हैरिअट को घर में नौकरानी की भाँति काम करना बिल्कुल पसन्द नहीं था, इसलिए कदाचित् उसकी विद्रोही प्रकृति के कारण उसे शीघ्र ही खेतों पर काम करने के लिए भेज दिया गया। तेरह-चौदह वर्ष की अवस्था में एक बार उसके जीवन में एक ऐसी घटना घटी जिसका उसके समस्त जीवन पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। एक दिन सायंकाल के समय एक युवा दास बिना आज्ञा के गाँव के एक भण्डार में चला गया। वहाँ का प्रबन्धक उसे पीटने के लिए उसके पीछे पीछे गया। उसने हैरिअट से उस दास को बाँधने में सहायता देने के लिए कहा। हैरिअट ने सहायता देने से इन्कार कर दिया और वह दास भाग गया। इस पर प्रबन्धक ने तौलने के काम में आने वाले लोहे के एक भारी टुकड़े को उठाकर भागते हुए दास पर फेंका। परन्तु टुकड़ा दास को न लगकर हैरिअट के सिर में लगा। इससे हैरिअट का सिर बिल्कुल कुचल गया और उसके सिर पर सदैव के लिए एक बड़ा चिह्न बन गया। हैरिअट बेहोश हो गई और कई दिनों तक जीवन-मरण के बीच झूलती रही। अन्त में कुछ दिन बाद हैरिअट काम करने योग्य हो गई परन्तु उसे बेहोशी के दौरे पड़ने दूर नहीं हुए। उसकी ऐसी अवस्था जीवन भर रही। किसी भी समय, किसी भी स्थान पर, उसे बेहोशी आ जाती और देखने वालों को ऐसा मालूम होता मानों वह एक गहरी नींद में सो गई हो। कभी खेतों में, कभी खेतों के तार के सहारे खड़े-खड़े और चर्च में वह किसी भी समय इस प्रकार से "सो जाती"। दौरा ठीक होने पर वह अपने आप होश में आ जाती, कोई उसे अन्य किसी उपाय द्वारा नहीं जगा सकता था। परन्तु जागने पर उस पर इसका कोई प्रभाव नहीं

पड़ता था। उसके स्वामी ने समझा कि चोट ने उसे अर्ध-विक्षिप्त बना दिया है। हैरिअट ने भी ऐसा ही बहाना किया। इस बीच वह दासता से मुक्त होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना भी करती थी।

चौबीस वर्ष की अवस्था में हैरिअट ने टबमैन नाम के एक प्रसन्न-चित्त और स्वच्छन्द स्वभाव वाले व्यक्ति से विवाह कर लिया। हैरिअट के भाग जाने के विचार में वह उसका साथी नहीं था। कुछ वर्षों बाद, जब उसके पुराने स्वामी की मृत्यु हो गई, तो हैरिअट ने यह सुना कि वह और उसके दो भाई शीघ्र ही बेचे जाने वाले हैं, इस पर उन सबने साथ ही वहाँ से भागने का निश्चय किया। इस बात को किसी के सम्मुख प्रकट करने में बड़ा खतरा था इस कारण हैरिअट ने स्पष्ट शब्दों में अपनी माँ तक को अपनी योजना नहीं बताई। जिस दिन उसे जाना था उस दिन सायंकाल के समय उसके साथियों ने उसे खेतों पर गाते हुए सुना। गीत का भाव था—

"जब वह पुराना रथ आयेगा
मैं तुम्हें छोड़कर चली जाऊँगी
मुझे स्वर्गिक भूमि पर जाना है......"

जिस ढंग से हैरिअट इस गीत को गा रही थी उसे देखकर उसके मित्रों, और सम्बन्धियों ने यह अनुमान लगा लिया कि स्वर्गिक भूमि से उसका आशय स्वर्ग से नहीं वरन् उत्तरा अमरीका से है। उस रात हैरिअट ने बकवाटर नदी के पास उन खेतों को सदैव के लिए छोड़ दिया। दिन निकलने से पूर्व ही उसके भाई डर के कारण अपनी झोपड़ियों में वापिस लौट आये। परन्तु हैरिअट अकेली ही रात में जंगलों में सफर करती हुई और दिन में छिपती हुई आगे बढ़ती गई। उसे लिखना पढ़ना नहीं आता था इस कारण उसके पास कोई नक्शा भी नहीं था, परन्तु हैरिअट ईश्वर पर विश्वास करके, अपनी अन्त: प्रेरणा के सहारे, और ध्रुव तारे द्वारा मार्ग का अनुमान लगाते

हुए निरन्तर बढ़ती गई। किसी चमत्कार के प्रभाव से अन्त में वह फिलाडेल्फिया पहुँच गई। वहाँ उसे काम मिल गया। इसके पश्चात् उसे फिर कभी दासी नहीं बनना पड़ा।

परन्तु जब उसका समस्त परिवार दास था, वह सुखी नहीं हो सकती थी। उसने उनके विषय में सोचना नहीं छोड़ा। कुछ महीने पश्चात् वह अपने पति को राजी करके अपने साथ लाने की आशा लेकर मेरीलैण्ड वापिस गई। उसके पति ने उसके साथ जाने से इन्कार कर दिया। इस पर वह अन्य दासों को अपने साथ उत्तर की ओर ले गई। अपनी मुक्ति के पश्चात् दो साल के समय में वह तीन बार छिपकर दक्षिणी प्रदेशों को लौटी और अपने दो भाइयों, एक बहिन, अपने बच्चों तथा एक दर्जन से भी अधिक अन्य दासों को दासता के बन्धनों से मुक्त कराने के लिए, अपने साथ ले गई। सन् १८५० में भागे हुए दासों पर नियन्त्रण रखने के लिए जब एक कानून पास हुआ तो संयुक्त-राज्य अमरीका में किसी भी स्थान पर ठहरना खतरनाक समझकर हैरिअट अपने साथियों को लेकर कनाडा चली गई। जहाँ उसने सम्पूर्ण शीत ऋतु उनकी सेवा करने और ईश्वर से उनके लिए प्रार्थना करने में व्यतीत की। तब वह नौ और दासों को मुक्त कराने के लिए मेरीलैण्ड को पुनः लौटी।

मुक्त होने के पश्चात् हैरिअट ने प्रारम्भ के कुछ वर्ष दूसरों को यह सिखाने में व्यतीत किए कि दासता से किस प्रकार मुक्त हुआ जा सकता है। स्वतन्त्रा-प्रेमी दलों की निर्भय नेत्री के रूप में उसकी ख्याति शीघ्र ही फैल गई। जल्दी ही दासों के स्वामियों की ओर से उसे पकड़ने के लिए, बड़े इनामों की घोषणा की गई। परन्तु वह कभी पकड़ी नहीं गई और न उसके किसी साथी को दासों का कोई स्वामी कभी पकड़ सका। इसका एक कारण यह था कि एक बार किसी दास को भागने के लिए राजी करके वह उसे कभी वापस नहीं लौटने देती थी। पहली बार स्वयं भागते समय उसके भाइयों ने उसके साथ

जो व्यवहार किया था सम्भवतः इसी कारण उसने ऐसी नीति बना ली थी। स्वतन्त्रता के मार्ग की ओर अग्रसर होने वाले डरे हुए दासों को रोकने का उसका उपाय अत्यन्त सरल था। हैरिअट अपने साथ एक पिस्तौल रखती थी। जब कोई दास एक बार भागने के लिए तैयार होकरे बीच में लौटने की इच्छा प्रकट करता तो हैरिअट तुरन्त अपने कपड़ों में छिपी हुई अपनी पिस्तौल निकाल कर उससे कहती, "तुम्हें चलना पड़ेगा, यदि तुम नहीं चलोगे तो मेरे हाथ से मारे जाओगे।" इस प्रकार हैरिअट की पिस्तौल की नली की ओर देखकर भयभीत दासों में आगे बढ़ चलने की शक्ति और साहस आ जाता। दलदल और कँटीली झाड़ी, वर्षा और शीत, सब कठिनाइयों को पार करते वे निरन्तर उत्तर की ओर बढ़ते जाते। इस प्रकार से जो भी हैरिअट के साथ चलने के लिए तैयार हुआ, उसने स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली।

अमरीका के राज्यों के बीच युद्ध प्रारम्भ होने के बहुत पूर्व ही अनेक दास मुक्त होकर भागने लगे थे, उत्तरी प्रदेश के अनेक श्वेत व्यक्ति उनकी सहायता कर रहे थे। स्वतन्त्र भूमि की ओर जाने वाले मार्गों को गुप्त कहा जाने लगा। भागे हुए दासों को छिपाने, आराम पहुँचाने और भोजन देने के लिए घरों, खलिहानों और यहाँ तक कि कभी-कभी चर्चों तक में अनेक गुप्त पड़ावों की व्यवस्था की गई। क्वेकर समाज के लोग इस कार्य में अत्यन्त क्रियाशील थे और विशेष सहायता पहुँचा रहे थे। एक दासता-विरोधी संघ भी इस कार्य में बहुत सहायता पहुँचा रहा था। दासों के स्वामी हजारों डालरों के मूल्य के दास प्रति वर्ष खोने लगे। हैरिअट टबमैन का नाम गुप्त मार्गों की आयोजिका के रूप में प्रसिद्ध हो गया। यह काम करनेवाली केवल वही अकेली नहीं थी। परन्तु जितने भी व्यक्ति यह काम कर रहे थे उनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध और साहसी वही थी। एक बार वह पच्चीस दासों के एक बड़े दल को मुक्त करके अपने साथ ले जाने में समर्थ हुई।

भागे हुए दासों की एक टोली में एक बार उसके साथ डेढ़ हजार डालर के मूल्य का एक हृष्ट-पुष्ट दास था। उसका नाम जोसिया बेली था। उसको पकड़कर लाने वाले के लिए मेरीलैण्ड में चारों ओर इनाम की घोषणा की गई थी। न्यूयार्क नगर से गुजरते समय स्वतन्त्रता-प्रेमी एक व्यक्ति ने अखबारों में दिए गये विवरण के आधार पर बेली को पहचान लिया और कहा, "एक ऐसे व्यक्ति से मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ जिसके प्राणों का मूल्य डेढ़ हजार डालर है।" पहचाना जाने पर जोसिया इतना भयभीत हो गया कि पकड़ जाने के डर से वह रास्ते भर एक शब्द भी अपने मुँह से नहीं निकाल सका। वह इतना अधिक आतंकित था कि भय के कारण कनाडा जाने वाली रेलगाड़ी से निआग्रा झरने के सुन्दर दृश्यों तक को नहीं देख सका। परन्तु जैसे ही वे लोग स्वतन्त्र भूमि में पहुँचे और जैसे ही उसने सुरक्षा का अनुभव किया, उसके मुख से गीतों के स्वर फूट उठे। वह इतना प्रसन्न हो उठा कि अब उसका गाना बन्द कराना कठिन था। प्रसन्न मन से उसने स्वर्गिक भूमि में पहुँचने के लिए ईश्वर को कोटि-कोटि धन्यवाद दिए। हैरिअट टबमैन ने उससे कहा, "अरे मूर्ख, स्वर्गिक भूमि की ओर आते हुए मार्ग में निआग्रा झरने को तो कम से कम देख लिया होता।"

हास्यपूर्ण बातें करने में हैरिअट अत्यन्त पटु थी। अपनी यह कहानी सुनाने में उसे बहुत आनन्द आता था कि किस प्रकार से अशिक्षित होने के कारण एक रात वह उसी बेंच पर सो गई जिस पर उसके पकड़ने के लिए इनाम की घोषणा करनेवाला विज्ञापन चिपका हुआ था। स्वतंत्रता संग्राम के लिए धन एकत्र करने के लिए आयोजित अपने भाषण में चुटकुले सुनाना, गाना और नाचना तक उसके लिए अत्यन्त सरल था। लोगों का कहना था कि वह एक सफल अभिनेत्री तक हो सकती थी, क्योंकि किसी प्रकार का वेश बदले बिना ही वह अपने गालों को पिचका कर अपनी भवों को इस प्रकार सिकोड़

लेती थी कि बिलकुल वृद्धा स्त्री जैसी दिखाई देने लगती। जब कभी उसे अपना रूप बदलना होता तो वह अपने सारे शरीर को सिकोड़ लेती और लड़खड़ाती हुई चलने लगती। एक बार अपने कुछ सम्बन्धियों को मुक्त कराने के लिए मेरीलैण्ड जाते समय उसे एक ऐसे गाँव से गुजरना था जहाँ के लोग उसे पहचानते थे। उसने दो मुर्गियाँ खरीदीं और उनके पैर बाँध कर उसने उन्हें अपनी गरदन के चारों ओर लटका लिया और लड़खड़ाती हुई आगे बढ़ने लगी। इसी समय सड़क पर दासों को पकड़नेवाला एक व्यक्ति दिखाई दिया जो उसे किसी भी वेश में पहचान सकता था। उसने मुर्गियों को खोलकर बीच सड़क पर छोड़ दिया और उनको पकड़ने के बहाने वह उनके पीछे भागने लगी। उसको भागते देखकर आस-पास के लोग हँसने लगे, परन्तु वह दासों को पकड़नेवाले व्यक्ति की दृष्टि से ओझल हो चुकी थी।

कभी-कभी जब वह यह देखती कि उसके भगाये हुए साथियों की खोज में उनके क्रोधित स्वामी लगे हुए हैं तब वह दक्षिण की ओर जानेवाली किसी गाड़ी में बैठ जाती, क्योंकि वह जानती थी कि कोई इस बात की कल्पना भी नहीं करेगा कि भागे हुए दास दक्षिण की ओर जायेंगे। कभी-कभी वह स्वयं अपना तथा अपने दल की अन्य स्त्रियों का वेश पुरुषों जैसा बना लेती। बच्चों को शान्त रखने के लिए नींद लानेवाली दवा देकर उन्हें गट्ठर की भाँति लपेट दिया जाता। सूँघकर पता लगानेवाले कुत्तों को धोखा देने के लिए कभी-कभी वह नदी के प्रवाह के विपरीत घंटों चलती रहती। अँधेरी रात में जब ध्रुवतारा भी दिखाई नहीं देता था तो वह पेड़ों के तनों पर लगी हुई उस काई (एक प्रकार की छोटी घास) को टटोलती हुई आगे बढ़ती जो उत्तर में अधिकता से पाई जाती है। जब चारों ओर केवल निराशा ही दिखाई देती—यद्यपि हैरिअट इसको कभी प्रकट नहीं करती थी—तो वह प्रार्थना करने लगती। उसकी एक प्रिय प्रार्थना थी, "हे ईश्वर, छह बार मेरे कष्टों में तूने

मेरी सहायता की है, सातवीं बार भी मुझे सहायता दे।" कुछ लोगों का कहना था कि हैरिअट के पास कोई मन्त्र शक्ति थी, क्योंकि बारह वर्ष के समय में दासों को मुक्त कराने के लिए उसने उन्नीस बार दक्षिणी प्रदेशों की भयानक यात्रा की थी। वह स्वयं कहा करती थी, "मैं कभी मार्ग नहीं भूली और न कभी मेरा कोई साथी खोया गया।"

जिस समय उसने अपने माँ बाप को दासता से मुक्त कराया उस समय उनकी अवस्था सत्तर वर्ष से भी अधिक थी। वह उन्हें न्यूयार्क में खरीदे हुए घर में ले गई। प्रारम्भ में कुछ समय के लिए उन्हें सेन्ट कैथराइन्स, कनाडा में ठहरना पड़ा। वहाँ सन् १८३३ में महारानी विक्टोरिया ने दासता को अवैध घोषित कर दिया था। परन्तु उसके वृद्ध माता-पिता में वहाँ का शीत सहने की शक्ति नहीं थी। इसके अतिरिक्त हैरिअट का भी वह कार्य-क्षेत्र न था। वैसे उसे अपने पकड़े जाने का कोई भय नहीं था। वह इच्छानुसार संयुक्त-राज्य अमरीका में भ्रमण करती थी। यद्यपि उसने कभी सम्मान पाने की चिन्ता नहीं की परन्तु वह इतनी प्रसिद्ध हो चुकी थी कि जहाँ कहीं भी जाती, उसे तुरन्त पहचान लिया जाता था। एक बार स्त्रियों के मताधिकार के विषय में आयोजित एक सभा में वह अपने सिर के पुराने घाव के कारण बैठे-बैठे ही बेहोश हो गई, उसे तुरन्त पहचान लिया गया और जब वह होश में आई तो उसने देखा कि वह सभामंच पर बैठी हुई है। स्त्रियों के अधिकारों के बारे में उसने जो भाषण दिया, उसका सबने बहुत स्वागत किया। उन दिनों स्त्रियों को तथा नीग्रो जाति के व्यक्तियों को मत देने का अधिकार नहीं था। हैरिअट का विचार था कि इन दोनों को मताधिकार मिलना चाहिए, इस कारण फ्रेडरिक डगलस की भाँति उसने भी स्त्री मताधिकार आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।

उसका रूप रंग अत्यन्त साधारण था, परन्तु नेतृत्व करने की जो शक्ति

उसमें थी वैसी कदाचित् ही किसी और में होगी। दास लोग, जिनके पास वह छिपे-छिपे जाती थी उसे देवी समझते थे। सन् १८५४ में नीग्रो इतिहासकार विलियम वैल्स ब्राउन ने उत्तरी राज्यों में आयोजित सार्वजनिक सभाओं का वर्णन करते हुए लिखा, "दासता-विरोधी सभाओं, भाषणों, मेलों इत्यादि में जानेवाले व्यक्तियों में से कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जिसने साधारण लम्बाई वाली एक ऐसी काली स्त्री को न देखा हो जिसके सामने के दाँत उखड़े हुए थे, जो सदैव मुस्कराती रहती थी, जो सदैव साधारण परन्तु स्वच्छ वस्त्र पहिनती थी, जिसके कंधे पर पुराने ढंग का एक थैला लटका रहता था, तथा जो अपने स्थान पर बैठते ही तुरन्त एक गहरी नींद में सो जाती थी।........ भागा हुआ वह दास कभी नहीं पकड़ा गया जिसने इस देवी को अपनी नेत्री के रूप में अपने साथ में लिया।" उसके विचार अत्यन्त स्वतंत्र थे। दासों को मुक्त कराने और भाषण देने से बचे हुए समय में वह भोजन बनानेवाली का या, साधारण नौकरानी का काम करती थी। उसने उधार भले ही लिया हो परन्तु अपने लिए उसने भिक्षा कभी नहीं माँगी। स्वतंत्रता-कार्य के लिए एकत्र किया गया धन तथा उसका अपना अर्जित धन सब स्वतंत्रता-कार्य में व्यय होता था।

राज्यों के बीच युद्ध प्रारम्भ होने पर उसने स्वयं को सेना में नर्स का काम करने के लिए और उसके पश्चात् शत्रु क्षेत्र में घुसकर जासूस का काम करने के लिए जब समर्पित कर दिया तो उसे इसके लिए कुछ धन देने का वचन दिया गया। वह एक मानी हुई नर्स नहीं थी और न वह स्त्री होने के कारण एक सैनिक कार्य कर सकती थी। फिर भी उसे सरकार की ओर से एक आज्ञा-पत्र दिया गया और उसे सरकारी गाड़ियों का प्रयोग करने की सुविधा दी गई। उसने राज्यों की सीमा के अन्दर अनेक साहसपूर्ण कार्य किये और अनेक सेनाधिकारियों को समय-समय पर आवश्यक सम्मति दी। परन्तु

उसे इन सबके बदले में कुछ नहीं दिया गया, यद्यपि कुछ कार्यों के लिए उसे अठारह सौ डालर तक देने का वचन दिया गया था। हैरिअट को इस सबकी कोई चिन्ता नहीं थी, परन्तु युद्ध के पश्चात् अपने माता-पिता की देखभाल करने के लिए उसने धन की कमी का बहुत अनुभव किया। युद्ध विभाग और अमरीकी कांग्रेस को अठारह सौ डालर के भुगतान के लिए निवेदन-पत्र भेजे गये, परन्तु उन पर कोई कार्यवाही नहीं की गई।

युद्ध काल में हैरिअट टबमैन ने आश्चर्यचकित कर देने वाले कार्य किये। ब्यूफोर्ट दक्षिण केरोलिना में जनरल स्टीवेन्स की अधीनता में काम किया। अतिसार, शीतला और पीले बुखार के रोगों से ग्रस्त रोगियों की परिचर्या करने के लिए उसे फ्लोरिडा भेजा गया। फोर्ट वाग्नर में वह कर्नल राबर्ट गोल्ड के साथ रही। उसने नौ नीग्रो स्काउटों के दलों का संघटन किया और कर्नल मोन्ट्गोमरी के साथ तोपों वाली तीन बड़ी नावों और नीग्रो सैनिकों की १५० टुकड़ियों का कोम्बाही नदी से होते हुए सञ्चालन किया। बोस्टन से प्रकाशित होने वाले १० जुलाई, १८६३ के कामनवैल्थ समाचार-पत्र में इस घटना का विवरण इस प्रकार दिया गया, "एक काली स्त्री के संचालन में उन्होंने शत्रु-क्षेत्र में प्रवेश करके एक भारी आक्रमण किया। उन्होंने लाखों डालरों की कीमत के सामान से भरी हुई कोठरियों, कपास और भव्य प्रासादों को नष्ट किया। उन्होंने विद्रोहियों के हृदयों में आतङ्क पैदा कर दिया और लगभग ८०० दास-दासियों तथा हजारों डालरों के मूल्य की सम्पत्ति को अपने अधिकार में कर लिया।" समाचार-पत्र ने हैरिअट के कार्यों का वर्णन करते हुए आगे लिखा, "कई बार खतरे की चिन्ता न कर उसने शत्रु-क्षेत्र में प्रवेश करके शत्रुओं की स्थिति का पता लगाया, और बिना किसी प्रकार की हानि के वहाँ से सुरक्षित लौट आई।"

युद्ध काल में जिन गीतों को वह गाती थी उनमें एक गीत का भाव

इस प्रकार है—"पूर्व से लेकर पश्चिम तक सम्पूर्ण सृष्टि में भव्य यान्की राष्ट्र (संयुक्त-राज्य अमेरिका) सबसे महान् और उत्तम है। बढ़े चलो! बढ़े चलो!! डरने की कोई आवश्यकता नहीं है, अन्किल साम (सं० रा० अमेरिका) के पास तुम सबको आश्रय देने के लिए पर्याप्त साधन है।" परन्तु हैरिअट टबमैन स्वयं अपने लिए कोई खेत इत्यादि नहीं प्राप्त कर सकी। अपनी दयालु प्रकृति के कारण वह अपना सब धन परोपकार में खर्च कर देती थी। भागे हुए दास, सम्बन्धी या मित्र किसी-न-किसी को प्रत्येक समय धन की आवश्यकता रहती थी। जिस स्वतन्त्रता के लिए उसने संघर्ष किया उसको वैध बताते हुए अब्राहम लिंकन ने जब मुक्ति घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किये उस समय हैरिअट ४० वर्ष से कुछ अधिक की थी। युद्ध-समाप्ति के पश्चात् वह लगभग ५० वर्ष और जीवित रही। सन् १९१३ में जब उसकी मृत्यु हुई तो कुछ लोगों के विचार में उस समय उसकी आयु १०० वर्ष की थी। कुछ भी हो, उसकी आयु निश्चय ही ९० वर्ष के ऊपर थी।

उसके बारे में अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं। पहली पुस्तक, हैरिअट टबमैन के जीवन के दृश्यों, जो कि सारा एच० ब्रैडफोर्ड ने लिखी थी, सन् १८६९ में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक की बिक्री से जो धन मिला उससे हैरिअट ने अपने लिए एक घर खरीदा। उसने फ्रेडरिक डगलस को, जिन्होंने उसे तथा उनके भागे हुए साथियों को अनेक बार रोशेस्टर में अपने घर में छिपाया था, अपनी पुस्तक के विषय में उनकी सम्मति जानने के लिए एक पत्र लिखा। उत्तर में उन्होंने अपने एवं हैरिअट, दोनों के चरित्रों की तुलना करते हुए लिखा—

"हम दोनों में जो अन्तर है वह बिलकुल स्पष्ट है। अपने कार्य के सम्बन्ध में जो कुछ मैने किया है वह जन-सधारण के सामने किया है और इसके लिए प्रत्येक पग पर मुझे प्रोत्साहन मिला है। इसके विपरीत तुमने जो कुछ किया है वह जनता से दूर रहकर किया है। मैंने दिन के प्रकाश में कार्य किया

है, तुमने रात्रि के अन्धकार में। विशाल जन-समूहों ने मेरा स्वागत किया है और इस प्रकार के स्वागत से जो कुछ सुख मिलता है, मैंने उसका अनुभव किया है, जब कि तुमने जो कुछ किया है उसके साक्षी केवल वह काँपते हुए, भयभीत एवं पीड़ित दास-दासियाँ हैं, जिन्हें तुमने दासता के बन्धनों से मुक्त किया है। पुरस्कार-स्वरूप तुम्हें मिले हैं केवल ये शब्द, 'ईश्वर तुम्हारा भला करे'। अर्ध रात्रि का आकाश और मूक तारागण ही तुम्हारी लगन और वीरता के साक्षी हैं।''

वर्षों बाद, उसकी वृद्धावस्था में, न्यूयार्क हैरल्ड ट्रिब्यून का एक संवाददाता उससे भेंट करने गया। इस भेंट का वर्णन करते हुए उस सम्वाद-दाता ने लिखा है कि उसके लौटते समय हैरिअट ने सेबों के एक बाग की ओर देखते हुए उससे कहा—''क्या तुम्हें सेब पसन्द हैं ?''

यह जान लेने के बाद कि उस युवक को सेब पसन्द हैं, उसने पूछा—''क्या तुमने कभी सेब के पेड़ लगाये हैं ?'' सम्वाददाता के यह कहने पर कि उसने कभी ऐसा नहीं किया, हैरिअट ने कहा—''परन्तु कोई-न-कोई तो उन्हें बोता ही है। जब मैं छोटी थी तो मुझे सेब बहुत पसन्द थे और मैं कहा करती थी कि किसी दिन मैं दूसरों के लिए सेब के पेड़ लगाऊँगी और मेरा विचार है, मैंने ऐसा अवश्य किया है।''

उसके सेब स्वतन्त्रता के सेब थे। वह उन्हें फलता हुआ देखने के लिए जीवित रही। आज ऑबर्न, न्यूयार्क, में स्मारक स्वरूप उसका घर अभी भी सुरक्षित है।

बुकर टी० वाशिंग्टन

जन्म लगभग १८५८—मृत्यु १९१५

हैरिअट टबमेन की मृत्यु के एक वर्ष पश्चात् ऑबर्न, न्यूयार्क, में उसकी स्मृति में आयोजित समारोह में भाषण देने वाले बुकर टी० वाशिंग्टन भी थे। उनका जन्म भी दासता में ही हुआ था, परन्तु उनके बाल्य-काल में ही दासता समाप्त हो गई थी, इस कारण बुकर को फ्रेडरिक डगलस और हैरिअट टबमैन जैसी यातनाएँ नहीं सहनी पड़ीं। बुकर ने अपना जीवन स्वतंत्रता के लिए नहीं बल्कि शिक्षा-प्रसार के लिए संघर्ष करने में व्यतीत किया। उन्हें एक महान् शिक्षक बनना था।

फ्रेडरिक डगलस की भाँति बुकर के पिता भी श्वेत जाति के थे। उनकी माँ नीग्रो दासी थी जो रसोई बनाने का काम करती थी। बुकर का जन्म खेतों के रसोई-घर में हुआ। उनके घर में खिड़कियाँ नहीं थीं और घर का फर्श भी बहुत गंदा रहता था। अँगीठी के सदैव जलते रहने के कारण वहाँ ग्रीष्म ऋतु में बहुत गरमी और शीत ऋतु में बहुत धुआँ रहता था। घर की दीवार में एक छेद था जिसके द्वारा रात में एक बिल्ली आती-जाती थी। घर के बीच में तख्ते से ढका हुआ जमीन में एक गड्ढा था जिसमें सकरकन्द रखे जाते थे। बचपन में उनका केवल एक नाम था, बुकर। राज्यों के बीच युद्ध समाप्त हो जाने के पश्चात् जब उन्होंने स्कूल जाना प्रारम्भ किया तभी उन्होंने अपना नाम बदला। इससे पहले इस बारे में उन्होंने कभी विचार नहीं किया।

युद्ध में उनके सौतेले पिता ने यूनियन सेनाओं का साथ दिया। युद्ध

समाप्त हो जाने के पश्चात् जब सब दास मुक्त हो गये, तो उनके स्वामी ने, जिसे माल्डेन, पश्चिमी वर्जिनिया में नमक की खानों में काम मिल गया था, अपने समस्त परिवार को अपने पास बुला लिया। जिस समय बुकर ने अन्य दासों एवं अपने स्वामी के परिवार के सदस्यों के साथ घर के सामने खड़े होकर मुक्ति-घोषणापत्र को पढ़े जाते हुए सुना उस समय वे आठ वर्ष के थे। दासों को यह बताया गया कि वे अब मुक्त हैं। बुकर ने उनको प्रसन्नता के आवेग में चिल्लाते हुए देखा। उन्होंने दासों के प्रसन्नता के आँसू भी देखे। इस घटना के बारे में अपनी पुस्तक "अप फ्राम स्लेवरी" में वर्णन करते हुए बुकर ने लिखा कि यह प्रसन्नता केवल थोड़े ही दिन रही, क्योंकि शीघ्र ही वे इस बात का अनुभव करने लगे कि स्वतंत्र होने के पश्चात् अब उन पर अपने एवं अपने बाल-बच्चों के पालन-पोषण करने का उत्तरदायित्व आ गया है। ऐंग्लो सेक्सन जाति शताब्दियों से जिन समस्याओं को सुलझाने में लगी हुई है, कुछ ही घंटों के अंदर वे समस्याएँ इन लोगों के सामने आ गईं। ये समस्याएँ थीं—गृह-निर्माण, जीवन-यापन, बालकों का पालन-पोषण, शिक्षा, नागरिकता, और नये चर्चों की स्थापना। उनके पास न धन था, न भूमि। स्वतंत्रता के अतिरिक्त उनके पास और कुछ नहीं था।

पश्चिमा वर्जिनिया में बुकर को नमक की भट्ठी में काम मिल गया। यहाँ उन्हें सुबह चार बजे से काम प्रारम्भ करना होता था। रात्रि के समय वह और उनकी माँ एक पुरानी किताब से अक्षर पहचानने का प्रयत्न किया करते। उन्हें अपने आप ही लिखना-पढ़ना सीखना था, क्योंकि वहाँ आस-पास ऐसा कोई शिक्षक नहीं था जो उन्हें इस कार्य में सहायता पहुँचा सके। एक दिन एक शिक्षित व्यक्ति उस नगर में आया। अश्वेत जाति के लोगों ने थोड़ा-थोड़ा धन एकत्र करके उससे एक स्कूल खोलने की प्रार्थना की। उसके शिष्य प्रत्येक अवस्था के थे, क्योंकि प्रत्येक नीग्रो लिखना, पढ़ना

बुकर टी० वाशिंगटन

सीखना चाहता था। वृद्ध मनुष्य इस कारण पढ़ना चाहते थे कि मृत्यु से पूर्व वे कम से कम बाइबिल पढ़ने योग्य हो जायँ। जो लोग दिन में काम करते थे उनको रात्रि में पढ़ाने की व्यवस्था की गई और जिन व्यक्तियों को कभी अवकाश नहीं मिलता था वे रविवार को पढ़ते थे। दिन के स्कूल, रात्रि-स्कूल, रविवारीय स्कूल, सभी भर गये। परन्तु बालक बुकर के साथ सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि उनके सौतेले पिता उनको स्कूल नहीं जाने देते थे। नमक का भट्ठी में काम करने पर जो कुछ उन्हें मिलता था उसकी उनके परिवार को आवश्यकता थी। अंत में उनकी माँ ने उनकी सहायता की और उन्हें रात्रि स्कूल में पढ़ने की आज्ञा मिल गई। बाद में उनके पिता ने इस शर्त पर उन्हें दिन के स्कूल में जाने की आज्ञा दे दी कि वह स्कूल जाने से पहले और स्कूल से आने के बाद नियमित रूप से नमक की भट्ठी पर काम करते रहेंगे।

पहले दिन जब वह स्कूल गये तो उन्होंने कक्षा में शिक्षक को प्रत्येक विद्यार्थी का नाम पूछते हुए देखा। जब विद्यार्थियों के नाम पूछे जा रहे थे तो बुकर का हृदय जोर-जोर से धड़कने लगा। उन्होंने देखा कि प्रत्येक विद्यार्थी के नाम के दो-दो, तीन-तीन शब्द हैं, जब कि उनके नाम में केवल एक ही शब्द है। उन्होंने लज्जा के कारण अपना सिर झुका लिया और बहुत बेचैनी का अनुभव करने लगे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। परन्तु उनकी बारी आने पर जैसे ही उनका नाम पूछा गया, उन्होंने जोर से कहा, बुकर वाशिंगटन। तब वह स्वयं नहीं जानते कि कैसे बिना सोचे-विचारे उस समय यह नाम एकदम उनके मस्तिष्क में आ गया। परन्तु क्योंकि उस समय उन्होंने यह नाम बोल दिया था इस कारण उन्होंने स्थायी रूप से इस नाम को अपना लिया। बाद में उन्होंने अपने नाम के बीच में टेलियाफैरो शब्द और जोड़ दिया परन्तु क्योंकि इस शब्द का उच्चारण करना और लिखना कठिन था इस

कारण वह इसके संक्षिप्त रूप से काम चलाने लगे। लोग सदैव उन्हें बुकर टी० नाम से पुकारते थे।

बुकर जब कुछ बड़े हो गये और उन्हें नमक की खानों में काम करने के योग्य समझा जाने लगा तो उन्हें नमक की भट्ठी को छोड़ना पड़ा। वह जितना धन कमा सकते थे, उनके परिवार को उस सबकी आवश्यकता थी। इस कारण वह अधिक दिन तक स्कूल में न पढ़ सके। नमक की खानों में कुछ दिन पश्चात् बुकर कोयले की खानों में काम करने चले गये जहाँ पर काम करना कठिन ही नहीं वरन् खतरनाक भी था। कोयले की खान में विस्फोट से झुलस जाने तथा चट्टानें गिरने पर कुचल जाने का सदैव भय बना रहता था। कभी-कभी बुकर का दीपक बुझ जाता और वह घंटों उस भयावने अंधकार में खोये से घूमते रहते। कोयले की खान में काम करते हुए उन्होंने सबसे पहली बार लोगों को वर्जिनिया के उस हैम्पटन स्कूल के बारे में बात करते हुए सुना जहाँ पर विद्यार्थी पढ़ाई के साथ-साथ काम भी कर सकते थे। बालक बुकर टी० ने वहाँ जाने का निश्चय किया। धीरे-धीरे उन्होंने कुछ धन एकत्र कर लिया। वहाँ के लोगों ने स्कूल जाने के उनके निश्चय से प्रसन्न होकर उन्हें कुछ सिक्के, रुमाल और मोजे इत्यादि उपहार में दिये। एक व्यक्ति ने उन्हें एक टूटा-फूटा पुराना संदूक दिया। इस समय बुकर टी० पन्द्रह वर्ष के थे। हैम्पटन वहाँ से पाँच सौ मील पर था। जब तक पैसे समाप्त न हो जायँ तब तक गाड़ी में यात्रा करने के विचार से बुकर एक दिन एक पुराने ढंग की गाड़ी में बैठकर वहाँ से चल दिये।

सायंकाल के समय गाड़ी एक सराय के पास जाकर रुकी जहाँ पर यात्री लोग खाना खाकर रात्रि में आराम कर सकते थे। बुकर टी० को छोड़कर उस गाड़ी के समस्त यात्री श्वेत थे। बुकर जब सराय के स्वामी के पास गये तो उसने अत्यन्त रुखाई के साथ उनसे सराय छोड़ देने को कहा और

उन्हें भोजन तथा रात्रि को सोने के लिए स्थान तक देने से इन्कार कर दिया। सारी रात वह भूखा बालक अपने शरीर में गरमी लाने के लिए सड़कों पर घूमता रहा। बाद में अपनी पुस्तक 'अप फ्राम स्लेवरी' में इस घटना का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा, "मुझे पहली बार यह पता चला कि मेरे काले होने का क्या अर्थ है, परन्तु हैम्पटन पहुँचने के लिए मेरे मन में इतनी लगन थी कि मैंने सराय के स्वामी के विरुद्ध उस समय कुछ नहीं सोचा।"

रिशमॉण्ड पहुँचते-पहुँचते बुकर टी० का सब धन समाप्त हो गया, इस कारण उन्हें उस रात सड़क के किनारे लकड़ी की छत के नीचे सोना पड़ा। प्रातःकाल जब सड़क पर चलनेवाले लोगों के पैरों की आवाज से उनकी आँखें खुलीं तो उन्होंने देखा कि वह एक नदी के पास हैं। जहाँ पर एक जहाज से कच्चा लोहा उतारा जा रहा है। जहाज के कप्तान ने उन्हें लोहा उतारने का काम दे दिया। इस कारण वह कुछ दिन रिशमॉण्ड में रहे। परन्तु अपनी शेष यात्रा के लिए कुछ बचा रखने की दृष्टि से वह सड़क के किनारे ही सोते रहे। जब उनके पास कुछ धन इकट्ठा हो गया तो उन्होंने हैम्पटन की यात्रा, कुछ दूर गाड़ी में और कुछ दूर पैदल, प्रारम्भ कर दी। जब वह हैम्पटन पहुँचे तो शिक्षा प्रारम्भ करने के लिए उनके पास केवल पचास सेंट शेष बचे थे। वहाँ पहुँचने पर उन्होंने तीन मंजिल की उस भव्य इमारत को देखा तो उन्हें ऐसा लगा जैसे इतनी बड़ी और सुन्दर इमारत उन्होंने इससे पूर्व कभी नहीं देखी थी। उन्हें ऐसा अनुभव होने लगा मानों वह स्वर्ग में हों। परन्तु जब वह धूल में सने हुए, भूखे और थके स्कूल की प्रधानाध्यापिका मिस मेरी एफ० मैकी के सम्मुख उपस्थित हुए तो उन्हें सब कुछ बदला हुआ सा मालूम होने लगा। प्रधानाध्यापिका ने उन्हें एक आवारा घूमनेवाला भिखारी समझा, और उन्हें स्कूल में भर्ती करने के लिए कोई उत्साह नहीं दिखाया। परन्तु क्योंकि उन्होंने स्पष्ट शब्दों में "नहीं" नहीं कहा था इस कारण बुकर

प्रधानाध्यापिका के कार्यालय के आस-पास घूमते रहे। अन्य विद्यार्थियों को भर्ती होते हुए देखकर उनकी बेचैनी और भी बढ़ती रही। अंत में मिस मैकी ने उनसे कहा, "पास के कमरे में सफाई की आवश्यकता है। झाड़ू लेकर उसे साफ कर दो।"

बालक बुकर टी० जानते थे कि यही उनकी प्रवेश परीक्षा है। इस कारण उन्होंने एक बार नहीं बल्कि सब सामान को उठा-उठा कर तीन बार कमरे को साफ किया। उसके बाद उन्होंने सब सामान को यथास्थान रखकर झाड़न से चार बार वहाँ की धूल पोंछी। सब काम समाप्त करने के पश्चात् उन्होंने प्रधानाध्यापिका को इसकी सूचना दी। प्रधानाध्यापिका ने अपना सफेद रुमाल लकड़ी के सामान पर रगड़ कर देखा, परन्तु कहीं भी उन्हें धूल का एक कण नहीं मिला। उन्होंने उस आतुर नीग्रो बालक की ओर देखा और कहा, "मेरे विचार से तुम इस संस्था में प्रवेश पाने के योग्य हो।" मिस मैकी ने उन्हें चौकीदारी का काम दे दिया और इस प्रकार से रात को देर तक स्कूल के कमरे साफ करने तथा सुबह को जल्दी उठकर अँगीठी जलाने का काम करके बुकर टी० ने शिक्षा प्राप्त की और राज का काम सीखा। उन्होंने अच्छी तरह से पढ़ना, स्पष्ट रूप से बोलना, प्रतिदिन स्नान करना और लिहाफ-गद्दों में सोना सीखा। उन्हें सोने के लिए जो कमरा दिया गया था उसमें सात और विद्यार्थी थे। वह उन्हें यह नहीं जानने देना चाहते थे कि इससे पूर्व वे कभी लिहाफ-गद्दों में नहीं सोये थे और इस कारण यह नहीं जानते थे कि उनका उपयोग कैसे करें। पहली रात को बुकर टी० ने लिहाफ और गद्दा दोनों को ओढ़ लिया। दूसरी रात को उन्होंने दोनों को अपने नीचे बिछा लिया—काफी समय बाद कहीं उन्हें यह मालूम हुआ कि गद्दे को बिछाना और लिहाफ को ओढ़ना चाहिए। सन् १८७५ में उन्होंने हैम्पटन में शिक्षा समाप्त करके विशेष योग्यता सहित उपाधि ग्रहण की।

हैम्पटन संस्था के संस्थापक जनरल आर्मस्ट्रांग तथा अन्य श्वेत शिक्षकों ने,जो स्वतंत्र नीग्रो लोगों को शिक्षा में सहायता देने दक्षिण आये थे, बुकर टी० पर बहुत प्रभाव डाला। उनके कठिन परिश्रम, आत्म-त्याग, सहानुभूति तथा उनकी विद्यार्थियों की समस्याओं की जानकारी से वह बहुत प्रभावित हुए। *संस्था के अनेक विद्यार्थी आयु में अपने शिक्षकों से भी बड़े थे।* न्यूइंगलैण्ड की शुद्ध हृदय मिस मैकी, पढ़ाई से बचे हुए समय में, कमरों को साफ करने और खिड़कियों को धोने में स्वयं बुकर टी० की सहायता करती थीं। ऐसे शिक्षकों का उल्लेख करते हुए बाद में उन्होंने लिखा, "वे लोग कितने अच्छे थे। रात-दिन, समय-असमय प्रतिक्षण वे विद्यार्थियों के लिए सब कुछ करने के लिए तत्पर रहते थे।—युद्ध के बाद तुरन्त नीग्रो जाति के लोगों को शिक्षित बनाने में यान्की शिक्षकों ने जो भाग लिया वह इस देश के इतिहास में अमर रहेगा।"

जब जनरल आर्मस्ट्रांग ने देखा कि स्कूल में बहुत से नये विद्यार्थी आ रहे हैं तो सबको स्थान देने की दृष्टि से उन्होंने तम्बू बनवा दिये, और उन्होंने जब कुछ विद्यार्थियों से शीत-ऋतु में खान में सोने के लिए कहा था तो लगभग सभी विद्यार्थी उनके प्रेम के कारण तैयार हो गये। भयंकर शीत-ऋतु में ऐसे तम्बुओं में, जो रात में तेज हवा चलने के कारण कभी-कभी उड़ तक जाते थे, सोने वालों में बुकर टी० भी थे। परन्तु प्रत्येक सुबह को जब जनरल उन युवकों को उनके तम्बुओं में देखने आते तो उनके प्रसन्नता भरे प्रोत्साहन देने वाले, शब्दों को सुनकर विद्यार्थियों का सब दुख दूर हो जाता। बुकर टी० जनरल आर्मस्ट्रांग जैसे ही बनाना चाहते थे। इस कारण वे भी निम्न वर्ग के शिक्षक बने।

शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात् वह अपने घर माल्डेन वापिस चले गये। वहाँ उन्होंने सुबह के आठ बजे से रात्रि के दस बजे तक पढ़ाने का कार्य करना

प्रारंभ कर दिया। अनेक श्रमिक पढ़ना चाहते थे इस कारण उनके रात्रि स्कूल की विद्यार्थी-संख्या दिन के स्कूल जैसी ही बहुत अधिक रहती थी। रविवार के दिन वह दो स्कूलों का आयोजन करते थे—एक नगर में; दूसरा गाँव में। इसके साथ-साथ उन्होंने कुछ ऐसे युवकों को अलग से भी पढ़ाना प्रारंभ कर दिया जो उनकी भाँति हैम्पटन स्कूल जाने के इच्छुक थे। बुकर टी० अपने उन बड़े भाई को विशेष रूप से पढ़ाना चाहते थे जिन्होंने अब तक खानों में काम करने में कठिन परिश्रम किया था। इस कारण उन्होंने अपने भाई को पढ़ने में सहायता दी और उन्हें हैम्पटन जाने के लिए प्रोत्साहित किया। वास्तव में माल्टेन से बुकर टी० द्वारा हैम्पटन भेजे गये विद्यार्थी इतने योग्य सिद्ध होते थे कि जनरल आर्मस्ट्रांग को यह मानना पड़ा कि बुकर टी० एक योग्य शिक्षक हैं। इस कार्य से प्रभावित होकर उन्होंने बुकर टी० को हैम्पटन आकर पढ़ाने और उन सौ इंडियन विद्यार्थियों के रहने की व्यवस्था करने के लिए आमन्त्रित किया जो शीघ्र ही हैम्पटन में पढ़ने आने वाले थे। नीग्रो विद्यार्थियों ने लाल रंग के मनुष्यों (रैड-इंण्डियन) का हार्दिक स्वागत किया और उन्हें अपने कमरों में रखकर अँग्रेजी सीखने में सहायता दी। हैम्पटन बहुत वर्षों तक नीग्रो और इंडियन विद्यार्थियों के लिए अमरीका का प्रमुख शिक्षा-केन्द्र रहा। युवक बुकर टी० इंडियन विद्यार्थियों के "गृह-पिता" कहे जाने लगे।

सन् १८८१ में उन्हें दक्षिण में टस्कैगी नाम के स्थान में एक स्कूल खोलने के लिए बुलाया गया। एक नीग्रो चर्मकार तथा एक श्वेत साहूकार ने जनरल आर्मस्ट्रांग को इस कार्य के लिए एक सुयोग्य व्यक्ति भेजने के लिए लिखा था। आर्मस्ट्रांग ने बुकर टी० को वहाँ भेज दिया। इस प्रकार एक टूटे हुए चर्च में पन्द्रह वर्ष की आयु से लेकर चालीस वर्ष की आयु तक के तीस विद्यार्थियों के साथ केवल एक शिक्षक के सहारे टस्कैगी स्कूल का कार्य प्रारम्भ

हुआ। किसी प्रकार के सामान के बिना सैकड़ों भूखी और ज्ञान प्राप्ति की इच्छुक आत्माओं को लेकर बुकर टी० ने कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। प्रारम्भ में उनके स्कूल की छत में इतने छेद थे कि वर्षा के समय पढ़ाई चालू रखने के लिए एक विद्यार्थी को बुकर के ऊपर छाता खोले रहना पड़ता था। अलाबामा राज्य की व्यवस्थापिका सभा ने दो हजार डालर शिक्षकों के वेतन के लिए मंजूर किये परन्तु स्कूल की इमारत के लिए कुछ भी नहीं किया गया। इस कारण बुकर टी० और उनके विद्यार्थियों ने स्वयं रुपया एकत्र करके भूमि खरीदने और स्कूल के लिए इमारत बनाने का निश्चय किया। यह सब करने के पश्चात् उन्होंने इमारत का शिलान्यास करके स्वयं ही निर्माण कार्य भी प्रारम्भ कर दिया। टूटी हुई छतवाले कमरे के स्थान पर दर्जनों सुन्दर इमारतें खड़ी हो गईं, एक शिक्षक के स्थान पर सौ से भी अधिक शिक्षक हो गये और तीस विद्यार्थियों से बढ़ते-बढ़ते तीन हजार विद्यार्थी हो गये। इसी प्रकार टस्कैगी निरन्तर प्रगति करता रहा और अंत में टस्कैगी स्कूल की गणना संसार के सर्व-प्रसिद्ध स्कूलों में तथा बुकर टी० वाशिंग्टन की गणना अमरीका के सर्वप्रमुख नीग्रो नागरिकों में होने लगी।

बुकर टी० के स्कूल खोलने के एक वर्ष पश्चात् दक्षिण में नीग्रो जाति के २५५ लोगों को सताया जा रहा था। कुक्लुक्स क्लॉ (अमरीका के नीग्रो विरोधी दल) ने आतंक पैदा करनेवाला अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया था। संघीय संविधान में संशोधन द्वारा स्वतंत्र नीग्रो नागरिकों का जो मताधिकार दिया गया था उसको राज्यों की व्यवस्थापिका सभाएँ कानून बनाकर समाप्त कर रहीं थीं। पक्षपात और निर्बलता, अज्ञान और दु:ख कफन की भाँति स्वतंत्र नीग्रो नागरिकों के सिर पर लटकते हुए दिखाई देने लगे। ऐसी स्थिति में अलाबामा राज्य के बीच में एक अकेला युवक शिक्षक क्या कर सकता था? उनका कहना था कि सबसे पहले नीग्रो लोगों को अच्छी तरह से काम करना,

स्वच्छ और स्वस्थ रहना तथा अपनी आत्मप्रतिष्ठा का ध्यान रखना सीखना चाहिए। उन्हें सीखना चाहिए कि वे अपने ही घरों में अपनी अवस्था को किस प्रकार से सुधारें और किस प्रकार से अपनी भूमि में खेती करें। इसी कारण बुकर टी० चाहते थे कि उनके विद्यार्थी अपने स्कूल की इमारत का स्वयं निर्माण करें जिससे कि यह काम अपने आप करना सीख जायँ और उन्हें दूसरों पर निर्भर रहना न पड़े। इसी सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए उन्होंने स्कूल के लिए खरीदी गई भूमि के एक भाग में खेती करना प्रारम्भ किया। उन्होंने शीघ्र ही बहुत से पशुओं को भी खरीदा और अपने विद्यार्थियों को उनकी देख-भाल करना सिखाया। इस सबके पीछे हाथों से श्रम करने में और "एक साधारण काम को एक असाधारण ढंग से करने में" एक विशेष प्रकार की प्रतिष्ठा भी थी। उन्होंने शीघ्र ही स्कूल को निर्धन, अशिक्षित और ग्रामीण मनुष्यों की आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने का प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया। और अपने विद्यार्थियों को इस योग्य बनाया कि वे अपने-अपने घर वापस जाकर लोगों को यह बता सकें कि केवल कृषि में ही नहीं वरन् मनुष्यों के बौद्धिक, नैतिक एवं धार्मिक जीवन में भो नवीन शक्ति और नवीन विचारों को किस प्रकार अपनाया जा सकता है। टस्कैगी ऐसी प्रथम संस्था थी जिसने खेतों और घरों को सुधारने के उपायों का प्रदर्शन किया और एक "चलते फिरते स्कूल" की योजना बनाई। इस योजना के अन्तर्गत पुस्तकों, औजारों और शिक्षकों से भरी हुई एक ट्रक द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में काफी दूर तक जाकर वहाँ के लोगों को व्यावहारिक कार्यों की शिक्षा दी जाती थी।

प्रारम्भ से ही बुकर टी० को गाँव के श्वेत-अश्वेत लगभग सभी व्यक्तियों से सहायता और उचित सम्मति मिली। अनेक निर्धन और वृद्ध नीग्रो, जिन्होंने अपना अधिकांश जीवन दासता में व्यतीत किया था, सिक्के, गन्ने, कपड़े और कपास उपहारस्वरूप टस्कैगी लेकर आते थे। एक दिन ७०

वर्ष से भी अधिक आयु की एक वृद्धा स्त्री, चिथड़े पहने हुए, प्रधानाध्यापक के कार्यालय में आई। वह एक छड़ी के सहारे चल रही थी। उसकी एक बाँह में एक टोकरी लटक रही थी। उसने बुकर टी० से कहा—"मि० वाशिंगटन, मैंने अपने जीवन के सबसे अच्छे दिन दासता में व्यतीत किये हैं। ईश्वर जानता है कि मैं निर्धन और अशिक्षित हूँ। परन्तु मैं जानती हूँ कि आप नीग्रो जाति के स्त्री-पुरुषों को उन्नत करने के लिए बहुत कार्य कर रहे हैं। मेरे पास धन नहीं है, परन्तु मैं चाहती हूँ कि आप इन छः अण्डों को स्वीकार करलें जिन्हें मैं बहुत दिन से बचाती आई हूँ। मैं चाहती हूँ कि इन छः अण्डों का उपयोग आप मेरी ओर से इन लड़के-लड़कियों के शिक्षा कार्य में करें।" बाद में अनेक प्रसिद्ध और धनी व्यक्तियों ने टस्कैगी स्कूल के लिए बड़ी-बड़ी वस्तुएँ उपहार में दीं। एन्ड्रयू कार्नेगी ने स्कूल के लिए पाँच लाख डालर से अधिक की इकट्ठी सम्पत्ति दी। परन्तु कोई भी उपहार बुकर टी० को इन अण्डों वाले उपहार से अधिक प्रभावित नहीं कर सका।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर लेने के बाद भी बुकर टी० ने उन लोगों से अपना सम्बन्ध नहीं तोड़ा जिन्हें उन्होंने पढ़ाया और जिनके साथ वह जीवन भर रहे। राष्ट्रपति मैककिन्ले और उनके मंत्रिमंडल ने टस्कैगी जाकर इस संस्था को देखा। राष्ट्रपति थियोडोर रूजवैल्ट ने बुकर टी० को ह्वाइट हाउस में भोजन के लिए निमन्त्रित किया। इंगलैण्ड जाने पर वह विन्ड्सर महल में महारानी विक्टोरिया के अतिथि बने। परन्तु टस्कैगी वापिस आने पर बुकर टी० सदैव कृषकों के साथ मिल जाते—वह उनकी सभाओं में भाग लेते, उनके साथ बातचीत और हँसी-दिल्लगी करते और कठिनाइयों में उनकी सहायता करते। आजीवन वह टस्कैगी के प्रिंसिपल रहे। इसका कारण सम्भवतः यह था कि वाशिंग्टन एक नीग्रो कृषक के घर में उतनी ही शान्ति का अनुभव करते थे जितनी शान्ति उन्हें "फिफ्थ एवेन्यू" के एक भव्य प्रासाद में मिलती थी। वह

अमरीका के श्वेत और अश्वेत व्यक्तियों के बीच मधुर सम्बन्ध स्थापित करने वाले एक मध्यस्थ व्यक्ति बन गये। टस्कैगी के शिक्षक से भी अधिक उनकी ख्याति जाति समस्याओं को सुलझाने वाले राजनीतिक के रूप में थी। उनकी युवावस्था में अमरीका में श्वेत-अश्वेत जाति के सम्बन्धों की समस्या अत्यन्त विकट रूप में थी। स्वतन्त्रता-प्राप्त नीग्रो प्रगति करना चाहते थे। परन्तु कुछ श्वेत अमरीकी यह चाहते थे कि वे किसी प्रकार की प्रगति न करें। एक ओर जहाँ ऐसे श्वेत शिक्षक थे जो दक्षिणी प्रदेशों में जाकर नीग्रो लोगों को शिक्षित करने के लिए अपने प्राणों तक का बलिदान करने को प्रस्तुत थे तो दूसरी ओर कुक्लुक्स क्लाँ दल के व्यक्ति भी थे जो नीग्रो स्कूलों को जलाकर वहाँ के शिक्षकों को भगा देने में कोई कसर नहीं रखते थे। क्लाँ दल के लोग रात्रि में सफेद टोप और कपड़े पहने नीग्रो लोगों को और उनके अनेक श्वेत मित्रों को भयभीत करते हुए घूमते दिखाई देते।

दक्षिण में नीग्रो जाति और श्वेत जाति में पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए बुकर टी० वाशिंग्टन ने एक उपाय खोज निकाला था। उनका कहना था, "दक्षिण के नीग्रो लोगों के विकास आन्दोलन की सफलता के लिए दक्षिण के श्वेत व्यक्तियों का सहयोग परमावश्यक है।" सन् १८९५ में ऐटलाण्टा की कपास प्रदर्शनी में दिये गये अपने भाषण में उन्होंने अपने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। हजारों श्रोताओं की सभा में वाशिंग्टन ने कहना प्रारम्भ किया, "दक्षिण की जन-संख्या में एक तिहाई व्यक्ति नीग्रो जाति के हैं।" भाषण के बीच में उन्होंने एक जहाज की कहानी सुनाते हुए कहा कि समुद्र में जाते हुए जहाज ने, जिसके पास पीने का पानी समाप्त हो गया था, दूसरे जहाज से संकेतों द्वारा बातचीत करके पीने का पानी माँगा। दूसरे जहाज ने संकेतों द्वारा ही उस जहाज से जलपात्र बाहर निकालने के लिए कहा। इस प्रकार के संकेतों से बातचीत करते-करते ही बहुत समय व्यतीत हो गया और

अंत में जब जलपात्र बाहर निकाले गये तो जहाज ने यह देखा कि वह ऐसे स्थान में आ पहुँचा है जहाँ स्वयं ही पीने योग्य स्वच्छ जल प्राप्त हो सकता है। कहानी के प्रसंग में वाशिंगटन ने आगे कहा, "अपनी जाति के उन लोगों से, जो दक्षिण के अपने पड़ोसी श्वेत व्यक्तियों से सम्बन्ध स्थापित करने के महत्त्व को नहीं समझते हैं, मेरा यह कहना है कि अपने जलपात्र को तुरन्त सामने कर दो। अपने आस-पास रहनेवाले सभी जातियों के मनुष्यों से हृदय खोल कर मित्रता स्थापित करो। कृषि, यन्त्र-विद्या, वाणिज्य, घरेलू सेवा तथा प्रत्येक व्यवसाय में लग जाओ......कोई भी जाति यह अनुभव किये बिना नहीं फूल-फल सकती कि खेती करने के काम में भी उतना सम्मान है जितना कविता लिखने में......श्वेत जाति के लोगों से भी मैं वही कहना चाहूँगा जो अपनी जाति के लोगों से मेरा कहना है, अपने जलपात्र को तुरन्त सामने कर दो, अस्सी लाख निग्रो नागरिकों को पूर्ण अवसर प्रदान करो। ये वे लोग हैं जिन्होंने बिना किसी हड़ताल और श्रम-संघर्षों के तुम्हारे खेतों को जोता है, तुम्हारे जंगलों को साफ किया है, तुम्हारे लिए रेल की पटरियाँ बिछाईं और नगर बनाये हैं और जिन्होंने पृथ्वी की गोद से खजाने निकाले हैं।" अपने प्रसिद्ध सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए उन्होंने कहा, "अपने-अपने सामाजिक रीति-रिवाजों में हम उँगलियों की भाँति एक दूसरे से पृथक् होते हुए भी सामूहिक प्रगति के कामों में हाथ के समान एक हैं। बुद्धिजीवी बनने और सार्वजनिक विकास करने में ही हमारा कल्याण है।"

इसके बाद मृत्यु-पर्यन्त बीस वर्षों तक नीग्रो नागरिकों से सम्बन्धित प्रत्येक समस्या में बुकर टी० वाशिंगटन सामाजिक नेताओं और राजनीतिज्ञों को समय-समय पर उचित सम्मति देते रहे। नीग्रो जाति और श्वेत जाति में सम्बन्ध स्थापित करने में उन्हें विशेष पारंगत समझा जाता था। इस विषय पर उन्होंने सम्पूर्ण देश में सैकड़ों भाषण दिये। उनको लेकर वर्षों तक लोगों

में वाद-विवाद चलता रहा। इस सम्बन्ध में दो प्रकार के मनुष्य थे। इस प्रकार की विचारधारा के मनुष्य उनके एटलान्टावाले भाषण और सामाजिक कार्य-क्रम के पूर्ण समर्थक थे, दूसरे वे लोग थे जो यह समझते थे कि बुकर टी० नीग्रो नागरिकों के लिए अमरीकी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समानाधिकारों का प्रबल समर्थन नहीं करते हैं। क्योंकि वह छोटे-छोटे अवसरों तक का लाभ उठाने में विश्वास करते थे। इस कारण कुछ लोग उन्हें अवसरवादी समझते थे। जब वह यह कहते कि कुछ भी न होने से आधी रोटी का होना अच्छा है तो लोग उन्हें समझौता कराने वाला कहते। जब उन्होंने रंग-भेद का तीव्र शब्दों में प्रतिवाद न करके परिस्थितियों का अधिक से अधिक लाभ उठाने के सिद्धान्त का समर्थन किया तो कुछ लोगों ने उन्हें "अन्किल टाम" कहना प्रारम्भ कर दिया। अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में वह अत्यन्त वाद-विवाद का विषय बने रहे।

परन्तु इस विवाद से बुकर टी० की ख्याति में कोई कमी नहीं आई। टस्कैगी में इनका स्कूल तब तक प्रगति करता रहा जब तक कि उसने स्वयं एक छोटे से नगर का रूप धारण नहीं कर लिया। इसके संस्थापक को अनेक उपाधियों द्वारा विभूषित किया गया। हार्वर्ड विश्वविद्यालय ने उन्हें एम० ए० की डिग्री दी तथा डार्टमाउथ कालिज ने उन्हें, डाक्टर ऑव लॉज की उपाधि से सम्मानित किया।

नीग्रो शिल्पकार, रिशमाण्ड बार्थ द्वारा निर्मित उनकी मूर्त्ति आज भी न्यूयार्क विश्वविद्यालय में स्थापित है। बुकर टी० वाशिंग्टन को टस्कैगी के पास दफनाया गया जहाँ उनके प्रिय गाँवों से आज भी लड़के-लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त करने आते हैं। उनके पत्र और भाषण कांग्रेस के पुस्तकालय में रखे गये हैं। उनकी जीवनगाथा—'अप फ्राम स्लेवरी' का अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है और वह विश्व के प्रमुख पुस्तकालयों में पाई जाती हैं।

डेनिअल हेल विलियम्स

जन्म १८५८—मृत्यु १९३१

जिस समय दक्षिण में बुकर टी० वाशिंगटन का जन्म हुआ था लगभग उन्हीं दिनों उत्तर में एक ऐसे अन्य नीग्रो बालक का जन्म हुआ जिसने आगे चलकर अत्यन्त ख्याति प्राप्ति की। डेनिअल हेल विलियम्स का जन्म होलीडेजवर्ग, पैनसिल्वानिया में, सन् १८५८ में हुआ। उनके माता-पिता स्वतंत्र नीग्रो नागरिक थे। उन्होंने अपना बाल्यकाल अपने एक भाई और पाँच बहिनों के साथ सुख से व्यतीत किया। उन्हें वह सब कष्ट और यातनाएँ नहीं सहनी पड़ीं जो दक्षिण की ओर केवल कुछ ही मील दूर डेलावेअर और मेरीलैण्ड में दास बालकों को दी जाती थीं। डेनिअल नियमित रूप से स्कूल जाते थे। वे एक कुशाग्र बुद्धि विद्यार्थी सिद्ध हुए। परन्तु पिता की मृत्यु के पश्चात् जब उनकी माँ अन्य बालकों के साथ जेन्सविले विस्कान्सिन चली गईं, तो अन्ना-पौलिस में डेनिअल अपने मित्रों के साथ अपने परिवार की याद में अकेलेपन का अनुभव करके बेचैन रहने लगे। एक दिन वह अपने सब कपड़े एक गठरी में बाँधकर रेलवे स्टेशन जा पहुँचे और वहाँ के टिकिट देने वाले कर्मचारी से कहा कि हम अपनी माँ से मिलने के लिए बहुत इच्छुक हैं परन्तु माँ के पास तक जाने के लिए पास में पैसे नहीं हैं। रेलवे कर्मचारी ने दया करके उनके लिए एक निःशुल्क पास बनवा दिया। इस प्रकार वह अकेले ही अपनी माँ से मिलने पश्चिम की ओर चल दिये।

उनकी माँ उन्हें देखकर इतनी प्रसन्न हुईं कि उन्होंने इस प्रकार से भाग आने के लिए उन्हें कुछ कहा तक नहीं। परन्तु वह अपनी सब पुस्तकें अन्नापोलिस में ही छोड़ आये थे। उनकी माँ के पास उनके लिए नई पुस्तकें खरीदने के

डेनिअल हेल विलियम्स

लिए पैसे नहीं थे। इस प्रकार से जेन्सविले में जब उस दस वर्ष के बालक ने प्रवेश किया तो उसके पास एक पुराने शब्दकोश के अतिरिक्त कुछ भी न था। इसी को लेकर डेनिअल प्रतिदिन स्कूल जाते और जब कभी कक्षा में कोई नया शब्द सुनते तो तुरन्त कोश खोलकर वह उसके नीचे एक रेखा खांच देते और उस शब्द को याद कर लेते। कोश में उन्हें ऐसे भी बहुत से शब्द मिले जिन्हें उन्होंने अभी सुना तक नहीं था। वह इन शब्दों को भी याद कर लेते, और इस प्रकार से शीघ्र ही उनका शब्द-ज्ञान बहुत बढ़ गया। उन्हें पढ़ाई से बहुत प्रेम था। इतिहास तथा विज्ञान में उन्हें प्रोत्साहित करके हेअर की क्लासिकल ऐकेडेमी में शिक्षा दिलाई। यहाँ की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् उच्च शिक्षा के लिए डेनिअल कालिज में जाना चाहते थे; परन्तु इसके लिए उनके पास धन नहीं था, इस कारण उन्होंने वकील बनने का विचार करके जेन्सविले में एक कानून के कार्यालय में प्रवेश किया। परन्तु उन्हें कानून के अन्तर्गत आने वाले लड़ाई-झगड़े बिल्कुल पसन्द नहीं थे। इस कारण शीघ्र ही उन्होंने इस व्यवसाय को अपनाने का विचार छोड़ दिया।

उन्हें भौतिक विज्ञानों में बहुत रुचि थी। इस कारण उन्होंने चिकित्सक बनने की योजना पर विचार करना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु इतने बड़े परिवार के होते हुए उनकी माँ उन्हें किसी प्रकार की आर्थिक सहायता नहीं दे सकती थीं। भाग्यवश उनके परिवार के एक मित्र मि० ऐन्डसन ने डेनिअल के प्रति अपनी रुचि दिखाई और प्रत्येक सम्भव उपाय द्वारा उसे सहायता देने का वचन दिया। शीघ्र ही डेनिअल को राज्य के सर्जन जनरल, डाक्टर हैनरी पामर, के कार्यालय में काम मिल गया। यहाँ पर वह काम करने के साथ-साथ पढ़ भी सकते थे। डा० पामर से उन्होंने चिकित्सा-शास्त्र का काफी ज्ञान प्राप्त किया। परिणामस्वरूप दो वर्ष बाद वह आवश्यक परीक्षाएँ उत्तीर्ण करके इवान्सटन इलिनोयस के मेडीकल स्कूल में प्रवेश पाने में सफल हो गये। इस

स्कूल की शिक्षा पूर्ण करके उन्होंने एम० डी० की उपाधि प्राप्त की। गर्मियों में वह मिशिगन झील पर आई हुई नौकाओं में आर्केस्ट्रा बजाने का काम करके अपनी फीस देने योग्य रुपया इकट्ठा करते थे। डेनिअल विलियम्स एक कुशाग्र बुद्धि के विद्यार्थी निकले, इस कारण, सन् १८८३ में जब उन्होंने अपनी पढ़ाई समाप्त की तो उनसे उसी स्कूल में शरीर-रचना-शास्त्र की शिक्षा देने का काम करने के लिए कहा गया। उन दिनों एक बड़े विश्वविद्यालय में एक नीग्रो शिक्षक का होना अत्यधिक असाधारण बात थी। इस कारण उनकी इस नियुक्ति से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह वास्तव में कितने अधिक योग्य थे।

युवक डाक्टर विलियम्स ने एक सर्जन के रूप में सबसे पहले शिकागो की साउथ साइड डिस्पेन्सरी में काम करना प्रारम्भ किया। शीघ्र ही उनकी नियुक्ति प्रोटेस्टेण्ट धर्म के अनाथालय में हो गई। थोड़े ही वर्षों में उनकी सेवाएँ इतनी प्रसिद्ध हो गईं कि उन्हें इलिनोयस स्टेट बोर्ड ऑव हैल्थ का सदस्य बनने के लिए निमंत्रित किया गया। उस समय शिकागो में ऐसे अनेक नीग्रो युवक थे जो चिकित्सक बनना चाहते थे। डेनिअल विलियम्स ने यथा-सम्भव उनकी सहायता की। परन्तु शिकागो का कोई भी चिकित्सालय उन्हें स्वीकार करने के लिए प्रस्तुत नहीं था। इसके अतिरिक्त नीग्रो स्त्रियों को नर्स बनने की शिक्षा देने वाले शिक्षण केन्द्र भी कहीं नहीं थे। डा० विलियम्स इस स्थिति को ठीक करना चाहते थे, इस कारण उन्होंने अन्य चिकित्सकों और नगर एवं राज्य के पदाधिकारियों से इस सम्बन्ध में आवश्यक परामर्श किया। उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप सन् १८९१ में शिकागो में प्रोविडेण्ट अस्पताल की स्थापना हुई। इसके साथ साथ नीग्रो नर्सों के लिए संयुक्तराज्य अमरीका में पहला शिक्षण केन्द्र भी खोला गया।

प्रोविडेण्ट अस्पताल में डा० विलियम्स ने एक दिन एक रोगी को नश्तर

लगाया जिसकी संसार के सभी समाचार-पत्रों एवं मेडिकल पत्रिकाओं ने प्रशंसा की। इतिहास में पहली बार इस प्रकार का "आपरेशन" सफलतापूर्वक किया था। एक दिन उनके चिकित्सालय में एक ऐसा व्यक्ति लाया गया जिसके सीने में छूरे से वार किया गया था और उसके नीचे के घाव से निरन्तर रक्त बह रहा था। डा० विलियम्स को बुलाया गया। उन्होंने उस व्यक्ति की मरहम-पट्टी की। परंतु अगले दिन जब वह उस व्यक्ति को देखने गये तो उन्होंने उसकी स्थिति को पहले से भी अधिक खराब पाया। उसके सीने में अन्दर-ही-अन्दर लगातार रक्त बहता जा रहा था। इसके कारण का पता लगाने के लिये डा० विलियम्स ने उसकी पट्टी खोली और उन्होंने घाव को और बढ़ा दिया। उन्होंने देखा कि छूरा उस व्यक्ति के हृदय तक घुस गया था और उसने उसके हृदय में एक बड़ा-सा छेद कर दिया था। यह देखकर किसी को भी यह आशा न रही कि वह व्यक्ति बच सकेगा, परन्तु डा० विलियम्स ने उसे बचाने का प्रयत्न करने का निश्चय किया। उन्होंने हृदय के चारों ओर की नसों को काट डाला और नसों को अन्य चिकित्सकों को चिमटियों द्वारा पकड़े रहने का आदेश देकर डा० विलियम्स ने उस व्यक्ति के हृदय के घाव को सावधानी के साथ सी दिया। इसके बाद उन्होंने उन नसों को यथा-स्थान जोड़ दिया। यह सब करने में हृदय बराबर धड़कता रहा। इस कार्य के लिए बहुत योग्यता, साहस और कौशल की आवश्यकता थी। वह व्यक्ति बच गया। यह आपरेशन चिकित्सा-शास्त्र के इतिहास में एक प्रसिद्ध आपरेशन हो गया।

संयुक्तराज्य अमरीका के राष्ट्रपति, ग्रोवर क्लीवलैण्ड ने नीग्रो चिकित्सक, डा० विलियम्स को वाशिंगटन आकर उनसे भेंट करने का निमंत्रण दिया। उन्होंने उनसे कोलम्बिया जिले के नये नीग्रो चिकित्सालय का प्रधान चिकित्सक का पद ग्रहण करने के लिए कहा। वाशिंगटन में भी डा० विलियम्स ने डाक्टर और नर्स बनने के इच्छुक नीग्रो लड़के-लड़कियों के लिए एक शिक्षण

केन्द्र की स्थापना का अनुभव किया । इसलिए उन्होंने एक शिक्षण केन्द्र की स्थापना वहाँ की । डा० विलियम्स पाँच वर्ष तक उस चिकित्सालय में रहे । इस बीच में उन्होंने काम सीखने वाले नीग्रो डाक्टरों का अपने चिकित्सालय में हार्दिक स्वागत किया । वह एक माननीय चिकित्सक ही नहीं थे, वरन् उनमें संघटन और शासन करने की भी अपूर्व योग्यता थी । चिकित्सालयों का प्रधान चिकित्सक बनने या शिक्षा देने का कार्य करने के लिए अनेक लोगों ने उनसे प्रार्थना की परन्तु वह अपनी निजी प्रैक्टिस करने शिकागो में ही वापिस आ गये । वर्ष में एकबार नेशविले के मेहारी मेडिकल कालेज में वह आपरेशनों का प्रदर्शन करते थे । विभिन्न राज्यों से अनेक युवक डाक्टर उनके इस प्रदर्शन को देखने आते थे ।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में डा० विलियम्स इलिनोयस के कुक काउन्टी अस्पताल में आपरेशन करने के लिए नियुक्त किये गये । बाद में वह शिकागो के प्रसिद्ध सेन्ट ल्यूक के अस्पताल में सहायक सर्जन बन गये । १९१३ में उन्हें अमरीकन कालिज ऑफ सर्जन्स का फेलो बनाकर सम्मानित किया गया । उन्होंने अनेक वर्षों तक देश के प्रमुख चिकित्सा-संघों और सभाओं में भाग लिया । मृत्यु से बहुत पहले ही उनकी गणना अमरीका के सर्वप्रमुख चिकित्सकों में की जाने लगी थी ।

हैनरी ओसावा टैनर

जन्म १८५९—मृत्यु १९३७

हैनरी ओसावा टैनर का स्मरण एक नाटकीय जीवन-चरित्र के कारण नहीं बल्कि उनके बनाये हुए उन सुन्दर चित्रों के कारण किया जाता है जो यूरोप और अमरीका के संग्रहालयों में सुरक्षित रखे हुए हैं। उनकी इच्छा एक कलाकार बनने की थी और वह एक कलाकार बनकर ही रहे। उनके पिता अफ्रीकी मैथोडिस्ट ऐपिस्कोपल चर्च के पादरी थे। इस कारण, यद्यपि उनका परिवार किसी भी अर्थ में धनी नहीं था। फिर भी हैनरी ने अपना बाल्य-काल भूख और अज्ञता के अंधकार में नहीं व्यतीत किया। उनका जन्म पिट्सबर्ग में हुआ था, परन्तु बचपन में ही वह फिलाडेल्फिया चले गये थे, इस कारण वहीं पर रहकर वह युवा हुए। बाल्यावस्था में फेअरमोन्ट पार्क में घूमते हुए एक बार उन्होंने एक चित्रकार को पार्क का चित्र अंकित करते देखा। इसी समय से उन्होंने चित्रकार बनने का निश्चय कर लिया।

घर पहुँच कर हैनरी ने तुरन्त भूगोल की एक पुरानी पुस्तक पर अपनी स्मरण शक्ति से बिल्कुल वैसा ही चित्र बनाने का प्रयत्न किया जैसा उन्होंने उस दिन पार्क में चित्रकार को बनाते हुए देखा था। उन्होंने फिलाडेल्फिया के जिन्दा अजायबघर में बैठकर, वहाँ के जीव-जन्तुओं को देख-कर, मिट्टी के नमूने बनाने भी प्रारम्भ कर दिये। बाद में अपनी किशोरावस्था में समुद्र के कुछ चित्रों से प्रभावित होकर वह स्वयं समुद्र का चित्र अंकित करने के विचार से एटलांटिक नगर गये। उनके पिता, जिनकी दृष्टि में कला केवल आवारा लोगों के लिए थी, हैनरी के इन कार्यों को बिल्कुल व्यर्थ और अव्यावहारिक समझते थे। फिर भी युवक टैनर ने ललित कलाओं की शिक्षा

हैनरी ओसावा टैनर

देने वाली पैनसिलवानिया ऐकेडेमी में प्रवेश किया और कुछ ही समय बाद वह अपने एक चित्र को चालीस डालर में बेचने में समर्थ हुए। अपने चित्र को इतने अधिक मूल्य में बिकते देखकर उन्हें अत्यन्त आश्चर्य हुआ, क्योंकि अब तक वह अपने चित्र के लिए पाँच, दस या अधिक से अधिक पन्द्रह डालर पा जाने पर अपने को अत्यन्त भाग्यशाली समझते थे। उनके प्रारम्भिक चित्रों में भी कोई न कोई विशेषता अवश्य थी, क्योंकि उनका एक चित्र, जिसे उन्होंने पन्द्रह डालर में बेचा था, बाद में एक सार्वजनिक नीलाम में २५० डालर में बिका।

ऐकेडेमी में अपनी पढ़ाई समाप्त करके युवक टैनर ऐटलान्टा के क्लार्क विश्वविद्यालय में चित्रकारी सिखाने के लिए शिक्षक नियुक्त हो गये। वहाँ पर उन्होंने अपनी आय बढ़ाने के लिए फोटोग्राफी का भी काम करना प्रारम्भ कर दिया। बचे हुए समय में वह चित्रकारी भी करते रहते थे। इस बीच उन्होंने एक तैल चित्र अस्सी डालर में बेचा। हैनरी के पिता के साथी और फ्रेडरिक डगलस के मित्र पादरी डेनिअल ए० पेयन ने हैनरी के चित्रों में विशेष रुचि ली और उन्होंने उनको बहुत सहायता दी। टैनर ने पादरी की एक मूर्त्ति बनाई। उन्होंने इसके बदले में युवक कलाकार के तीन सुन्दर चित्र विल्बरफोर्स विश्वविद्यालय को भेंट किये। सन् १८९१ तक टैनर के पास इतने चित्र एकत्र हो गये थे कि उनकी एक प्रदर्शिनी तक की जा सकती थी। इस कारण सिनसिनेटी में उन्होंने अपने चित्रों की एक प्रदर्शिनी आयोजित की, परन्तु वहाँ पर उनका एक भी चित्र नहीं बिका। बाद में एक दयालु पादरी ने, यह देखकर कि टैनर पढ़ने के लिए विदेश जाना चाहते हैं, उन्हें तीन सौ डालर देकर रोम में पढ़ने के लिए भेज दिया।

इटली जाते समय टैनर मार्ग में ही पेरिस में रुक गये। विश्व का कला-केन्द्र पेरिस सभी कलाकारों के लिए आकर्षण का केन्द्र है, इस कारण

टैनर वहाँ कई वर्ष तक रुके रहे। वहाँ उन्होंने पहले ऐकेडेमी जूलिअन में कला का अध्ययन किया। उसके बाद उन्होंने युग के प्रसिद्ध फ्रांसीसी कलाकारों के साथ रहकर कला का अभ्यास किया। कांन्सटेण्ट, जिरोमी, जीन पॉल लौरेन्स, तथा थॉमस ईकिन्स ने उन्हें विशेष रूप से प्रभावित किया। पेरिस के सौन्दर्य-मय और कलात्मक वातावरण से प्रेरित होकर इस युवक कलाकार ने अनेक चित्र अङ्कित किये। कुछ ही वर्षों में वह एक श्रेष्ठ कलाकार हो गये। उनके एक तैल चित्र की, फ्रांस की चित्र प्रदर्शिनी में, अत्यन्त सराहना की गई। सम्भवतः अपने पारिवारिक संस्कारों के कारण और बाल्यकाल में पढ़ी हुई बाइबिल की कहानियों से प्रेरित होकर टैनर ने धार्मिक विषयों का ही अधिक चित्रण किया। वह बहुत दिनों तक पैलेस्टाइन में घूमते रहे। उन्होंने वहाँ के निवासियों, स्मारकों तथा अन्य धार्मिक स्थानों का अध्ययन किया और बहुत दिनों तक केवल धार्मिक विषयों पर ही चित्र बनाते रहे। संसार की प्रसिद्ध लक्सेम्बर्ग की चित्रशाला में टाँगने के लिए सन् १८९७ में फ्रांस की सरकार ने उनके एक प्रसिद्ध चित्र को खरीदा। अनेक व्यक्ति उसे देखने गये, कला-समालोचकों ने उसकी प्रशंसा की। इसी समय से टैनर की ख्याति एक कुशल कलाकार के रूप में फैलने लगी।

सन् १९०० की पेरिस प्रदर्शिनो में उनके एक चित्र को सम्मान पदक मिला। उसी वर्ष फिलाडेल्फिया में उन्हें वाल्टर लिप्पिन्कौट पुरस्कार दिया गया। इसके कुछ ही दिन बाद टैनर अपने कुछ चित्र लेकर यूरोप से संयुक्तराज्य अमरीका पहुँचे और उन्होंने उस नगर में एक चित्र-प्रदर्शिनी का आयोजन किया जहाँ वह पलकर बड़े हुये थे। परन्तु वह अधिक दिनों तक अपनी जन्मभूमि में नहीं रहे। उन्होंने अपने मित्रों का बताया कि नीग्रो होने के कारण यूरोप में उन्हें अधिक शांति मिलती है, क्योंकि वहाँ बिना किसी रङ्ग-भेद की कठिनाई के स्वतन्त्रतापूर्वक भ्रमण कर सकते थे। जब कभी उन्हें

किसी गाँव के प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण करना होता तो यूरोप में उन्हें नीग्रो होने के कारण किसी सराय में खाने और सोने की कोई कठिनाई नहीं होती थी। इस कारण अभिनेता इरा ऐल्ड्रिज की भाँति उन्होंने भी अपना जीवन यूरोप में ही व्यतीत किया। मृत्यु-पर्यन्त वह यूरोप में ही रहे। उनकी मृत्यु पेरिस में हुई। उनकी सुन्दर चित्रशाला को देखने अनेक व्यक्ति आते थे। उनके समय के अनेक महान् कलाकार उनके मित्र थे। उनके जीवन-काल में ही उन्हें अपने चित्रों से पर्याप्त आय होने लगी थी।

टैनर की ख्याति मुख्य रूप से उनके धार्मिक चित्रों के कारण है। टैनर द्वारा चित्रित जीवित प्राणियों जैसे दिखाई देनेवाले बाइबिल की कहानियों के पात्र, ईश्वर की उपस्थिति का आभास कराने के लिए प्रकाश का प्रयोग, रहस्यवाद और यथार्थवाद का समन्वय, बरबस ही देखनेवालों का मन आकर्षित कर लेते हैं। उनके चित्र इतने पूर्ण और स्वाभाविक हैं कि एक ओर जब कि जन-साधारण को उनके समझने में कोई कठिनाई नहीं होती तो दूसरी ओर अन्य कलाकार भी कला की दृष्टि से उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहते। धार्मिक विषयों से सम्बन्धित उनके चार-पाँच चित्र ऐसे हैं जिन्हें कला-प्रेमी बहुत पसन्द करते हैं। फिलाडेलफिया के जिस फेअरमोंट पार्क में सबसे पहले टैनर के मन में कलाकार बनने की इच्छा जागृत हुई थी वहाँ पर निर्मित स्मारक भवन में आज भी उनका "ऐनन्सियेशन" शीर्षक सुन्दर चित्र टँगा हुआ है।

जॉर्ज वाशिंग्टन कार्वर

जन्म लगभग १८६४—मृत्यु १९४३

बुकर टी० वाशिंग्टन ने जो महत्त्वपूर्ण कार्य किये उनमें से एक जॉर्ज वाशिंग्टन कार्वर को टस्केजी में एक शिक्षक के रूप में नियुक्त करना भी था। वाशिंग्टन की भाँति कार्वर का जन्म भी दासता में हुआ था। डायमंड ग्रोव, मिसौरी, के पास एक खेत में उनके जन्म होने के कुछ ही दिनों बाद उनके पिता के ऊपर गाड़ी दौड़ गई जिससे उनकी मृत्यु हो गई। जॉर्ज पूरे एक वर्ष के भी नहीं हुए थे जब एक रात को डाकुओं के एक दल ने उनकी माँ के कमरे को चारों ओर से घेर लिया। ये लोग दासों को चुरा कर ले जाने और उन्हें दूसरे लोगों को बेच देने के लिए कुख्यात थे। जॉर्ज का बड़ा भाई किसी प्रकार बचकर भाग निकला, परन्तु जॉर्ज और उनकी माँ पकड़ लिये गये। उन्हें घोड़े की पीठ पर बाँधकर ये लोग ओजर्क पहाड़ों पर से होते हुए अर्केन्सास की ओर चल दिये। इसके बाद कोई नहीं जान सका कि उनकी माँ का क्या हुआ। उनके इस प्रकार खो जाने पर उनके स्वामी मोजेज कार्वर ने एक आदमी को उन्हें खोजने के लिए भेजा। उनके स्वामी के पास रुपया नहीं था इस कारण उन्होंने उस व्यक्ति से कहा कि खोई हुई स्त्री को खोज लाने पर उसे थोड़ी भूमि और लड़के को खोज लाने पर एक घोड़ा दिया जायगा। डाकुओं के साथ जाते समय रास्ते में बालक जॉर्ज को कुक्कुर खाँसी हो गई इस कारण निर्दय डाकुओं ने उसे वहीं रास्ते में एक स्थान पर छोड़ दिया और उसकी माँ को लेकर आगे बढ़ गये, जिसका इसके बाद कभी कोई पता नहीं लगा। उनकी खोज करने के लिए भेजे गये व्यक्ति ने इस रोगी बालक को सड़क पर पड़ा हुआ पाया और वह उसे उसके स्वामी के पास ले आया जिसने उस व्यक्ति को अपने वायदे के अनुसार एक घोड़ा दे दिया।

कार्वर परिवार के लोगों ने बालक जॉर्ज का पालन-पोषण किया और उसे अपने नाम के साथ कार्वर नाम जोड़ने की भी अनुमति दे दी। वे लोग दयालु थे। उनके पास न तो कोई और बालक ही था और न अन्य दास उनके पास थे, इस कारण उन्होंने जॉर्ज और उसके भाई का पालन-पोषण, अपने पुत्रों की भाँति, किया। राज्यों के बीच युद्ध समाप्त हो जाने के पश्चात् यद्यपि दास-प्रथा का अंत हो गया था परन्तु वे दोनों भाई इसके बाद भी वहीं रुके रहे। बाल्यकाल में, जिस समय जॉर्ज का भाई काम करने चला जाता था, जॉर्ज को निकटवर्ती खेतों और जंगलों में घूमने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता था। बालक जॉर्ज सदैव अपने साथ कोई न कोई विचित्र सी जड़ या पौधा लेकर श्रीमती कार्वर के पास पहुँचते और उनसे उसके बारे में पूछकर जानकारी प्राप्त करते रहते। फूलों की पंखुड़ियाँ भिन्न-भिन्न रंगों की क्यों होती हैं, पत्तियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की क्यों होती हैं, मधुमक्खियों को एक विशेष प्रकार की वनस्पति क्यों पसन्द है, या ओस की बूँदें क्यों चमकती हैं इत्यादि बातों के विषय में उनकी जिज्ञासा साधारण बालकों की तुलना में बहुत अधिक थी। कार्वर परिवार के व्यक्ति विशेष शिक्षित नहीं थे, परन्तु अपनी बुद्धि के अनुसार जहाँ तक उनसे बन पड़ता, वे उनकी शंकाओं का समाधान करते रहते थे। बालक की कुशाग्र बुद्धि को देखकर उन्होंने जॉर्ज के लिए एक प्रारम्भिक पुस्तक भी खरीद दी जिसको लेकर वह और उनके भाई रात को अँगीठी के पास बैठकर पढ़ने का प्रयत्न करते। परन्तु दिन का समय वह अधिकांश घर के बाहर ही व्यतीत करते और यह पता लगाने का प्रयत्न करते रहते कि पेड़ पौधों के पैदा होने का क्या कारण है, जैतून के बीज से पेड़ और सूरजमुखी के बीज से सूरजमुखी का फूल कैसे पैदा हो जाता है। उन्होंने छिपे-छिपे अपने आप एक ऐसा बाग भी बना लिया जहाँ पर वह मुर्झाये हुए पौधों को फिर से हरा करने का प्रयत्न करते रहते। उन्हें अपने हाथों में मिट्टी उठाकर उसका

जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर

स्पर्श करने में बहुत आनन्द आता था। वर्षों बाद एक बार उन्होंने कहा, "जो लोग बच्चों को धूल-मिट्टी से अलग रखते हैं वे वास्तव में उनकी हत्या करते हैं। धूल में ही जीवन है।"

जॉर्ज के भाई ने जिस समय खेतों को छोड़कर अन्यत्र काम करने जाने का विचार किया उस समय जॉर्ज की आयु दस वर्ष की थी। तब जॉर्ज काम से बचे हुए समय में बहुत एकाकीपन का अनुभव करने लगे। श्रीमती कार्वर ने जॉर्ज को भोजन पकाना, सफाई करना और कपड़े सीना भी सिखाया। शीत ऋतु में वह अँगीठी जलाने का काम करने लगे। उन्होंने राख को इकट्ठा करके उससे साबुन बनाना सीखा। वसन्त ऋतु आने पर उन्होंने औषधि और मसालों में काम आनेवाली जड़ी-बूटियों और पेड़ों की छालों के लिए जंगल छानना प्रारंभ कर दिया। वह सन और ऊन कातने में सहायता पहुँचाते, पशुओं की खाल को जूते बनाने के लिए साफ करते, तथा रंग बनाने के लिए पेड़ों की छाल को उबालते। इस समय तक उन्होंने अपनी पुस्तक का लगभग प्रत्येक शब्द याद कर लिया था। इस बीच उन्होंने आठ-दस मील दूर निओशा में स्थित एक नीग्रो स्कूल के बारे में भी सुना। उन्होंने कार्वर पति-पत्नी से उस स्कूल में जाने की आज्ञा माँगी जो तुरन्त ही मिल गई। पैदल चलकर वह स्कूल में पहुँचा। मेरिआ वाट्किन्स नाम की एक हृष्ट-पुष्ट दयालु अश्वेत महिला ने जॉर्ज को आश्रय दिया और पढ़ाई का खर्चा निकालने के लिए उन्हें काम भी दिया। उक्त महिला ने जॉर्ज को माँ जैसे प्यार से रखा। उसके साथ बिताये हुए उनके दिन बाल्य जीवन के सबसे अधिक सुख के दिन थे। सबसे अधिक प्रसन्नता उन्हें इस बात की थी कि अब उन्हें सत्तर अन्य विद्यार्थियों के साथ कक्षा में लकड़ी की तिपाई पर बैठकर पढ़ने का अवसर मिल गया था।

मेरिया वाट्किन्स कपड़े धोने का काम करती थीं। उन्होंने बालक जॉर्ज को भी कपड़े धोना और उन पर लोहा करना सिखाया। यह काम सीखने

के लिए बाद में उन्होंने मेरिआ वाट्किन्स का बहुत आभार माना। मेरिआ वाट्किन्स ने उन्हें एक बाइबिल भी दी जिसे उन्होंने सत्तर वर्षों तक जहाँ कहीं भी वह रहे, सदैव अपने पास रखा। निओशा में कोई हाईस्कूल नहीं था इस कारण तेरह वर्ष की आयु होने पर जॉर्ज एक बन्द गाड़ी में बैठकर कैन्सास चले आये। वहाँ, फोर्ट स्कार्ट में, उन्होंने हाईस्कूल में प्रवेश किया। पढ़ाई के साथ-साथ वह नगर के सबसे धनी परिवार में नौकरी भी करते रहे। एक शाम को उनके स्वामी ने उन्हें नगर में दूर किसी काम से भेजा। मार्ग में उन्होंने एक स्थान पर श्वेत व्यक्तियों की एक बड़ी भीड़ देखी। जॉर्ज ने वहाँ उस भीड़ को जेल में घुसकर बलपूर्वक एक असहाय नीग्रो को सड़क पर घसीट कर लाते हुए देखा। जॉर्ज के देखते-देखते उन व्यक्तियों ने मार-मार कर उस नीग्रो की हत्या कर दी। इसी बीच अन्य व्यक्तियों ने एक स्थान पर एक बड़ी आग जला रखी थी। जब अग्नि काफी तेज हो गई तो उन्होंने रक्त में सने हुए उस नीग्रों को आग में डाल दिया। यह सब देखकर जॉर्ज के हृदय की गति लगभग बिलकुल बन्द सी हो गई और उनका जी घबराने लगा। उसी रात को जॉर्ज ने अपना सामान बाँधकर उस नगर को छोड़ दिया।

इसके बाद लगभग दस वर्षों तक वह कभी माली का, कभी रसोइए का, कभी लकड़ी काटने का और कभी गेहूँ की फसल काटने का काम करते हुए पश्चिमी प्रदेश में इधर-उधर भटकते रहे। सोने के लिए कभी उन्हें घास का ढेर मिल जाता तो कभी पशुओं का बाड़ा। परन्तु जहाँ तक उनका वश चलता, वह पेड़ों और फूलों के बीच में ही काम करना अधिक पसन्द करते। उनके पास अपना ऐसा कोई बाग नहीं था जहाँ वह फूलों को उगा सकते। इस कारण उन्होंने दूसरे व्यक्तियों के बागों में फूल-पौधों को देखकर उनके चित्र बनाने प्रारम्भ कर दिये। कैन्सास के मिनीपोलिस नगर में, जहाँ वह अपनी हाईस्कूल की शिक्षा समाप्त करने के लिए ठहर गये थे, एक बार एक महिला

ने अपनी धोबिन की घर की दीवारों पर उनके बनाये हुए कुछ चित्र देखे। उन्होंने उन चित्रों की बहुत प्रशंसा की और जॉर्ज को इसी प्रकार से चित्र बनाते रहने के लिए प्रोत्साहित किया। अब तक वह युवा हो चुके थे। वह लम्बे, साँवले और दुबले शरीर के थे परन्तु कठिन परिश्रम और कम भोजन के कारण वह थोड़े से झुके हुए थे। फूलों के प्रति अभी भी अत्यन्त जिज्ञासु होने के कारण ही ज़ॉर्ज उनके चित्र बनाते थे। उनके मन में वनस्पति शास्त्र का अध्ययन करने की तीव्र इच्छा थी।

एक दिन कार्वर ने एक समाचारपत्र में ओलेन्थ, कैन्सास स्थित एक धार्मिक कालिज का विज्ञापन देखा। यह कालेज हाईलैण्ड यूनिवर्सिटी के नाम से विख्यात था। उन्होंने अपनी पढ़ाई का विवरण देते हुए एक आवेदन-पत्र भर कर भेज दिया। वहाँ से जो उत्तर आया उसमें उनकी प्रगति की काफी प्रशंसा की गई और उन्हें लिखा गया कि वह उस कालिज में पढ़ने के लिए आ सकते हैं। परन्तु वहाँ पहुँचने के पश्चात् जब वह वहाँ के अधिकारी के कार्यालय में उपस्थित हुए तो उसने आश्चर्य से उनकी ओर देखकर कहा, "अरे, तुम नीग्रो हो! नीग्रो विद्यार्थी हमारे कालिज में नहीं पढ़ते हैं।" और उन्होंने कार्वर को उस कालिज में पढ़ने की आज्ञा नहीं दी। इस प्रकार निराश होकर वह पश्चिम के मैदानों में घूमने लगे। वहाँ पर उन्हें सरकार द्वारा मुक्त की गई थोड़ी सी भूमि मिल गई। परन्तु उस भूमि पर अपना अधिकार चिर-स्थायी रखने के लिए कार्वर के पास न तो औजार ही थे और न कर चुकाने के लिए रुपया, इस कारण उन्हें इस भूमि को छोड़ना पड़ा। जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर इस समय तक यद्यपि पच्चीस वर्ष के हो चुके थे परन्तु अपनी शिक्षा पूर्ण करने की अब भी उनके मन में इच्छा थी। अंत में उन्हें आइओवा में विन्टर-सेट के निकट सिमसन कालिज में पढ़ाई के लिए स्थान मिल गया। जब वह

वहाँ पहुँचे तो उनके एक शिक्षक के शब्दों में उनके पास केवल, निर्धनता से भरा हुआ एक थैला और ज्ञान-प्राप्ति की उत्कट इच्छा थी।

प्रवेश शुल्क देने के बाद युवक कार्वर के पास केवल दस सेन्ट शेष बचे। इससे उन्होंने रोटी और मांस खरीदा और सात दिन इसी से अपना काम चलाया। किसी प्रकार से प्रयत्न करके उन्होंने कालिज के भण्डार से टीन के दो बर्त्तन, कपड़े धोने का एक तख्ता, थोड़ा सा नीला रंग और थोड़ा सा साबुन उधार ले लिया। ये सब वस्तुएँ एकत्र करने के पश्चात् उन्होंने अन्य विद्यार्थियों में इस बात की घोषणा कर दी कि वह एक धोबी की दूकान खोल रहे हैं। इस प्रकार से उन्होंने मेरिआ वाट्किन्स से सीखे हुए काम के सहारे कपड़े धोकर कालिज में अपना प्रथम वर्ष पूरा किया। उनका स्वर अत्यन्त मधुर था और वह पियानो भी बजाना जानते थे। इस कारण उन्होंने अपनी पढ़ाई के साथ-साथ संगीत का भी अध्ययन किया। चित्रकला से प्रेम होने के कारण उन्होंने उसकी शिक्षा ग्रहण की। आश्चर्य की बात तो यह है कि वह अपने चित्रकला प्रेम के कारण ही और आगे बढ़ने में समर्थ हो सके। उन्हें चित्रकला पढ़ानेवाली अध्यापिका ने वनस्पति विज्ञान में उनकी रुचि देखकर अपने भाई को उनके बारे में एक पत्र लिखा। अध्यापिका के भाई ऐम्सस्थित आओवा-स्टेट कालिज में बागवानी विभाग में अध्यापक थे। इस कालिज में कृषिशास्त्र-विभाग भी था। इस प्रकार उन अध्यापक की सहायता से कार्वर को वहाँ ले लिया गया। उस कालिज से शिक्षा प्राप्त करने वाले वह पहले नीग्रो व्यक्ति थे।

परन्तु आइओवा राज्य में, जहाँ नीग्रो विद्यार्थी बहुत कम संख्या में थे, जीवन सब प्रकार से सुखमय नहीं था। कार्वर को छात्रावास में रहने के लिए कमरा नहीं दिया गया। और जब भोजनालय में वह भोजन करने के लिए गये तो उन्हें वहाँ से निकाल दिया गया। परन्तु उन्होंने हतोत्साह न होने

का निश्चय कर लिया था इस कारण उन्होंने भोजनालय में भोजन वितरित करने का काम अपना लिया। इस प्रकार से उन्हें भोजन निःशुल्क मिल जाता था। दयालु शिक्षक और विद्यार्थी उन्हें अपने पुराने वस्त्र और रुपये इत्यादि सहायता के रूप में, देने के लिए प्रस्तुत थे। परन्तु कार्वर ने कभी किसी से दान नहीं लिया। काम करने के बाद ही वह कोई वस्तु लेते थे। उन्हें पेड़-पौधों और चित्रकला दोनों ही से प्रेम था। आइओवा में आयोजित प्रदर्शनी में उन्हें अपने सुन्दर चित्रों के लिए कई पुरस्कार मिले। उनके चार चित्र शिकागो की प्रसिद्ध प्रदर्शनी में भेजे गये। उन्होंने परीक्षा के लिए जो निबन्ध लिखा उसका विषय था……"मनुष्य द्वारा पौधों का परिवर्तित स्वरूप।" पढ़ाई में उनका स्थान सर्वोच्च था। और सन् १८९४ में अपनी प्रथम परीक्षा समाप्त होने तक वे अपने सहपाठियों के बीच अत्यन्त प्रसिद्ध हो चुके थे। उपाधि ग्रहण करने के पश्चात् उन्होंने अपने सहपाठियों के साथ उसी भोजनालय में भोजन किया जिससे उन्हें पहली बार अपमानित करके निकाला गया था।

एम० ए० तक की शिक्षा पूर्ण करने के उद्देश्य से जार्ज वाशिंगटन कार्वर दो वर्ष तक ऐम्स में और रहे। उन्हें वनस्पति शास्त्र विभाग में सहायक शिक्षक नियुक्त कर दिया गया और कालिज की वनस्पतिशाला उनके अधिकार में दे दी गई। इस बीच दक्षिण के अनेक नीग्रो विद्यालयों ने उन्हें अपने यहाँ शिक्षक का कार्य करने के लिए निमन्त्रित किया। इस प्रकार के अनेक निमंत्रणों में से एक का उत्तर देते हुए कार्वर के शिक्षक ने लिखा, "मैं श्री कार्वर को यहाँ से नहीं जाने देना चाहता……पौधों का रूप बदलने में वह निश्चय ही सबसे अधिक योग्य हैं…प्रत्येक प्रकार के पौधों से, चाहे वे बाग में हों या खेतों में, उन्हें विशेष प्रेम है। इस क्षेत्र में उनके समान विद्वान् अन्य कोई नहीं है।" सन् १८९६ में उन्होंने एम० ए० की शिक्षा समाप्त की। इसके कुछ ही दिन बाद बुकर टी० वाशिंगटन आइओवा स्टेट कालिज में पधारे और उन्होंने

जॉर्ज वाशिंग्टन कार्वर से भेंट की। उन्होंने उन्हें टस्कैगी में कृषि विज्ञान का प्रधानाध्यापक, कृषि-अन्वेषण का संचालक तथा प्राकृतिक विज्ञानों का शिक्षक बनने के लिए आमन्त्रित किया। काम यद्यपि बहुत था परन्तु कार्वर ने वहाँ जाना स्वीकार कर लिया। अपना शेष जीवन उन्होंने वहीं व्यतीत किया। टस्कैगी में जाकर वह बुकर टी० वाशिंग्टन की भाँति ही प्रसिद्ध हो गये।

दोनों व्यक्ति एक दूसरे से बिलकुल भिन्न होते हुए भी बहुत सी बातों में समान थे। दोनों ने अत्यन्त कठिन जीवन व्यतीत करके यह स्थिति प्राप्त की थी। दोनों को मिट्टी और सभी उगनेवाली वस्तुओं से प्रगाढ़ प्रेम था। दोनों ही अपना सीखा हुआ सब कुछ दूसरों को सिखा देना चाहते थे। परन्तु जार्ज वाशिंग्टन कार्वर शान्त और लज्जाशील स्वभाव के थे। बुकर टी० वाशिंग्टन एक सार्वजनिक प्राणी थे। उनके भाषणों में श्रोताओं को प्रभावित करने की शक्ति थी और उन्हें बहुत से व्यक्तियों के साथ काम करने का अभ्यास था। वह एक सफल संघटन-कर्ता थे। कार्वर एकान्त में कार्य करने के बाद अपने कार्य के फल को संसार के सम्मुख रखना पसन्द करते थे। टस्कैगी के प्रधानाध्यापक, बुकर टी० वाशिंग्टन, ने इस बात का अनुभव किया और कार्वर के लिए एक पृथक् प्रयागशाला एवं शयनागार की व्यवस्था कर दी। इस प्रकार से कार्वर ने एक कमरे में प्रयोग-कार्य करते हुए और दूसरे कमरे में स्वयं रहते हुए अपना समस्त जीवन टस्कैगी में व्यतीत कर दिया। मेरिआ वाट्किंस द्वारा दी हुई बाइबिल और अपने विषय से सम्बन्धित अन्य पुस्तकें भी वह अपने साथ टस्कैगी लेते आये थे। परन्तु प्रयोगशाला में कार्य करते समय कोई भी पुस्तक वह अपने साथ नहीं रखते थे। प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व अपनी प्रयोगशाला के पीछे पेड़ों के बीच में एक लट्ठे पर वह. बैठ जाते और ईश्वराराधना करते। इसके बाद वह विद्यार्थियों

को पढ़ाने जाने का समय आने तक अकेले अपनी प्रयोगशाला में काम करते रहते। टस्कैगी-स्थित कार्वर की उस छोटी सी प्रयोगशाला में कृषि रसायन-शास्त्र के उन सिद्धान्तों की रचना हुई जिनसे केवल सम्पूर्ण दक्षिण प्रदेश का ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण अमरीका और विश्व का बहुत भला हुआ।

टस्कैगी एक ऐसे भूभाग में स्थित था जहाँ पर कपास बहुत पैदा होती थी और जहाँ लोगों को घरों के दरवाजों तक पर कपास उगाना सिखाया गया था। कपास ने भूमि की समस्त उर्वरा शक्ति को चूस लिया था। इसके अतिरिक्त कुछ समय बाद वहाँ कपास का उगाना तक पहले जैसा लाभदायक काम नहीं रह गया था। कार्वर का प्रथम कार्य कृषकों को यह समझाना था कि किस प्रकार से फसल को अदल-बदलकर भूमि को ठीक किया जा सकता है। इस क्षेत्र में कार्वर ने जो कार्य किया उसका भारी महत्त्व है। उन्होंने लोगों को शकरकन्द और मटर की फसलें उगाने का महत्त्व समझाया और उन्हें यह बताया कि किस प्रकार इन दो चीजों द्वारा लाभ देनेवाली अनेक वस्तुएँ बन सकती हैं। टस्कैगी में उन्होंने अपने वह प्रसिद्ध प्रयोग किये जिनके द्वारा उन्होंने यह पता लगाया कि अलाबामा की मिट्टी से, और विशेष रूप से शकरकन्द और मटर से, जो वहाँ सरलता से पैदा होती है, अनेक उपयोगी वस्तुएँ प्राप्त की जा सकती हैं। मृत्यु से पूर्व कार्वर ने मटर से अनेक उपयोगी वस्तुएँ बनाने में सफलता प्राप्त कर ली थी। ये वस्तुएँ हैं—फर्श का बिछौना और धातु की पालिश, वनस्पति-दुग्ध और स्याही, ग्रीज, भोजन बनाने के काम में आनेवाले तेल, उन्नीस प्रकार के रंग, खाने की चटनी, साबुन, मक्खन और पनीर। इसके अतिरिक्त उन्होंने मटर से ही बननेवाली भोजन की सौ विधियों का आविष्कार किया। इनके आधार पर मटर से बनी हुई वस्तुओं से ही कोई गृहिणी एक पूर्ण भोज का आयोजन कर सकती थी।

अपनी इस छोटी-सी प्रयोगशाला में ही कार्वर ने शकरकन्द से रबड़,

माड़ी, कृत्रिम अदरक, गोंद, सिरका, जूते की काली पालिश, लकड़ी जोड़ने का मसाला, रस्सी, आटा, काफी, शीरा तथा इसी प्रकार की लगभग सौ अन्य वस्तुएँ बनानी सीखीं। अनाज के भूसे से उन्होंने अपने विद्यार्थियों को बीच में रिक्त स्थानवाली दीवारों का बनाना सिखाया। उन्होंने लकड़ी के बुरादे को एक उपयोगी वस्तु बनाया, लकड़ी की छीलन से उन्होंने प्लास्टिक बनाया, अमरीका में अधिकता से पाये जानेवाले एक प्रकार के पीले फूलवाले पेड़ से उन्होंने लिखने के कागज का निर्माण किया। अलाबामा की मिट्टी पर प्रयोग करके उन्हें यह दिखाया कि इस मिट्टी से प्रत्येक प्रकार के सुन्दर रंग इतनी अधिक मात्रा में प्राप्त किये जा सकते हैं कि संसार के सब कपड़ों को रंगने के बाद भी वह समाप्त नहीं होंगे। कार्वर का कृषि-सिद्धान्त था—"अपने जल-पात्र को खोलकर रखो।" पारस्परिक आदान-प्रदान ही उनका ध्येय था। टस्कैगी के पास ही वहाँ की भूमि से उपजी वस्तुओं का प्रयोग करके उन्होंने अलाबामा निवासियों को ही नहीं बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को लाभ पहुँचाया। उनके मटर के प्रयोगों के फलस्वरूप दक्षिण में बीस करोड़ डालर के उद्योग का विकास हुआ। एक बार अमरीकी सीनेट की एक समिति के सम्मुख मटर से बनाई जानेवाली वस्तुओं की विधि समझाने के लिए उन्हें वाशिंग्टन बुलाया गया। समिति ने अपने व्यस्त कार्य-क्रम को देखते हुए उन्हें दस मिनट का समय दिया। परन्तु कार्वर ने जब उनके सामने मटर के प्रयोगों का प्रदर्शन करना प्रारंभ किया तो सीनेट के सदस्यों को उसमें इतना आनन्द आने लगा कि उन्होंने उनको दो घंटे तक प्रदर्शन करने दिया। और कार्वर के प्रदर्शन से प्राप्त जानकारी से वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अमरीका में पैदा होनेवाली मटर को वैदेशिक प्रतिस्पर्धा से बचाने के लिए एक कानून तक पास करा डाला।

अनेक विश्वविद्यालयों ने जार्ज वाशिंग्टन कार्वर को ऊँची-ऊँची उपाधियाँ देकर सम्मानित किया। रोशेस्टर विश्वविद्यालय ने उन्हें डाक्टर ऑव

साइन्स की उपाधि दी। इसके बाद वह डाक्टर कार्वर के नाम से पुकारे जाने लगे। उन्हें ब्रिटिश सोसायटी ऑव आर्ट्स का फैलो बनाया गया। नीग्रो जाति के लोगों में इतनी अधिक उन्नति करने के कारण उन्हें 'स्पिन्गार्न' पदक से विभूषित किया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें और भी अनेक प्रकार से सम्मान दिया गया।। परन्तु उन्होंने सार्वजनिक जीवन में कभी रुचि नहीं ली। उन्हें प्रयोगशाला छोड़कर सार्वजनिक भाषण देने के लिए राजी करना अत्यन्त कठिन था। सन् १९३९ में राष्ट्रपति फ्रेंकलिन डी० रूजवेल्ट डाक्टर कार्वर को बधाई देने टस्कैगी आये। (हैनरी फोर्ड भी उनसे मिलने गये और दोनों मित्र हो गये)। परन्तु जब टामस ए० ऐडीसन ने उन्हें पचास हजार डालर प्रति वर्ष के वेतन पर अपनी प्रयोगशाला में काम करने के लिए बुलाना चाहा तो उन्होंने वहाँ जाने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। उन्होंने अपने किसी आविष्कार को कभी नहीं बेचा। उनका कहना था—"मेरे लिए ये ईश्वर की देन है। मैं क्यों इन पर अपना एकाधिकार स्थापित करूँ?" उन्होंने धन की कभी चिन्ता नहीं की। उन्होंने टस्कैगी में अपने वेतन तक को बढ़ाने से साफ इन्कार कर दिया। बहुधा वह वेतन में मिले चेकों को भुनाते तक नहीं थे। एक बार जब उनसे किसी कार्य के लिए दान देने के लिए कहा गया तो उन्होंने कहा कि उनके पास कुछ भी नहीं है। इतने ही में उन्हें कुछ याद आ गया। उन्होंने अपने कमरे की चटाई के एक कोने के नीचे से बिना भुने हुए चेकों का एक बंडल निकाला और उसे देते हुए कहा, "यह हैं, इन्हें ले लो। हो सकता है, यह अभी भी काम के हों।"

यद्यपि उन्हें नये वस्त्रों में कोई रुचि नहीं थी और उन्होंने कभी अपने को सुसज्जित नहीं किया फिर भी कार्वर जब कभी प्रयोगशाला के कपड़े निकाल कर अपनी जाकेट पहनते थे तो वह उसके बटन के छेद में एक ताजा फूल लगा लेते थे। उनका बातचीत का स्वर उनके संगीत स्वर की ही भाँति सदैव ऊँचा

रहा। विल रोजर्स ने एक बार उनके बारे में कहा कि उन्होंने एक ही ऐसे व्यक्ति को देखा जो कक्षा में भाषण देने के साथ-साथ संगीत में भी रुचि ले सकता हो। कार्वर जीवन भर चित्र भी बनाते रहे। बड़े-बड़े संग्रहालयों ने उनके कुछ चित्रों का खरीदने की माँग की परन्तु उन्हें अपने चित्रों को बेचना पसन्द नहीं था। बहुधा वह अपने बनाये चित्र विद्यार्थियों या कृषकों को यों ही दे डालते थे। उनकी वृद्धावस्था में कुछ लोग उन्हें एक विचित्र व्यक्ति समझने लगे थे। प्रत्येक व्यक्ति जानता था कि कार्वर एक अत्यन्त प्रसिद्ध व्यक्ति है इस कारण सभी उन्हें उच्च-कोटि का विद्वान् मानते थे। "शकरकंद का यह जादूगर" वास्तव में एक महान् कृषि रसायन-शास्त्री था। कृषि रसायन-शास्त्र के क्षेत्र में जितना काम उन्होंने अकेले किया, उतना कोई एक व्यक्ति कभी नहीं कर सकता। "प्रोग्रेसिव फार्मर" नाम के समाचारपत्र ने जब उन्हें "दक्षिणी कृषि की सेवा में रत वर्ष का सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति" चुना तो देश के सभी समाचार-पत्रों ने इस खबर को प्रकाशित किया। "दि न्यूयार्क टाइम्स" ने अपने सम्पादकीय लेख में लिखा—"हमारे युग के और किस व्यक्ति ने कृषि और दक्षिण के लिए इतना अधिक कार्य किया है?"

उनकी मृत्यु के दस वर्ष पश्चात् संयुक्तराज्य अमरीका की सरकार ने मिसौरी की उस भूमि को खरीद लिया जहाँ जॉर्ज वाशिंग्टन कार्वर का जन्म हुआ था। सन् १९५३ में इस स्थान को उनकी याद में एक स्थायी स्मारक का रूप दे दिया गया। इस अवसर पर "दि न्यूयार्क हेरल्ड ट्रिब्यून" ने लिखा—

"डा० जॉर्ज वाशिंग्टन कार्वर की स्मृति में एक राष्ट्रीय स्मारक की स्थापना नितान्त उचित है। वह दासत्व से उठकर एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक बने। मानवता की भलाई के लिए उन्होंने जो कार्य किये उनकी गणना नहीं की जा सकती....महान् अमरीकियों की पंक्ति में डा० कार्वर का स्मरण उनकी वैज्ञानिक प्रतिभा से भी अधिक उनकी मानवीय भावनाओं के लिए किया जायेगा। वह,

जैसा कि प्रत्येक व्यक्ति जानता है, एक नीग्रो थे। परन्तु उन्होंने सब बाधाओं पर, जिनमें रंग-भेद की बाधा भी थी, विजय पाई। इस शताब्दी में सम्भवतः ऐसा अन्य कोई व्यक्ति नहीं हुआ जिसने जातियों में पारस्परिक मेल-जोल स्थापित करने का डा० कार्वर जैसा उदाहरण प्रस्तुत किया हो। ऐसी महानता अमरत्व का अंग होती है। डा० कार्वर ने केवल मटर और शकरकंद के छिपे हुए गुणों का ही पता नहीं लगाया बल्कि उन्होंने अमरीकी आत्मा को भी विशाल बनाने में सहायता दी।''

राबर्ट एस० ऐबॉट्

जन्म १८७०—मृत्यु १९४०

राबर्ट सैंग्सटेक ऐबॉट् का जन्म सन् १८७० में जॉर्जिया के किनारे के पास सेण्ट साइमन द्वीप में हुआ । उनके पिता पादरी थे । उनका बाल्यकाल सवन्ना में व्यतीत हुआ जहाँ उन्होंने बीच इन्स्टीट्यूट में शिक्षा पाई । बाद में उन्होंने औरेन्जबर्ग, दक्षिण कैरोलिना, के क्लैफिन इन्स्टीट्यूट में भी शिक्षा पाई । इसके पश्चात् वह हैम्पटन गये, जहाँ उन्होंने मुद्रण-कार्य सीखा । बाल्यकाल में उन्हें पुस्तकों से बहुत प्रेम था और भाग्यवश उनके घर में एक अच्छा-सा पुस्तकालय भी था । प्रारम्भ में उन्होंने "सवन्ना न्यूज" नाम के समाचार-पत्र के कार्यालय में काम करके समाचार-पत्र छापने का काम सीखा । परन्तु दक्षिण में नीग्रो लोगों को इस क्षेत्र में प्रगति करने की कोई सुविधाएँ नहीं थीं इस कारण युवक ऐबॉट् शिकागो में आकर बस गये । सन् १८९६ में उन्होंने मुद्रक संघ की सदस्यता के लिए आवेदन-पत्र भेजा परन्तु उन्हें बताया गया कि संघ अश्वेत सदस्यों को कोई प्रोत्साहन नहीं देता । इस कारण सदस्य बनने में उनका समय और धन व्यर्थ ही नष्ट होगा । शिकागो के सब मुद्रक इस संघ के सदस्य थे इस कारण वह भी इसके सदस्य बनने के लिए विशेष आतुर थे । परन्तु नीग्रो होने के कारण उन्हें काम पाने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा । उन्हें यह भी मालूम हुआ कि मुद्रक संघ मुद्रणालयों को स्वयं किसी नीग्रो को काम न देने की सम्मति देता था ।

अपने व्यवसाय द्वारा जीविकोपार्जन के साधन जुटाने में असफल होने पर उन्होंने कानून पढ़ने के लिए कैन्ट कालिज में प्रवेश किया और कुछ समय तक शिकागो और गेरी में वकाल का काम करते रहे । परन्तु उन्हें मुद्रण-कार्य से

बहुत प्रेम था इस कारण उन्होंने स्वयं एक समाचार-पत्र प्रकाशित करने तथा बाद में एक मुद्रण-यंत्र खरीदने का निश्चय किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने इस बात का भी अनुभव किया कि नीग्रो जाति की समस्याओं का निवारण करने के लिए शिकागो में एक ऐसे समाचार-पत्र की आवश्यकता है जो उनकी कठिनाइयों को जनता के सम्मुख रख सके और उनके लिए शिक्षा, जीविका एवं अन्य जनतंत्रीय अधिकारों की माँग कर सके। जिस दिन उन्होंने यह कार्य प्रारम्भ किया उस दिन उनके पास केवल पच्चीस सैन्ट, एक डैस्क तथा एक कुर्सी थी। स्टेट स्ट्रीट पर एक महिला ने उन्हें अपना नीचे का एक कमरा, जिसमें उसकी रसोई भी बनाई जाती थी, दे दिया। उन्होंने विज्ञापनों और समाचारों को इकट्ठा किया, सम्पादकीय लिखा, पत्र को छापा और स्वयं ही बेचने का काम भी किया। उन्होंने समाचार-पत्र का नाम "दि शिकागो डिफैन्डर" रखा। प्रथम बार अर्थात् ५ मई सन् १९०५ को उसकी तीन सौ प्रतियाँ छापी गईं। कागज और छपाई में कुल पौने चौदह डालर खर्च हुए। उनके तीन मित्र एक डालर प्रति वर्ष के हिसाब से चन्दा देकर पत्र के वार्षिक ग्राहक बन गये। यह एक साप्ताहिक पत्र था। एक प्रति का मूल्य पाँच सैन्ट रखा गया। प्रारम्भ से ही पत्र की माँग बढ़ने लगी। धीरे-धीरे पत्र का आकार-प्रकार भी बढ़ाया जाने लगा। ग्राहकों की संख्या बढ़ते-बढ़ते अंत में ढाई लाख तक जा पहुँची। "दि शिकागो डिफैन्डर" धीरे-धीरे बढ़ते-बढ़ते अमरीका का सबसे बड़ा और प्रभावशाली नीग्रो समाचार-पत्र बन गया।

बाल्यकाल में ऐबॉट् जब दक्षिण में थे तो उन्होंने इस बात का विशेष रूप से अनुभव किया था कि समाचार-पत्रों में नीग्रो नागरिकों से सम्बन्धित केवल वही समाचार प्रकाशित होते थे जिनमें किसी अपराध या लड़ाई-झगड़े का उल्लेख होता था। सवन्ना में नीग्रो जाति में होनेवाले मृत्यु, विवाह अथवा किसी नीग्रो द्वारा नये चर्च की स्थापना से सम्बन्धित कोई समाचार प्रकाशित

रावर्ट एस० पेबॉट्

नहीं होता था। दक्षिण के कुछ समाचार-पत्रों ने किसी भी नीग्रो का चित्र न प्रकाशित करने का सिद्धान्त बना रखा था। वे बुकर टी० वाशिंग्टन तक के चित्र नहीं प्रकाशित करते थे। इसके अतिरिक्त नीग्रो जाति के लोगों से सम्बन्धित समाचारों में उनके नाम के पहले मिस्टर या मिसेज भी नहीं लगाते थे। उत्तर के समाचार-पत्र भी केवल वही नीग्रो समाचार प्रकाशित करते थे जो अपराध या मारपीट से सम्बद्ध होते थे। अश्वेत लड़के-लड़कियाँ हाईस्कूल या कालिज की शिक्षा पूर्ण करने पर, या पुरस्कार पाने पर, या किसी भोज का आयोजन करने पर, समाचार-पत्रों में अपने चित्र देखने के लिए अत्यन्त लालायित रहते थे। इन सब बातों को देखते हुए राबर्ट एंस० ऐबॉट् ने शिकागो की नीग्रो जाति की गतिविधियों को प्रकाश में लाने की दृष्टि से और उनकी जनतंत्रीय अधिकारों की माँग को गति देने के उद्देश्य से, "दि शिकागो डिफैन्डर" प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। धीरे-धीरे इस समाचार-पत्र ने एक राष्ट्रीय पत्रिका का रूप धारण कर लिया। प्रत्येक स्थान पर इसका वितरण होने लगा। यह समाचार-पत्र समानाधिकारों का प्रबल समर्थक था, इस कारण दक्षिण के बहुत से दलों ने इसके प्रसार और वितरण में बाधा पहुँचाने का प्रयत्न किया। एक समय ऐसा तक आया जब जॉर्जिया के कुछ क्षेत्रों में जहाँ नीग्रो लोगों को मत देने का अधिकार नहीं था, नीग्रो जाति के लोगों के लिए, समान मताधिकार के पक्षपाती, इस समाचार-पत्र को पढ़ना तक अवैध घोषित कर दिया गया।

जब श्री ऐबॉट् ने डिफैन्डर प्रकाशित किया था उस समय शिकागो में लगभग चालीस हजार नीग्रो रहते थे। परन्तु प्रथम विश्व महायुद्ध के समय युद्ध-उद्योगों का विकास होने के कारण नीग्रो लोग बहुत बड़ी संख्या में उत्तर की ओर आने लगे। फलस्वरूप सन् १९२० में शिकागो में नीग्रो नागरिकों की संख्या बढ़कर एक लाख हो गई। युद्ध के समय हजारों व्यक्ति सेना में

भरती हो गये थे। परिणामस्वरूप कारखानों में काम करनेवाले श्रमिकों की बहुत कमी पड़ने लगी। यह देखकर उन कारखानों ने भी नीग्रो श्रमिकों को काम देना प्रारम्भ कर दिया जो पहले उन्हें बिल्कुल दूर रखते थे। डिफैन्डर ने इस प्रवृत्ति को और भी अधिक प्रोत्साहन दिया। इस समय श्री ऐबॉट् ने लिखा—

"ऐसा कोई कार्य नहीं है जिसे हम कुशलतापूर्वक न कर सकते हों। यही कारखाने और उद्योग-शालाएँ, जिनके द्वार हमारे लिए एक दिन बन्द थे, आज आवश्यकता पड़ने पर हमें काम दे रही हैं। हमें अवसर दिया जाना चाहिए, विवशता-वश नहीं बल्कि औचित्य के सिद्धान्त के आधार पर। राष्ट्रीय आय में जब घाटा होने लगता है तो सब पक्षपात समाप्त हो जाता है—धीरे-धीरे परन्तु विश्वास के साथ हम इस देश के प्रत्येक स्थल में अपने पैर जमाते जा रहे हैं। केवल इसी उपाय द्वारा तथाकथित जाति-समस्या सुलझ सकती है। प्रश्न है केवल जातियों के बीच अच्छे और निकट सम्बन्ध स्थापित करने का। हम सब अमरीकन हैं और हम सबको मिल-जुल कर रहना चाहिए, तब क्यों न हम शान्तिपूर्वक रहें ?"

मतदान की शक्ति में पूर्ण विश्वास रखनेवाले "दि शिकागो डिफैन्डर" ने नीग्रो नागरिकों को मत देने तथा अपनी जाति के लोगों को विभिन्न पदों के लिए चुनकर भेजने के लिए प्रेरित किया। शीघ्र ही शिकागो की नगर परिषद् में तथा इलिनोयस राज्य की व्यवस्थापिका सभा में नीग्रो प्रतिनिधि दिखाई देने लगे। बीसवीं शताब्दी में प्रथम बार ऑस्कर डीप्रीस्ट नाम के नीग्रो प्रतिनिधि को अमरीकी कांग्रेस के लिए चुनकर वाशिंग्टन भेजा गया। इस राजनीतिक विजय में सम्पादक ऐबॉट् के पत्र का भी बहुत बड़ा हाथ था। समाचार-पत्र ने नीग्रो नागरिकों को केवल अपने जनतंत्रीय अधिकारों का पूर्ण लाभ उठाने के लिए ही प्रेरित नहीं किया, उसने उन्हें सामाजिक और

राष्ट्रीय कर्त्तव्यों का पालन करने, शुद्ध और स्वच्छ रहने, मितव्ययी बनने और आत्मसम्मान का ध्यान रखने, बांड खरीदने, युद्ध में सहायता देने और श्रेष्ठ नागरिक बनने की भी प्रेरणा दी।

बड़े व्यवसायवाले व्यापारी पहले नीग्रो समाचार-पत्रों में विज्ञापन नहीं देते थे, इस कारण इन पत्रों को अखबार की बिक्री और चंदे से प्राप्त आय पर ही काम चलाना पड़ता था। श्री ऐबॉट् ने यह देखकर अपने पत्र को आकर्षक ढंग से समाचार छाप कर, प्रमुख समाचारों के लिए लाल स्याही का प्रयोग करके, तथा अन्य आकर्षित करनेवाले उपायों द्वारा, अधिक से अधिक उपयोगी और आकर्षक बनाने का प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया। जन-साधारण की आवश्यकताओं और इच्छाओं पर प्रकाश डालने के लिए वह उनके भी निकट सम्पर्क में रहते थे। धनी हो जाने के बाद भी वह शिकागो के श्रमिकों के साथ बहुधा दिखाई देते थे। अच्छे घरों का निर्माण किस प्रकार किया जाय तथा रंग-भेद के कारण उत्पन्न हुई समस्याओं को किस प्रकार सुलझाया जाय, इन सब विषयों पर वह नीग्रो जाति के लोगों को उचित सम्मति देते थे। अनेक वर्षों तक नीग्रो जनता का प्रमुख पत्र रहने के कारण "डिफैन्डर" समस्त देश में प्रसिद्ध हो गया है। जन-तंत्रीय विचारों के विकास में भी इस पत्र ने अपूर्व सहयोग प्रदान किया है।

श्री ऐबॉट् की मृत्यु के पश्चात् उनके भतीजे जॉन एच० सैंग्सटेक ने "दि शिकागो डिफैन्डर" के सम्पादन का भार सँभालकर उसे चलाना प्रारम्भ किया। द्वितीय विश्व महायुद्ध के समय इस पत्र ने एक ओर जहाँ सेना और उद्योग-धंधों में रंग-भेद और पक्षपात के विरुद्ध अपनी माँग जारी रखी तो दूसरी ओर इसने युद्ध के समर्थन में देश-भक्ति के विचारों से भरे हुए अनेक लेख और सम्पादकीय भी प्रकाशित किये। सन् १९४४ में पत्र के सम्पादक ने अपने एक लेख में लिखा—

"इस बात की चिन्ता न करते हुए कि हमारे साथ कैसे-कैसे अन्याय किये गये हैं और किन कठिनाइयों के साथ हमें उनसे संघर्ष करना पड़ा है, हम सबको इस युद्ध को अपना ही युद्ध समझना चाहिए। हमारी जाति के सपूत विदेशों में ऐसे भयानक शत्रु से लड़ने में लगे हुए हैं जो उनके और हमारे रक्त का उसी प्रकार प्यासा है जिस प्रकार वह हमारे श्वेत भाइयों के रक्त का प्यासा है—चतुर्थ युद्ध ऋण में भाग लेना केवल देशभक्ति ही नहीं है बल्कि हमारे अपने हित में भी है।"

शिकागो के नीग्रो समाज ने बीस लाख डालर के मूल्य के बांड खरीदे। जिस समाचार-पत्र ने युद्ध में सहायता करने की माँग का आन्दोलन चलाया उसके सम्मान में संयुक्त राज्य समुद्रीय आयोग ने सैनफ्रांसिस्को से प्रस्थान करनेवाले एक नये जहाज का नाम यू० एस० एस० राबर्ट एस० ऐबॉट् रखा।

अपने जीवन-काल में श्री ऐबॉट् हैम्पटन ऐल्यूमी एसोसिएशन के नेशनल एक्जीक्यूटिव प्रेसीडेंट, वाई० एम० सी० ए० के ट्रस्टी, नेशनल अरबन लीग के बोर्ड ऑव डिरेक्टर्स के एक सदस्य तथा फील्ड म्यूजियम के आजीवन सदस्य बने। आजकल शिकागो में प्रतिवर्ष एक ऐसे व्यक्ति को एक मैमोरियल ऐवार्ड (स्मारक पुरस्कार) दिया जाता है जिसने उस वर्ष जातियों के पारस्परिक सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने के लिए सबसे अधिक कार्य किया हो। सन् १९४५ में "दि शिकागो डिफेन्डर" ने लिंकन विश्वविद्यालय के पत्र-कारिता स्कूल में राबर्ट एस० ऐबॉट् स्मारक छात्रवृत्ति की स्थापना की। इस समय "दि शिकागो डिफेन्डर" ने न्यूयार्क से मैम्फिस तक सात अन्य समाचार-पत्रों को अपने संरक्षण में लेकर अपने क्षेत्र को और भी अधिक बढ़ा लिया है।

पॉल लॉरेन्स डनबर

जन्म १८७२—मृत्यु १९०६

पॉल लॉरेन्स डनबर के पिता एक दास थे जो भागकर कनाडा चले गये थे परन्तु अमरीकी गृह-युद्ध के समय उन्होंने वापिस आकर, सेना में भरती होकर, युद्ध किया था। उन्होंने ऐसी स्त्री से विवाह किया था जो कैन्टकी में दासी रह चुकी थी। युद्ध समाप्त होने के सात वर्ष पश्चात् डेटन, ओहियो, में उनके एक पुत्र का जन्म हुआ। उस समय उनके पिता ने कहा, "बाइबिल के महात्मा पॉल के नाम पर हम इसका नाम पॉल रखेंगे, क्योंकि यह लड़का आगे चलकर एक महान् पुरुष बनेगा।" किन्तु वे पुत्र की उन्नति देखने के लिए जीवित नहीं रहे। पॉल जब केवल बारह वर्ष के थे तभी पिता की मृत्यु हो गई। परन्तु उनकी भविष्यवाणी सत्य निकली। पॉल लॉरेन्स डनबर वास्तव में एक महान् पुरुष बने।

पॉल के जन्म के समय उनकी माँ को पढ़ना-लिखना नहीं आता था परन्तु विवाह के बाद उन्होंने पढ़ना सीखना प्रारम्भ कर दिया था। जैसे ही पॉल स्कूल जाने योग्य हुए, उनकी माँ ने उन्हें स्कूल में पढ़ाने की व्यवस्था कर दी। विधवा होने के कारण उन्हें स्वयं जीविकोपार्जन करना पड़ता था। इस कारण उन्होंने कपड़े धोने और उन पर लोहा करने का काम करना प्रारम्भ कर दिया। प्रति सप्ताह पॉल अपने ग्राहकों के घरों से गंदे कपड़े इकट्ठे करके लाते और धुलने के बाद उन्हें उनके घर पहुँचाते। रात्रि को माँ-बेटे दोनों साथ-साथ पढ़ते। बालक पॉल ने इस प्रकार अपनी माँ को लिखना सिखाया। परन्तु उन्हें इतना अधिक काम करना पड़ता था कि वह कभी अच्छी तरह पढ़ना-लिखना नहीं सीख सकीं। एक बार, जब पॉल बड़े होकर दूसरे नगर

पॉल लॉरेन्स डनबर

में चले गये थे, उनका एक पड़ोसी उनके घर के पास रुककर बात करने लगा। इस पर उनकी माँ ने कहा, "मुझे शीघ्रता करके कपड़े धोने के काम को तुरन्त ही निबटा देना चाहिए, क्योंकि मुझे सारे दिन कठिन काम करना है।"

पड़ोसी ने पूछा, "तुम्हें ऐसा क्या काम करना है ?"

"मुझे अपने लड़के को एक पत्र लिखना है" श्रीमती डनबर ने उत्तर दिया।

पॉल ने जब हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की तो अपनी कक्षा में केवल वही एक नीग्रो विद्यार्थी थे। साहित्यिक संघ का प्रधान होने के नाते उन्हें परीक्षोत्सव के समय कक्षा-गीत लिखने के लिए चुना गया। सात वर्ष की अवस्था से ही वह छोटी-छोटी कविताएँ लिखते चले आ रहे थे। उन्होंने कविता लिखने का यह कार्य हाईस्कूल में भी जारी रखा था जहाँ उन्हें स्कूल की पत्रिका का सम्पादक बनाया गया। तेरह वर्ष की अवस्था में उन्होंने ईस्टर सन्डे को आयोजित स्कूल के उत्सव में अपनी लिखी हुई कविता पढ़कर सुनाई। "दि डेटन हैरल्ड" नाम की पत्रिका में जब प्रथम बार उनकी कविताएँ प्रकाशित हुईं तब वे १६ वर्ष के थे। हाईस्कूल में अँगरेजी पढ़ानेवाली एक अध्यापिका उनकी काव्य-प्रतिभा से इतनी अधिक प्रभावित हुई थी कि उनकी पढ़ाई के बाद एक बार डेटन में लेखकों के पश्चिमी संघ की एक सभा का जब आयोजन हुआ तो उन्होंने उस सभा में पॉल को लेखकों के स्वागत में अपनी कविता सुनाने का अवसर दिया। उन दिनों युवक पॉल मेन स्ट्रीट पर स्थित कैलैहन बिल्डिंग में चार डालर प्रति सप्ताह के वेतन पर ऐलीवेटर (बड़ी-बड़ी इमारतों में लगा हुआ ऊपर उठानेवाला यंत्र) चलाने का काम कर रहे थे। सभा में उपस्थित होने के लिए उन्हें कुछ घंटों के लिए छुट्टी लेनी पड़ी। सभा में उपस्थित लेखकगण उद्घाटन के पश्चात् एक

नीग्रो युवक को मंच पर जाकर कविता में उनका स्वागत करते हुए देखकर अत्यन्त चकित हुए। परन्तु वह उसकी कविता से इतने प्रभावित हुए कि सभा की समाप्ति पर बहुत से लेखक उसको खोजने लगे। सभाभवन में पॉल का कहीं पता न था। वे अपने काम पर वापिस चले गये थे। परन्तु कुछ लेखकों ने अन्त में पॉल को एलीवेटर चलाते हुए पा ही लिया और उन्हें उनकी कविता के लिए बधाई दी।

पॉल ने जब यह देखा कि उनके पास एक पुस्तक के योग्य कविताएँ इकट्ठी हो गई हैं तो एक दिन उनको लेकर वह डेटन के एक छोटे से प्रकाशन-गृह में पहुँचे। वहाँ उन्हें बताया गया कि कविताओं की पुस्तक छापना जोखिम का काम है इस कारण उनकी कविताएँ इसी शर्त पर प्रकाशित की जा सकती हैं कि वह प्रकाशन का सारा व्यय स्वयं दें। इस कार्य में १२५ डालर का खर्च था। पॉल के पास एक डालर भी नहीं था। निराश होकर जब वह लौटने लगे तो प्रकाशन-गृह के प्रबन्धक ने, जिसने उनकी काव्य-प्रतिभा के बारे में सुन रखा था, उन्हें वापिस बुलाया। उस व्यक्ति ने पॉल से कहा कि यदि वह स्वयं पुस्तकें बेचकर बाद में खर्चे को पूरा करने का वचन दें तो वह अपनी पूँजी लगाकर उनकी कविताएँ प्रकाशित करा सकता है। पॉल ने यह स्वीकार कर लिया। १८९३ में क्रिस्मस के उत्सव के समय उनकी पुस्तक "आक ऐन्ड आइवी" शीर्षक से प्रकाशित हो गई। दो सप्ताह के अन्दर पॉल ने एक डालर प्रति पुस्तक के हिसाब से ऐलीवेटर में चढ़ने-उतरनेवाले लोगों को अपनी पुस्तकें बेचकर प्रकाशन का व्यय चुकाने योग्य काफी धन इकट्ठा कर लिया। श्री आर० सी० रैन्जम ने, जो बाद में अफ्रीकन मैथोडिस्ट चर्च के पादरी हुए, रविवार की प्रार्थना सभाओं में पॉल के लिए स्वयं सौ प्रतियाँ बेचीं।

उस वर्ष शिकागो में विश्व की कोलम्बिअन प्रदर्शनी आयोजित हुई। इस प्रदर्शनी में फ्रेडरिक डगलस हैटी से सामान लाये थे। किसी अधिक वेतनवाले

काम की खोज में पॉल भी शिकागो आये। डगलस ने उन्हें पाँच डालर प्रति सप्ताह के वेतन पर अपना सहायक नियुक्त कर लिया। एक नीग्रो उत्सव में डगलस और डनबर दोनों एक ही मंच पर बैठे। प्रदर्शनी के समाप्त होने पर पॉल डेटन वापिस लौट आये। उन्होंने एक बड़े घर में नौकरी कर ली। सुविख्यात जेम्स ह्विटकाम्ब राइले ने कहीं से पॉल की कविताओं के बारे में सुन रखा था। उन्होंने पॉल को उत्साहित करते हुए एक पत्र लिखा। डेटन तथा आस-पास के अन्य नगरों में पॉल की ख्याति अपनी कविताओं का स्वयं पाठ करने के रूप में फैलनी प्रारम्भ हो गई थी। फलस्वरूप विक्षिप्त रोगियों के चिकित्सालय के प्रधान डा० एच० ए० टॉबे ने पॉल से टोलैडो नगर में कविता-पाठ करने के लिए कहा। यहाँ पर उन्हें जो सफलता मिली उसके कारण पॉल के अनेक मित्र बन गये। इन मित्रों की सहायता से उन्होंने १८९५ में टोलैडो में अपनी कविताओं का दूसरा संग्रह "मेजर्स ऐन्ड माइनर्स" शीर्षक से स्वयं प्रकाशित किया। पॉल के चौबीसवें जन्म-दिन पर एक प्रसिद्ध अमरीकी लेखक, विलियम डीन हावेल्स, ने अमरीका की प्रसिद्ध पत्रिका "हार्पर्स वीकली" में उनकी पुस्तक के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये। उन्होंने उनकी पुस्तक की प्रशंसा में पत्रिका का एक पूरा पृष्ठ भर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि पॉल लॉरेन्स डनबर एक दिन में ही सम्पूर्ण देश में प्रसिद्ध हो गये। जिस समय यह लेख प्रकाशित हुआ था उस समय पॉल अपनी माँ के साथ घर से दूर बाहर एक स्थान पर गये हुए थे। वापिस लौटने पर उन्हें लगभग दो सौ पत्र अपने कमरे में पड़े हुए मिले जिन्हें डाकिये ने खिड़की से उनके कमरे में डाल दिया था। बहुत से पत्रों के साथ उनकी नई पुस्तक के लिए उसका मूल्य भी भेजा गया था।

शीघ्र ही डनबर के पास अनेक नगरों से कविता पाठ करने के लिए निमंत्रण आने लगे। उनकी बहुत-सी कविताएँ मुक्त दासों द्वारा बोली जाने-

वाली टूटी-फूटी अँगरेजी में लिखी गई थीं। यह भाषा ऐसी थी जो उनके माता-पिता बोलते थे। डनबर इन कविताओं को अत्यन्त सुन्दर ढंग से पढ़ते थे। और कभी-कभी तो वह कविता पढ़ने के साथ-साथ अभिनय भी करते थे। "दि कॉर्नस्टॉक फिडिल" शीर्षक अपनी कविता का पाठ करते समय वह एक पुराने ग्रामीण नृत्य की नकल करते हुए स्वयं नृत्य करते थे। श्रोतागण उन्हें बहुत चाहते थे। अपने कार्य-क्रम को ठीक रखने के लिए उन्हें एक प्रबन्धक भी नियुक्त करना पड़ा। न्यूयार्क में वह अपने प्रबन्धक की योजना के अनुसार "डॉड, भीड एण्ड कम्पनी"-जैसे बड़े प्रकाशन-गृह के स्वामी से मिले। इस प्रकाशन-गृह से सन् १८९६ में उनकी "लिरिक्स ऑव लोली लाइफ" शीर्षक कविता संग्रह प्रकाशित हुआ। किसी बड़े प्रकाशन-गृह से प्रकाशित होनेवाली उनकी यह प्रथम पुस्तक थी। विलियम डीन हावैल्स ने पुस्तक की भूमिका लिखी। अगले वर्ष, महारानी विक्टोरिया की हीरक-जयंती के अवसर पर, वह अपनी कविताएँ सुनाने के लिए लन्दन गये। वहाँ उनका अपूर्व स्वागत किया गया। उनके प्रबन्धक ने सब रुपया अपने पास रख लिया था इस कारण वापिस लौटने के खर्च के लिए पॉल को अमरीका में अपने मित्रों को तार द्वारा सूचना देनी पड़ी।

पॉल एक अध्यवसायी युवक थे। लन्दन में इधर-उधर घूमकर अपना समय व्यतीत करने के बदले उन्होंने अपना प्रथम उपन्यास "दि अनकॉल्ड" लिखा। यह उपन्यास उन्होंने एक पत्रिका को धारावाहिक रूप में प्रकाशित करने के लिए बेच दिया। सैन्ट जैम्स के दरबार में नियुक्त अमरीकी राजदूत, जॉन हे, ने पॉल के लिए लन्दन में एक कार्य-क्रम निश्चित किया। यहाँ पॉल ने अनेक गण्यमान्य व्यक्तियों से भेंट की। सौ वर्ष पूर्व जिस प्रकार अँगरेजों ने बोस्टन की नीग्रो कवयित्री, फिलिस ह्विट्ले, का स्वागत किया था, उसी प्रकार उन्होंने डेटन से आनेवाले पॉल लॉरेन्स डनबर का स्वागत किया। उनके

सम्मान में अनेक प्रीतिभोज दिये गये। रॉयल जिऑलिजिकल सोसायटी के मंत्री के भी वह अतिथि बने। उन दिनों उच्च श्रेणी के बहुत से अँगरेज एक शीशेवाला चश्मा लगाते थे। इस पर पॉल ने अपने घर एक पत्र में यह लिखकर भेजा कि "लन्दन में रहनेवाले बेचारे लोगों के पास चश्मों की बहुत कमी है, इस कारण प्रत्येक व्यक्ति केवल एक ही शीशे का चश्मा लगाता है।"

लन्दन जाने से पूर्व डनबर न्यू ओर्लीअन्स की एक सुन्दर लड़की से प्रेम करने लगे थे। वह उनसे इतना प्रेम करती थी कि उनके लन्दन जाते समय वह घर से भागकर उन्हें जहाज तक पहुँचाने के लिए आई थी। इस कारण अमरीका वापिस लौटने पर उन्होंने विवाह करने का निश्चय किया। परन्तु विवाह से पूर्व वह कोई स्थायी काम कर लेना चाहते थे। कर्नल रॉबर्ट जी० इन्गरसॉल की सहायता से उन्हें ७५० डालर प्रतिवर्ष के वेतन पर वाशिंग्टन में कांग्रेस के पुस्तकालय के वाचनालय में एक स्थान मिल गया। वहाँ पर उन्होंने प्रारंभ के महीनों में "कॉस्मॉपालिटन" पत्रिका के लिए बहुत-सी कहानियाँ लिखीं। बाद में ये कहानियाँ "फॉक्स फ्राम डिक्सी" शीर्षक के अन्तर्गत पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुईं। यह पुस्तक उन्होंने टोलैडो के उन चिकित्सक को समर्पित की जिन्होंने उनको प्रगति करने में बहुत सहायता दी थी। वाशिंग्टन में उन्होंने विवाह कर लिया। विवाह के पश्चात् पॉल और उनकी पत्नी ने एक मकान खरीदने का निश्चय किया। सम्भवतः इसी अवसर पर उन्होंने जो कविता लिखी उसका भाव है :—

"दिन-प्रतिदिन का थोड़ा-सा श्रम, बीच में आये हुए छोटे-छोटे स्वप्न, कुछ कष्ट, कुछ कलह, कुछ सुख यही जीवन है। कुछ देर रहनेवाली ग्रीष्म की प्रातः, जब सुख नया-नया दिखाई देता है, जब दिन का आकाश नीला होता है, जब पक्षी गाते हैं—यही प्रेम है।"

कुछ महीनों के लिए वे बहुत सुखी रहे; परन्तु केवल कुछ महीनों के

लिए। इसके बाद पॉल का स्वास्थ्य गिरने लगा और उन्हें खाँसी आने लगी। पहले उन्होंने समझा कि पुस्तकालय की पुस्तकों पर जमी हुई धूल के ही कारण उन्हे खाँसी आती है। परन्तु अंत में उन्हें मालूम हुआ कि वह क्षय रोग के रोगी हैं।

गिरते हुए स्वास्थ्य के कारण उन्हें कांग्रेस के पुस्तकालय से पद-त्याग करना पड़ा। इसके बाद वह लगभग आठ वर्षों तक अपने रोग से निरन्तर संघर्ष करते रहे। इस बीच कभी वह काम करने के बिल्कुल अयोग्य हो जाते तो कभी उनमें बहुत-सा काम करने की शक्ति आ जाती। उन्होंने गद्य और पद्य की कुछ पुस्तकें और लिखीं। अनेक नगरों में उन्होंने अपनी कविताएँ पढ़-कर सुनाईं। बुकर टी० वाशिंग्टन के निमंत्रण पर वह टस्कैगी भी कई बार गये और वहाँ अँगरेजी के विद्यार्थियों के सम्मुख भाषण दिये। बुकर टी० ने उनसे एक वार्षिक कृषक-सम्मेलन के लिए एक कविता लिखने को कहा। उन्होंने कविता लिखकर सम्मेलन में उपस्थित कृषकों को पढ़कर सुनाई। टस्कैगी स्कूल के पच्चीसवें वार्षिकोत्सव पर उन्होंने एक "टस्कैगी गीत" भी लिखा। गीत का भाव है :—

"हरे भरे खेत मुस्कराकर हमारा स्वागत करते हैं, वन प्रदेश प्रसन्न हैं। निहाई और कुदाल की आवाज में वीणा जैसा मधुर और मनमोहक संगीत है जिसका अनुभव करना तूने हमें सिखाया है।"

पन्द्रह सौ स्वरों ने एक साथ मिलकर इस गीत को गाया। दक्षिण के सब स्कूलों और कालिजों के विद्यार्थी डनबर की कविताओं से प्रेम करने लगे थे। १८९९ में जब वह न्यूयार्क में रोगग्रस्त पड़े थे तब ऐटलान्टा विश्वविद्यालय ने उन्हें एक उपाधि देकर सम्मानित किया परन्तु कवि स्वयं समारोह में भाग लेने नहीं जा सकता था। स्वास्थ्य सुधार के लिए पश्चिम में पहाड़ों पर जाना था। बीमारी में भी लिखना नहीं छोड़ा। डैनवर के निकट

एक कुटी में उन्होंने "दि लव आव लैन्ड्री" नाम का दूसरा उपन्यास समाप्त किया। इसका प्रारम्भ उन्होंने कोलोरैडो में किया था।

यद्यपि पॉल लॉरेन्स डनबर ने गद्य में भी बहुत लिखा—चार उपन्यास, चार कहानी-संग्रह तथा अनेक निबन्ध और उनको रचनाएँ सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं, जिन्हें बहुत लोगों ने पढ़ा, परन्तु वह अपनी कविताओं के कारण ही अधिक प्रसिद्ध हुए। उनकी मृत्यु के बाद भी उनकी कविताएँ पढ़ी जाती रहीं, और आज भी लोग उन्हें पसन्द करते हैं। उनकी बहुत-सी कविताओं को संगीतज्ञों ने भी अपना लिया है। सन् १८९८ में डनबर ने नीग्रो संगीतकार, विल मैरिअन कुक, के लिए "क्लारिंडी—दि ओरिजिन ऑव दि केकवॉक" शीर्षक संगीत-प्रधान कविता की रचना की। न्यूयार्क के एक प्रसिद्ध संगीत-भवन में बहुत दिनों तक इस कविता को गाया गया। डनबर की अनेक सुन्दर कविताएँ सीधी-सादी अँगरेजी में हैं। परन्तु उनकी अत्यधिक प्रसिद्ध और सुन्दर कविताएँ नीग्रो जाति के लोगों द्वारा बोली जानेवाली टूटी-फूटी अँगरेजी में हैं जो आजकल नहीं बोली जाती है तथा जिसको पढ़ना थोड़ा कठिन है। फिर भी गृह-युद्ध के बाद कुछ वर्षों तक नीग्रो जाति के लोगों द्वारा बोली जानेवाली उस टूटी-फूटी अँगरेजी में एक विशेष प्रकार का सौन्दर्य एवं हास्य है। इस प्रकार की भाषा में लिखी गई उनकी एक कविता का भाव है:—

"चमकती हुई आँखोंवाले नन्हे भूरे बच्चे, अपने पापा के पास आओ और उनकी गोद में बैठ जाओ। तुम क्या कर रहे थे, मालूम होता है सैन्डपाई बना रहे थे। उधर देखो, तुम भी मेरी ही तरह गंदे हो। अरे यह तो शीरा मालूम देता है। ओ मेरिया, इधर आओ और इस बच्चे के हाथ साफ करो। मधुमक्खियाँ तुम्हें चिपट जायेंगी और तुम्हें काट लेंगी। ओह तुम्हारे हाथ मीठे के कारण कितने चिपक रहे हैं!"

पॉल लॉरेन्स डनबर

सन् १९०६ में जब पॉल लॉरेन्स डनबर की मृत्यु हो गई तो उनके मित्र, टोलैडो के मेयर, ब्रॉड व्हिट्लॉक, ने लिखा :—

"प्रकृति, जिसका ज्ञान मनुष्य से अधिक है, पद, उपाधि, जाति तथा देश को ध्यान में न रखकर अवसर का सदैव लाभ उठाती है। उसने बर्न्स को खेत जोतने के हल से और पॉल को एलीवेटर से निकालकर ऊपर उठाया। पॉल ने अपनी जाति के लोगों के लिए वही किया जो बर्न्स ने स्काटलैण्ड के कृषकों के लिए किया—उन्होंने उनका चित्रण अपने ढंग से अपने ही शब्दों में किया—पॉल के काव्य में बाहर से लिया गया और नकल किया गया कुछ भी नहीं था। उनमें सब कुछ स्वदेशी और मौलिक था। इस प्रकार से वह केवल अपनी ही जाति के कवि नहीं हैं—काश मैं लोगों को यह दिखा पाता—बल्कि वह मेरे और आपके और संसार के सभी मनुष्यों के कवि हैं।"

लिंकन के जन्म-दिन पर पॉल लॉरेन्स डनबर को दफनाया गया। सैकड़ों व्यक्तियों ने उनकी अन्तिम क्रिया में भाग लिया। उनकी कब्र के पास उनकी माँ ने सरई का एक वृक्ष लगाया। उनको दफनाने के लिए ऐसा स्थान चुना गया जो उनकी कविता, "ए डैथ सौंग" (मरण-गीत) में वर्णन किये गये स्थान से मिलता-जुलता था। उस गीत में उन्होंने लिखा था :—

"सरई के वृक्ष के नीचे मुझे घास में लिटा दो, जहाँ शाखाओं का संगीत सुनाई देता है और उसके नीचे लेटा हुआ मैं उन्हें यह गाते हुए सुनूँ, 'प्रिय, तुम चिर निद्रा में सो जाओ'।"

डब्ल्यू० सी० हैन्डी

जन्म १८७३

यूरोप के होटलों में जब अमरीकी अतिथि जाते हैं तो वहाँ के वाद्य-यंत्रों पर "दि सैन्टलुई ब्लूज" की धुन बहुधा बजाई जाती है। अमरीका की यह प्रसिद्ध धुन समस्त संसार में विख्यात है। इस धुन को सबसे अधिक बजाया जाता है। इसकी सर्व-प्रियता को देखकर अनेक विदेशी भूल से इसे अमरीका का राष्ट्रीय गान तक समझ बैठते हैं। द्वितीय विश्व-महायुद्ध के समय जब हिटलर की सेनाओं ने फ्रांस पर आक्रमण किया था तो पेरिस के सरकारी रेडियो पर अमरीकी संगीत वर्जित कर दिया गया था। परन्तु फ्रांसीसियों ने "दि सैन्टलुई ब्लूज" की धुन को बजाना तब भी नहीं छोड़ा। जर्मन अधिकारियों ने जब पूछा कि क्या यह अमरीकी संगीत है तो फ्रांसीसियों ने कहा, "नहीं तो! क्या तुम नहीं जानते कि यह गीत उससे भी बहुत पहले का है? इस गीत का नायक फ्रांस का राजा लुई चतुर्दश है, और हीरे की अँगूठियाँ पहिने जिस स्त्री का इसमें उल्लेख किया गया है वह वास्तव में रानी मारी आँतोआँत है। कैसा दुखद अंत हुआ बेचारी का!"

"दि सैन्टलुई ब्लूज" की धुन के लिखनेवाले का जन्म अमरीकी गृह-युद्ध के आठ वर्ष बाद मसिल शोल्ज कैनाल के निकट फ्लोरेन्स, अलाबामा, में हुआ था। हैन्डीज हिल के चर्च में उनका नाम विलियम क्रिस्टॉफर हैन्डी रखा गया। इस पहाड़ी पर बहुत वर्षों से उनके वंश के लोग रहते आ रहे थे। इस कारण उसका नाम हैन्डीज हिल हो गया था। पहाड़ी का चर्च उनके दादा ने बनवाया था। वहाँ चारों ओर आड़ू, नाशपाती, चैरी, बेर आदि फलों के सुन्दर बाग थे जिनमें चिड़ियाँ और तितलियाँ घूमती रहती थीं और

डब्ल्यू० सी० हैन्डी

जहाँ पर रात को जुगनू चमकते थे तथा कभी-कभी कर्कश स्वर में बोलनेवाला उल्लू भी बसेरा लेता था। थोड़ी ही दूर पर चरागाह मे जहाँ पर पशु चरते रहते थे। नदी के किनारे के पास मेढक टर्रटर्र करते रहते थे और जहाँ तहाँ सर्प भी घूमते रहते थे। एक दिन प्रात:काल के समय जब बालक विलियम्स की माँ उन्हें जगाने आई तो उन्होंने देखा कि उनके बिस्तर पर उनके साथ ही एक साँप भी सो रहा था। इस प्रकार से उनका बाल्य-काल प्रकृति की गोद में व्यतीत हुआ। बालक विलियम को चिड़ियों के चहचहाने, झींगुरों के बोलने, पशुओं के रँभाने तथा रात्रि में उल्लुओं और मेढकों के बोलने में एक विशेष प्रकार का संगीत सुनाई देता था।

जब विलियम ने स्कूल जाना प्रारम्भ किया तो उन्हें सबसे अधिक आनन्द संगीत की कक्षा में आता था। उनके सौभाग्य से फिस्क विश्वविद्यालय के एक युवक शिक्षक उनके स्कूल में थे। वह बिना किसी वाद्ययंत्र के ही प्रतिदिन प्रात:काल आधा घंटा संगीत के लिए देते थे। इन शिक्षक को संगीत से बहुत प्रेम था। संगीत-शिक्षक ने विद्यार्थियों को केवल भजन ही नहीं सिखाये बल्कि उन्होंने उन्हें वाग्नर, वर्डी तथा बिजेट जैसे संगीतकारों के गीतों की भी शिक्षा दी। उन्होंने अपने विद्यार्थियों को सुरों का भी पूरा-पूरा ज्ञान कराया। बालक हैन्डी स्कूल से सीखे हुए सुरों और वनों में सुने हुए चिड़ियों और पतिंगों के संगीत में मेल स्थापित करने का प्रयत्न मन में करते रहते थे। यहाँ तक कि गाय के रँभाने में भी उन्हें संगीत दिखाई देता था। आगे चलकर उन्होंने इसी सम्बन्ध में "हांकिंग काउ ब्लूज" धुन लिखी।

परन्तु उनके पिता एक मैथोडिस्ट पादरी थे। वे संगीत को चर्च और स्कूल तक ही सीमित रखने के पक्ष में थे। और संगीत वाद्ययंत्र उनकी दृष्टि में वर्जित थे—वह उन्हें "शैतान के वाद्ययंत्र" कहा करते थे। अपने चर्च में वह एक पियानो तक नहीं रखते थे। परन्तु बालक विलियम को इन सब बातों की

चिन्ता नहीं थी। कोई वाद्ययंत्र न मिलने पर वह कंघी पर ही धुन निकालने लगते, या अपनी माँ के टीन के बर्तनों को ही बजाकर उसमें लय निकालने का प्रयत्न करते थे। कपास के खेतों में गाये जानेवाले गीतों को बहुधा वह मुँह के बाजे पर निकालने का प्रयत्न करते थे। एक बार उन्होंने गाय के सींग से तुरही बनाने का भी प्रयत्न किया परन्तु उससे केवल एक ही सुर निकलता था। बारह वर्ष की उम्र में उन्होंने मसिल शोल्ज के पास पत्थर निकालने की खान में काम करना प्रारम्भ कर दिया। वहाँ उन्होंने काम करनेवाले लोहारों को काम करते-करते तालमय सुर में गाते हुए देखा। इन्हीं दिनों उन्होंने नगर में एक स्थान पर एक गिटार बाजा देखा। धीरे-धीरे पैसे इकट्ठे करके उन्होंने उसे खरीदने का निश्चय किया। अंत में जब उनके पास काफी पैसे हो गये तो उन्होंने उसे खरीद लिया। परन्तु जब वह उसे लेकर घर पहुँचे तो उनके माँ-बाप को घर में गिटार देखकर इतना खेद हुआ कि बहुत देर तक उनके मुँह से कोई बात तक नहीं निकल सकी। उन्होंने गिटार को "शैतान का वाद्ययंत्र" बताया और फौरन ही उसे वापिस कर उसके बदले में स्कूल के लिए उपयोगी वस्तु बैबस्टर का कोश खरीदने का आदेश दिया।

उन दिनों दक्षिण में अभिनेताओं और संगीतकारों को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता था। परन्तु बालक हैन्डी को यह बात समझाना अत्यन्त कठिन था। एक दिन शिक्षक ने कक्षा में सब विद्यार्थियों से पूछा कि पढ़ाई समाप्त करने के पश्चात् वे कौन-सा व्यवसाय अपनायेंगे। विद्यार्थियों ने अपनी रुचि कानून, चिकित्सा, शिक्षा आदि में बताई। विलियम की बारी आने पर जब उनसे भी यही प्रश्न किया गया तो उन्होंने उत्तर दिया, "संगीतकार"। उनके शिक्षक यह सुनकर बहुत अप्रसन्न हुए और उन्होंने विलियम को सब विद्यार्थियों के सम्मुख केवल बुरा भला ही नहीं कहा वरन् उनके पिता को भी इस सम्बन्ध में लिखकर सूचना दे दी। उस रात उनके पिता ने कहा कि वह उन्हें संगीत-

कार बनते देखने की अपेक्षा उनकी मृत्यु देखना अधिक पसन्द करेंगे। परन्तु पिता की इन बातों का पुत्र पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इन्हीं दिनों जिम टर्नर नाम का वीणा बजानेवाला एक व्यक्ति नगर में आया। टर्नर मैम्फीज से आया था, जहाँ उसकी प्रेमिका उसे छोड़कर चली गई थी। उसके चले जाने का टर्नर को इतना दुख हुआ कि वह फौरन रेलवे स्टेशन पहुँचा और वहाँ उसने टिकिटवाले से मैम्फीज से दूर किसी भी स्थान का टिकिट देने को कहा। उसने उसे फ्लोरेन्स का टिकिट दे दिया। इस प्रकार से टर्नर फ्लोरेन्स आ पहुँचा। टर्नर को अपनी वीणा पर विभिन्न प्रकार की सुन्दर धुनों को बजाते देखकर विलियम ने संगीतकार बनने का और भी दृढ़ निश्चय कर लिया।

कुछ दिनों बाद फ्लोरेंस में एक बैन्ड बजानेवाला आया। शीघ्र ही धन इकट्ठा करने के विचार से उसने एक नीग्रो नाई की दूकान में रात के समय कुछ लोगों को बैन्ड बजाने की शिक्षा देनी प्रारम्भ कर दी। विलियम के पास बाजा खरीदने और सीखने के लिए पैसे नहीं थे इस कारण वह दूकान के बाहर खड़े होकर बैन्ड बजाना देखते रहते। उनमें से एक बैन्डवाले ने विलियम को पौने दो डालर में एक पुरानी तुरही बेच दी और उन्हें उसका पकड़ना भी सिखा दिया। अब वह दूकान के बाहर खड़े होकर अन्य व्यक्तियों को देख-देख-कर तुरही बजाने का अभ्यास करने लगे। बैन्डवालों ने यह देखकर अंत में उन्हें भी अन्दर बुला लिया और अपने साथ बैन्ड सीखने की आज्ञा दे दी। एक बार उन लोगों को नगर से बाहर संगीत प्रदर्शन के लिए एक व्यक्ति की आवश्यकता हुई। विलियम स्कूल से भागकर उन लोगों के साथ हो लिये। उस दिन उन्होंने आठ डालर कमाये। उन्होंने सोचा, यह धन देखकर पिता प्रसन्न होंगे, परन्तु उनका विचार गलत निकला। वे इस बात पर बहुत अप्रसन्न हुए और स्कूल से भागने के लिए उन्हें अपने शिक्षक से भी मार खानी पड़ी।

इन्हीं दिनों नगर में प्रसिद्ध जॉर्जिया संगीत मण्डली आई। इसके बैंड, गायकों और बिली कर्सेन्ड्स जैसे मसखरों से हैन्डी बहुत प्रभावित हुए। बिली कर्सेन्डस एक प्याला और एक तश्तरी समूची ही अपने मुँह में रख लेता था। हैन्डी पर इस मण्डली का इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने स्वयं उनके साथ मिलकर एक कार्य-क्रम में भाग लिया। हैन्डी की किशोरावस्था में यह मण्डली एक कार्य-क्रम के लिए जैस्पर, अलाबामा गई। यहाँ पर भोजन के समय में लोग संगीत का कार्य-क्रम प्रस्तुत करते थे। इसके बाद उसमें भाग लेनेवाले लड़के फ्लोरेन्स वापिस लौट आते थे। उनके पिता उनकी इन गतिविधियों के कारण उनसे बहुत अप्रसन्न थे। वह उन्हें पादरी बनाना चाहते थे। पर युवक हैन्डी ने शिक्षक बनना अधिक पसन्द किया। इस कारण स्कूल छोड़ने के बाद वह बर्मिन्घम की काउन्टी टीचर्स परीक्षा में बैठे और द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। परन्तु जब उन्होंने देखा कि शिक्षकों को वेतन में एक डालर प्रतिदिन भी नहीं मिलता तो उन्होंने बैसेमर के एक कारखाने में जाने का निश्चय किया। वहाँ काम के साथ-साथ उन्होंने एक संगीत मण्डली भी बनाई। प्रत्येक रविवार को वह चर्च के संगीत कार्य-क्रम में भी जाते थे। परन्तु बेकारी बढ़ जाने के कारण उन्हें अपनी आय के मुख्य स्रोत, अपने काम, को छोड़ना पड़ा। इस बीच में उन्होंने चार व्यक्तियों की एक मण्डली बना ली थी। जब उन्होंने यह सुना कि शिकागो में एक समारोह होनेवाला है तो चारों युवक एक माल-गाड़ी में बैठकर वहाँ के लिए चल दिये। गाड़ी के एक कर्मचारी को जब यह पता चला तो उसने बीच में ही इन लोगों को उतार दिया। रात्रि का समय था। बेचारे चारों युवक वहीं खड़े होकर गाने लगे। उनका संगीत इतना दुख-पूर्ण था कि उस कर्मचारी ने द्रवित होकर उन्हें गाड़ी में बैठकर डिकैटूर तक जाने की आज्ञा दे दी। हैन्डी के पास बीस सैन्ट थे। इससे उन्होंने अगले दिन एक रोटी और थोड़ा-सा शीरा खरीद लिया और नदी के किनारे बैठकर

नाश्ता करने लगे। रोटी खाते समय उन्होंने नदी में एक नाव देखी जिस पर कुछ स्त्रियाँ घूमने निकली थीं। हैन्डी तुरन्त ही उनके पास दौड़कर गये और उन्हें अपना लिखा हुआ एक गीत दिखाया। स्त्रियों ने उनकी मण्डली को संगीत सुनाने के लिए रख लिया और ये लोग टैनैसी नदी में नाव में बैठकर उन्हें संगीत सुनाने लगे। इस काम के लिए इन लोगों को दस डालर और खाने-पीने का बहुत-सा सामान दिया गया। इस प्रकार घूमते-फिरते अंत में वह शिकागो पहुँच गये। वहाँ जाने पर उन्हें मालूम हुआ कि उत्सव (वर्ष भर के लिए) स्थगित कर दिया गया है।

उन दिनों सैन्ट लुई एक अत्यन्त सुन्दर नगर समझा जाता था, इस कारण ये लोग उधर ही चल दिये। परन्तु उन दिनों बेकारी फैली हुई थी। लोगों के पास बहुत धन नहीं था, इस कारण उनकी मण्डली टूट गई। किसी काम का मिलना अत्यन्त कठिन था। हैन्डी को घुड़दौड़ के मैदान में घोड़ों की घास पर और कभी-कभी अन्य हजारों निर्धन व्यक्तियों के साथ मिसिसिपी नदी के किनारे ही सोना पड़ता था। बाद में उन्होंने टैर्गी स्ट्रीट पर सोने योग्य ऐसा स्थान खोज निकाला जहाँ, पुलिस को धोखा देकर, सोया जा सकता था। एक व्यक्ति ने उन्हें बताया कि पुलिस यह मालूम करने के लिए कि कोई व्यक्ति सोया है या नहीं, उसके पैरों की ओर देखती है। हैन्डी ने शांति से सोने के लिए पैर हिलाते हुए सोने का अभ्यास किया। वहाँ कभी-कभी एक काना व्यक्ति भी सोता था जो पुलिस को धोखा देने के लिए अपनी असली आँख को टोप से ढककर अपनी पत्थर की आँख को खोले रहता था। सड़क पर सोनेवाले व्यक्तियों को भगाने के लिए पुलिस लम्बी-लम्बी छड़ियाँ लिए घूमती थी। परन्तु बेघरबार वाले व्यक्ति वहाँ इतनी सर्दी में सोने के लिए विवश थे। जिन दिनों सर्दी अधिक पड़ती थी उन दिनों ये लोग सूरज का छिपना तक पसन्द नहीं करते थे। सैन्ट लुई के अपने इन्हीं अनुभवों के आधार पर वर्षों बाद हैन्डी ने अपनी यह

प्रसिद्ध धुन लिखी, "सायंकाल की सूरज का छिपना मुझे बहुत बुरा लगता है।" परन्तु इन सब कष्टों के होते हुए भी घर वापिस जाने में वह मानहानि समझते थे। वह अपने पिता का यह कहना नहीं सुनना चाहते थे, मैंने तुमसे पहले ही कहा था ! सत्यानाश हो गया ! संगीतकार निरे आवारा होते हैं !

इस कारण हैन्डी घर वापिस नहीं गये। एक बार फिर उन्होंने इसी प्रकार से एक मालगाड़ी पकड़ी और इवान्सविले, इन्डियाना, पहुँच गये। वहाँ उन्हें सड़क कूटने का काम मिल गया। थोड़े ही दिन बाद उन्होंने वहाँ भी एक बैन्ड में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। एक दिन वह हैन्डरसन, कैन्टकी में एक भोज में संगीत के कार्य-क्रम में भाग लेने गये। उन्हें कैन्टकी बहुत अच्छा लगा इस कारण वह वहीं पर ठहर गये और वहीं उन्होंने विवाह भी कर लिया। वहाँ उन्हें लाइडरक्रैन्ज हाल में चौकीदारी का काम मिल गया। इस स्थान पर एक जर्मन संगीत मंडली संगीत का अभ्यास करती थी, इस प्रकार से हैन्डी को भी संगीत के बारे में और अधिक जानने का अवसर मिल गया। साथ ही साथ उन्होंने रात्रि के समय अपना बैन्ड बजाने का काम भी जारी रखा। बैन्ड बजानेवाली इस मंडली के एक सदस्य को महर की एक नीग्रो मंडली में स्थान मिल गया था। जब उस व्यक्ति को यह पता चला कि उस मंडली को तुरही बजानेवाले एक नये व्यक्ति की आवश्यकता है तो उसने हैन्डी को वह स्थान लेने के लिए लिखा। हैन्डी ने वह स्थान ले लिया। यह घटना सन् १८९६ की है। इस समय के बाद से हैन्डी ने संगीत को अपना व्यवसाय बना लिया।

बचपन में उनकी दादी कहा करती थीं कि इस लड़के के कान बहुत बड़े-बड़े हैं इस कारण इसे संगीत से प्रेम होगा। उनका कहना बिल्कुल ठीक निकला। भ्रमण करनेवाली संगीत मंडली का एक सदस्य होने पर उनकी संगीत-प्रतिभा अनेक क्षेत्रों में विकसित होने लगी। मंडली के लिए वह एक बहुत काम

के व्यक्ति बन गये। वह अनेक कार्य-क्रमों का आयोजन करने लगे और साथ-साथ नई-नई धुनें भी बनाने लगे। एक वर्ष में उनमें इतनी योग्यता आ गई कि वह बड़ी-बड़ी मंडलियों का सफलतापूर्वक संचालन करने लगे। आगामी कुछ वर्षों में हैन्डी ने समस्त संयुक्त राज्य अमरीका, कनाडा, मैक्सिको और क्यूबा का भ्रमण किया। परन्तु अब तक उनके एक पुत्री ने भी जन्म ले लिया था इस कारण उन्होंने अब स्थायी रूप से कोई काम करने का निश्चय किया। यह सोचकर उन्होंने हन्ट्सविले, अलाबामा, के निकट अलाबामा एग्रीकल्चरल एण्ड मैकेनिकल कालिज में संगीत और अँगरेजी की शिक्षा देने का काम अपना लिया। परन्तु उन्हें केवल चालीस डालर प्रति मास वेतन मिलता था, काम भी बहुत अधिक था। इसके अतिरिक्त सबसे खराब बात यह थी कि कालिज के प्रधान केवल भजन और शास्त्रीय संगीत ही पसन्द करते थे—और शास्त्रीय संगीत का अर्थ था यूरोपीय ढंग का संगीत। हैन्डी यह जानते थे कि श्रोतागण अमरीकी संगीत बहुत अधिक पसन्द करते हैं। परन्तु उन्हें इस प्रकार के संगीत की कालिज में शिक्षा देने की आज्ञा नहीं थी। एक दिन उन्होंने अधिकारियों को अपने संगीत द्वारा मूर्ख बनाने का विचार किया। उन्होंने प्रचलित संगीत के एक गीत "माइ रैग्टाइम बेबी" को लेकर उसका शीर्षक बदल दिया और कालिज के होनेवाले एक उत्सव के लिए इस गीत के कार्य-क्रम की घोषणा कर दी। कार्य-क्रम के समाप्त होने पर केवल विद्यार्थियों ने ही नहीं बल्कि शिक्षकों ने भी उसकी प्रशंसा की। सबने उसे बहुत पसन्द किया। परन्तु जब बाद में उन्होंने अधिकारियों को वास्तविक गीत के बारे में बताया तो वे बहुत अप्रसन्न हुए। अलाबामा के उस कालिज में हैन्डी अधिक दिनों तक नहीं रहे। महर की संगीत मंडली में प्रवेश कर वह मंडली के कार्य-क्रमों के संचालक हो गये।

समस्त देश में जब प्रत्येक स्थान पर नये-नये सिनेमागृह खुलने लगे

तो पिछले चालीस वर्ष से प्रचलित संगीत मंडली-प्रणाली का ह्रास होना प्रारम्भ हो गया। तीस वर्षीय हैन्डी ने जो अब तक दो बालकों के पिता बन चुके थे, क्लार्क स्डेल, मिसिसिपी, के नाइट्स ऑव पिथियस बैन्ड में बैन्ड मास्टर का पद ग्रहण करने का निश्चय किया। नदी से कुछ ही दूर डेल्टा में बसे हुए इस नगर में शनिवार की प्रत्येक रात्रि को कपास के खेतों में काम करनेवाले तथा अन्य स्थानों में काम करनेवाले श्रमिक बहुत बड़ी संख्या में एकत्र होते थे। हैन्डी की संगीत-मंडली नृत्य या भोज के लिए संगीत का कार्य-क्रम प्रस्तुत करने को आस-पास के गाँवों का भी भ्रमण करती रहती थी। संगीत से पूर्ण इस क्षेत्र में उन्होंने अनेक खेतों में गाये जानेवाले गीत, नीग्रो श्रमिकों के गीत, बन्दीगृहों में गाये जानेवाले गीत तथा नई-नई धुनें सुनीं। इन सबके आधार पर बाद में उन्होंने अनेक नये गीत और धुनें लिखीं। उनकी मंडली के सब सदस्य संगीत के नियमों का पूर्ण पालन करते थे तथा कार्य-क्रम प्रस्तुत करते समय सुर इत्यादि का पूरा ध्यान रखते थे। मंडली के अधिकांश सदस्य ऐसे धार्मिक वृत्तिवाले परिवारों से आये थे जहाँ संगीत को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता था और हल्के-फुल्के संगीत को बहुत बुरा समझा जाता था। इस कारण ये लोग केवल उच्चकोटि का पुरानी धुनें ही बजाते थे।

एक रात्रि को जब हैन्डी क्लीवलैण्ड, मिसिसिपी, में अपना संगीत का कार्य-क्रम प्रस्तुत कर रहे थे तब बीच में ही एक स्थानीय संगीत मंडली ने उनसे थोड़ा देर के लिए अपना संगीत प्रदर्शन करने की आज्ञा माँगी। हैन्डी ने यह सोचकर कि उनके आदमियों को कुछ आराम मिल जायगा, उन्हें ऐसा करने की आज्ञा दे दा। फटे वस्त्र पहिने इन युवकों ने मंच पर आकर जब मधुर सुर ताल में अपना कार्य-क्रम प्रस्तुत करना प्रारम्भ किया तो समस्त श्रोता प्रसन्न होकर तालियाँ बजा-बजाकर नाचने लगे। इन युवकों ने थोड़ी-सी देर में ही जो प्रभाव डाला वह हैन्डी काफी देर में भी नहीं डाल सके

थे। नये कार्य-क्रम के समाप्त हो जाने के बाद श्रोताओं ने उनसे और अधिक सुनाने के लिए आग्रह किया और उन पर पैसों की बौछार करनी प्रारम्भ कर दी। अंत में हैन्डी ने देखा कि इन युवकों ने थोड़ी-सी ही देर में उनसे बहुत अधिक रुपया पैदा कर लिया है। जिन धुनों को उन युवकों ने बजाया था वे कोई नई धुनें नहीं थीं, वे सब कपास के खेतों में तथा नदी के किनारे काम करनेवालों के प्रतिदिन के गातों पर आधारित थीं। उस रात हैन्डी ने यह भली भाँति समझ लिया कि श्रोताओं को उसी अमरीकी नीग्रो संगीत में अधिक आनन्द आता है जो उन "नौसिखिए युवकों" ने प्रस्तुत किया था।

मैस्फीज में जब हैन्डी को एक बैन्ड का संचालन करने का अवसर मिला तो वहाँ उन्होंने अपनी नई धारणा के अनुसार कार्य करने का निश्चय किया। उन दिनों वहाँ चुनाव हो रहे थे। मेयर के पद के लिए तीन उम्मीदवार खड़े हुए थे। प्रत्येक ने चुनाव के विज्ञापन के लिए एक एक बैन्ड को किराये पर ठहराया। हैन्डी के बैन्ड को एडवर्ड एच० क्रम्प नाम के उम्मीदवार के लिए ठहराया गया। हैन्डी ने अशिक्षित नीग्रो श्रमिकों के गीतों के आधार पर एक नई धुन बनाई। इस नई धुन से सारा मैम्फीज बहुत प्रभावित हुआ। जब यह धुन सड़कों पर बजाई जाती तो श्वेत और अश्वेत सभी लोग सड़कों पर नाचने लगते। हैन्डी के पास एक ही समय में बैन्ड बजाने के लिए अनेक स्थानों से इतने अधिक निमन्त्रण आने लगे कि उन्हें अपनी मंडली को कई भागों में विभक्त करना पड़ा। उनकी नई धुन "मि० क्रम्प" जो नीग्रो गीतों के टूटे-फूटे स्वरों पर आधारित थी, बहुत सफल रही। मि० क्रम्प मैम्फीज के मेयर चुन लिये गये। शीघ्र ही हैन्डी ने और अधिक मंडलियों का संघटन किया। सभी मंडलियाँ मैम्फीज तथा उसके आस-पास के नगरों में प्रत्येक समय व्यस्त रहती थीं। चुनाव समाप्त हो जाने के पश्चात् उन्होंने नई

धुन का शीर्षक "मि० क्रम्म" से बदलकर "दि मैम्फीज़ ब्लूज" कर दिया। और इस प्रकार अमरीका की पहली प्रसिद्ध धुन अस्तित्व में आई।

"दि मैम्फीज़ ब्लूज" धुन सन् १९१२ में प्रकाशित हुई। परन्तु हैन्डी ने धुन के महत्त्व को न समझते हुए उसे पचास डालर में बेच दिया। सम्पूर्ण देश में जब यह धुन धीरे-धीरे प्रसिद्ध हो गई तो जहाँ दूसरे लोगों ने इसके द्वारा हजारों डालर कमाये वहाँ हैन्डी को उससे कुछ भी नहीं मिला। परन्तु इस धुन के कारण वह अत्यन्त प्रसिद्ध हो गये थे इस कारण उन्होंने उसी शैली में और धुनें बनाने का निश्चय किया। हैन्डी अब तक चार बालकों के पिता हो चुके थे इस कारण वह घर पर काम करने में कठिनाई का अनुभव करने लगे। एक दिन उन्होंने बील स्ट्रीट पर एक मकान में एक कमरा किराये पर लिया। वह सारी रात वहीं रहकर एक नई धुन के लिए गीत लिखते रहे। यह गीत उनकी पुरानी स्मृतियों पर आधारित था। उन्होंने पत्थर की खान में काम किया था, वह युवावस्था में नगर-नगर भटकते हुए घूमे थे, उन्होंने सैन्टलुई नगर में, जहाँ वह सूर्य का डूबना नहीं पसन्द करते थे, सड़कों पर रात व्यतीत की थीं, उन्होंने एक स्त्री को यह कहते हुए सुना था कि उसके प्रेमी का हृदय समुद्र में पड़ी हुई पत्थर की चट्टान के समान कठोर है, उन्होंने सैन्टलुई नगर में ऐसी स्त्रियाँ देखी थीं जो हीरे की अँगूठियाँ पहिनती थीं, उन्होंने नदी के किनारे श्रमिकों द्वारा गाये जानेवाले गीत सुने थे—इन सब पुरानी स्मृतियों को एकत्र करके हैन्डी ने एक नई धुन बनाई। इसका शार्षक रखा गया, "दि सैन्टलुई ब्लूज"। अगले दिन इस धुन को उन्होंने वाद्ययंत्रों पर बजाया। रात्रि के समय उन्होंने उसे एक नृत्य के कार्य-क्रम में प्रस्तुत किया। नर्तक-नर्तकियों ने इसे बहुत पसन्द किया। इसे सुनते-सुनते आनन्द-विभोर होकर उन्होंने तालियाँ बजाईं और बार-बार इसे बजाने की माँग की।

नई धुन में व्यस्त रहने के कारण दो दिन तक हैन्डी घर नहीं जा सके थे। इस कारण नृत्य की समाप्ति पर वह तुरन्त घर पहुँचे और अपनी पत्नी को अपनी नई धुन को सफलता के विषय में बताने लगे। परन्तु उनकी पत्नी उनके बाहर जाने के कारण बहुत अप्रसन्न थीं। उन्होंने कहा, "तुमने मुझे क्यों नहीं बताया कि तुम्हें बाहर जाना था ? कहाँ थे तुम अब तक ?"

श्रीमती हैन्डी ने उस नई धुन के सम्बन्ध में उस रात कोई उत्सुकता नहीं दिखाई। वे बहुत अप्रसन्न थीं। परन्तु बाद में उन्होंने और हैन्डी ने, दोनों ही ने, बहुत सुख का अनुभव किया जब "दि सैन्टलुई ब्लूज" के कारण उन्हें हजारों डालर की आय हुई। लगभग सभी प्रसिद्ध गायकों और बैन्डों ने उनकी धुन को गाना प्रारम्भ कर दिया। एक दिन डाकिये ने हैन्डी को विजयी रिकार्डों की एक नई सूची लाकर दी। संगीतज्ञों की सूची को देखते समय जब उनकी दृष्टि "एच" अक्षर पर पहुँची तो उन्होंने देखा :—

हैन्डेल

हैन्डी

हेडैन

उनका नाम दो प्रसिद्ध संगीतकारों के नाम के बीच में है ! उन्हें यह देखकर अपार प्रसन्नता हुई। उन्होंने अपने बालकों को यह दिखाया तो उन्होंने पूछा, "पापा यह दो लोग और कौन हैं ?"

"दि सैन्टलुई ब्लूज" धुन के चार सौ के लगभग भिन्न-भिन्न प्रकार के रिकार्ड बन चुके हैं। नये रिकार्ड अब भी, केवल अँगरेजी में ही नहीं बल्कि संसार की अन्य अनेक भाषाओं में, बन रहे हैं। द्वितीय महायुद्ध के समय कुछ सैनिकों ने ओकिनावा से "दि सैन्टलुई ब्लूज" का एक जापानी रिकार्ड हैन्डी के पास भेजा। साधारण मनुष्यों से लेकर राजा-महाराजाओं तक सभी ने इसे पसन्द किया। राजा एडवर्ड अष्टम बाल मॉरल कैसस में स्काटिश वाद्ययंत्रों

पर इस गीत को बजवाते थे। "लाइफ" पत्रिका के अनुसार महारानी एलिजा-वेथ नृत्य-संगीत के कार्यक्रम में इस धुन को बहुत पसन्द करती हैं। प्रथम विश्व महायुद्ध में सैनिक बैन्ड ने इसे यूरोप में बजाया। इस गीत ने स्टैविंस्की, हानैगर तथा मिल्हाड जैसे आधुनिक संगीतकारों को भी प्रभावित किया है। जॉर्ज गर्शविन पर भी इसका काफी प्रभाव पड़ा, क्योंकि "रैप्सोडी इन ब्लू" तथा "पार्गी एण्ड बैस" जैसी प्रसिद्ध अमरीकी रचनाओं में उन्होंने स्वयं इस बात का उल्लेख किया है। जॉन ऐल्डन कारपेन्टर ने "काट्निप ब्लूज" की रचना की। इसके अतिरिक्त और भी सैकड़ों संगीतकारों ने इस ढंग की धुनें लिखी हैं। इनमें होगी कारमाइकेल की "वाशबोर्ड ब्लूज", क्लेरैन्स विलियम्स की "बेसिन स्ट्राट ब्लूज", जान मर्सर की "ब्लूज इन दि नाइट" तथा हैरल्ड आर्लेन की "स्टार्मी वैदर" धुनें विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। डॉरोथी लामूर ने "दि सैन्टलुई ब्लूज" नामक चल-चित्र में अभिनय किया। इससे पूर्व बेसी स्मिथ ने इसी नाम के एक चल-चित्र में अभिनय किया था। छोटे-छोटे रात्रि-क्लबों से लेकर मेडीसन स्क्वायर गार्डेन तक, नौकाओं से लेकर ब्राडवे के सिनेमा-गृहों तक, रेडियो से लेकर टेलीविजन तक प्रत्येक स्थान पर "दि सैन्टलुई ब्लूज" का प्रदर्शन किया जा चुका है। एक बार शिकागो ट्रिब्यून संगीतोत्सव में १,२५,००० श्रोताओं के सामने तीन हजार व्यक्तियों ने इस गीत का सम्मिलित गान किया। इतने विशाल जनसमूह में कदाचित् ही इससे पूर्व कोई गीत गाया गया होगा।

हैन्डी को प्रसिद्ध और धनी बनानेवाले गीत की रचना उनकी चालीस वर्ष की आयु में हुई थी। उस समय से अब तक वह ब्राडवे के एक माने हुए संगीत-प्रकाशक बन चुके हैं। उनका संगीत प्रकाशन-गृह देश का सबसे बड़ा प्रकाशन-गृह है। उन्होंने अपने संगीत के कार्यक्रम को अमरीका के सभी प्रसिद्ध थियेटरों में प्रस्तुत किया है---इसमें सानफ्रांसिस्को के ट्रेजर आइलैण्ड पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी तथा न्यूयार्क की विश्व-प्रदर्शनी भी सम्मिलित

है। उन्होंने प्रत्येक प्रमुख रेडियो और टेलीविजन कार्यक्रम में भी भाग लिया है। साठ वर्ष की अवस्था में उन्होंने, जो लौरी के साथ, सम्पूर्ण अमरीका का भ्रमण किया और अपनी धुनों का प्रदर्शन किया। बाद में नेत्रहीन हो जाने पर भी उन्होंने न्यूयार्क में बिली रोज के कार्यक्रम में भाग लेना नहीं छोड़ा। उन्होंने अनेक गीतों और धुनों की रचना स्वयं की है, सैकड़ों गीतों और धुनों का संकलन और सम्पादन किया है तथा "फादर ऑव दि ब्लूज" शीर्षक एक सुन्दर आत्मकथा लिखी है। सत्तर वर्ष से अधिक अवस्था में एक बार, जब वह निपट अंधे थे, न्यूयार्क नगर में एक प्लैटफार्म से नीचे गिर पड़े। कुछ दिनों तक उनकी दशा इतनी शोचनीय रही कि प्रत्येक व्यक्ति यह समझने लगा कि अब उनका अन्तिम काल निकट आ गया है। परन्तु वह बच गये और उन्होंने अपने ब्राडवे के कार्यालय, थियेटर, रेडियो और टेलीविजन के काम को फिर प्रारम्भ कर दिया।

उन्होंने नीग्रो ऐक्टर्स गिल्ड के संघटन में सहायता दी। नेत्र-हीन लोगों के लिए उन्होंने अपने नाम से एक आश्रम की स्थापना भी की है। अनेक वर्षों से न्यूयार्क के होटलों में, उनके जन्म-दिवस के अवसर पर दिये गये भोजों में, इस आश्रम के लिए काफी धन इकट्ठा किया जाता रहा है। मैम्फीज़ में भी उनके नाम से एक पार्क बनाया गया है। अपनी युवावस्था में सैन्टलुई नगर के जिस स्थान पर वह भूखे सोते थे उस स्थान पर उनके सम्मान में एक ऐसे घंटाघर के बनाने की योजना बनाई जा रही है जिसके घंटों की आवाज से "दि सैन्टलुई ब्लूज" की धुन निकलेगी। फ्लोरेन्स, अलाबामा, में जहाँ उनका जन्म हुआ था, एक नये डब्ल्यू० सी० हैन्डी स्कूल की स्थापना ऐसे व्यक्ति के सम्मान में की गई है, जिसने आधुनिक अमरीकी संगीत पर बहुत प्रभाव डाला है, तथा जिसने सर्वप्रथम एक बालक के रूप में अलाबामा के कपास के खेतों और पत्थर की खानों में गाये जानेवाले गीतों में संगीत के सौन्दर्य को देखा।

चार्ल्स सी० स्पॉलिंग

जन्म १८७४—मृत्यु १९५२

दासता-उन्मूलन के बाद के कुछ वर्ष स्वतंत्र परन्तु बेघरबार नीग्रो नागरिकों के लिए अत्यन्त कठिनाई के वर्ष थे। बहुधा उनके पास रोगी की चिकित्सा अथवा मृतक की अंतिम क्रिया तक के लिए धन नहीं रहता था। इस कारण इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए उन्होंने आपस में संघटन करना प्रारम्भ कर दिग्रा। असहायों को सहायता देने के लिए, पारस्परिक हित-वर्धन के लिए तथा मृतकों की अंतिम क्रिया करने के लिए अनेक संस्थाओं की स्थापना की गई। ये संस्थाएँ अधिकतर चर्चों से सम्बद्ध थीं। उत्तर के नीग्रो नागरिकों ने तो राज्यों के बीच युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व ही ऐसी अनेक संस्थाएँ बना ली थीं। सन् १७८७ में फिलाडेल्फिया में जिस "स्वतंत्र अफ-रीकी समाज" की स्थापना हुई उसका उद्देश्य रोग में एक दूसरे की सहायता करना तथा विधवाओं और अनाथों के हित में काम करना था। मैसन्स, ऐल्क्स, ऑड फैलोज, तथा १८६७ में एक स्वतंत्र नीग्रो महिला द्वारा स्थापित इंडिपैंडेंट आर्डर ऑव सैन्ट ल्यूक आदि आश्रमों के भी ऐसे ही उद्देश्य थे। सन् १८१० में पाँच हजार डालर की पूँजी से नीग्रो जाति के लोगों की सबसे पहिली बीमा कम्पनी "अफ्रीकन इन्श्योरेन्स कम्पनी" के नाम से स्थापित हुई। आज अमरीका में बीमा व्यवसाय सबसे बड़ा नीग्रो व्यवसाय है, जहाँ दो सौ से भी अधिक कम्पनियों का संचालन केवल नीग्रो व्यापारी ही करते हैं। इन सब कम्पनियों की कुल पूँजी १०००,०००,०००,००० डालर से भी अधिक है।

डरहम की नार्थ कैरोलिना म्युचुअल लाइफ इन्श्योरेन्स कम्पनी संसार की सबसे बड़ी नीग्रो बीमा कम्पनी है। चार्ल्स क्लिटन स्पॉल्डिंग, १९५२ में

अपनी मृत्यु के पूर्व तक, इस कम्पनी के अध्यक्ष थे। इस कम्पनी से उनका सम्बन्ध सन् १८९८ से रहा। वह इसके सबसे पहले मैनेजर थे। उन्होंने इसे अपनी आँखों के सामने प्रगति करते हुए देखा। जिस समय स्पोल्डिंग ने इस कम्पनी की स्थापना में सहयोग दिया उस समय उन्हें बीमे के काम का कोई अनुभव नहीं था। उन्होंने शिक्षा भी केवल आठवीं कक्षा तक ही पाई थी। प्रसिद्ध और धनी होने के बाद वह बहुधा कहा करते थे, "मैं केवल एक बार कालेज गया हूँ और वह भी एक भाषण देने के लिए।"

एब्राहम लिंकन की हत्या के नौ वर्ष बाद, कोलम्बस काउन्टी, उत्तरी कैरोलिना, में एक फार्म में स्पॉल्डिंग का जन्म हुआ था। चौदह बालकों के परिवार में वह तीसरे थे। उनकी गणना बड़े बालकों में की जाती थी, इस कारण खेतों का बहुत-सा काम उन्हें ही करना पड़ता था। स्कूल में वह बहुत अनियमित रूप से जाते थे, इस कारण बड़े होने पर उन्होंने खेती का काम छोड़कर अपनी प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त करने के लिए डरहम जाने का निश्चय किया। नगर में चार्ल्स को दस डालर प्रति मास पर एक होटल में तश्तरियाँ साफ करने का काम मिल गया। बाद में उन्होंने शाम के समय होटल में काम करके दिन में स्कूल जाना प्रारम्भ कर दिया। उस समय वह इक्कीस वर्ष के थे। अपनी कक्षा के अन्य विद्यार्थियों की तुलना में वह बहुत बड़े थे। परन्तु उन्होंने लज्जा का अनुभव करते हुए भी इस बात की कोई चिन्ता नहीं की और निरन्तर स्कूल जाते रहे। २३ वर्ष की अवस्था में उन्होंने आठवीं कक्षा तक की पढ़ाई समाप्त कर ली। डरहम में उस समय नीग्रो विद्यार्थी केवल इतना ही पढ़ सकते थे। इसी समय कुछ नीग्रो नागरिकों ने मिलकर एक किराने की दूकान खोली। प्रत्येक व्यक्ति ने पच्चीस डालर की पूँजी लगाई थी। उन्होंने चार्ल्स स्पॉल्डिंग से इस दूकान का मैनेजर बनने के लिए कहा। इन व्यक्तियों में से किसी को भी इस काम का अनुभव न था।

चार्ल्स सी० स्पॉल्डिङ्ग

फलस्वरूप दूकान में घाटा होने लगा और शीघ्र ही इस व्यापार को समाप्त करना पड़ा। पूँजी लगानेवाले सब लोग अलग हो गये और स्पॉल्डिंग पर तीन सौ डालर का ऋण हो गया। उन्हें इस ऋण को चुकाने में पूरे पाँच वर्ष लगे, परन्तु उन्होंने पूरा-पूरा ऋण चुका दिया।

स्पॉल्डिंग की ईमानदारी और परिश्रम को देखकर जॉन मैरिक नाम का एक नाई उनसे बहुत प्रभावित हुआ। इस व्यक्ति की डरहम में पाँच दूकानें थीं। तीन श्वेत व्यक्तियों के लिए तथा दो नीग्रो लोगों के लिए। यह व्यक्ति अमेरिकन टुबैको कम्पनी के संस्थापक वाशिंगटन ड्यूक का निजी नाई था। मैरिक एक बीमा कम्पनी स्थापित करना चाहता था। स्पॉल्डिंग के चाचा डा० ए० एम० मूर भी बीमे के काम में रुचि रखते थे। ये दोनों व्यक्ति अपने-अपने कामों में अत्यन्त व्यस्त रहते थे इस कारण उन्होंने स्पॉल्डिंग से इस नये व्यवसाय का उत्तरदायित्व सँभालने को कहा। इस काम के लिए अकेले स्पॉल्डिंग को ही नियुक्त किया गया इस कारण बही खाता बनाने, टाइप करने, घूमने, कार्यालय साफ करने तथा चौकीदारी करने आदि का सब काम वही अकेले करते थे। उनका कार्यालय डा० मूर के कार्यालय का एक पीछे का कमरा था। अपनी इस स्थिति का वर्णन करते हुए एक बार उन्होंने कहा, "प्रति दिन प्रातःकाल कार्यालय में सबसे पहले अपने पाजामे को ऊपर समेट कर झाड़ू लगाता, उसके बाद पाजामे को ठीक करके एजेन्ट का काम करता और फिर बाद में कोट पहिन कर मैं जनरल मैनेजर बन जाता था।"

नई बीमा कम्पनी का सबसे पहला ग्राहक जो व्यक्ति बना उसने चालीस डालर के बीमे पर सबसे पहले ६५ सैन्ट का बट्टा दिया। बीमा कराने के कुछ ही दिन बाद उस व्यक्ति की मृत्यु हो गई। कम्पनी को अभी किसी प्रकार की आय नहीं हो पाई थी। जब उसकी विधवा पत्नी अपने पति के बीमे के रुपये लेने आई तो इन लोगों को अपनी जेब से चालीस डालर देने पड़े। इस

घटना के बाद तुरन्त ही नई कम्पनी की ईमानदारी का समाचार सब जगह फैल गया। युवक स्पॉल्डिंग को, और व्यक्तियों को बीमे के लिए राजी करने में विशेष कठिनाई नहीं हुई। प्रथम सप्ताह में उन्तीस डालर और चालीस सैन्ट की आय हुई। वर्ष के अंत तक यह आय बढ़कर ८४० डालर तक पहुँच गई। अब तक १००० डालर की भी आय नहीं हुई थी परन्तु स्पॉल्डिग हतोत्साह नहीं हुए, क्योंकि प्रति सप्ताह धीरे-धीरे ग्राहकों की संख्या बढ़ रही थी। स्पॉल्डिग आस-पास के नगरों और गाँवों में स्वयं जाकर ऐसे लोगों को बीमा कराने का महत्त्व समझाते थे जिन्होंने इससे पूर्व इसके बारे में कभी कुछ नहीं सुना था। बीस वर्ष पश्चात् जब वह इस कम्पनी के मंत्री-कोषाध्यक्ष हो गये तो कम्पनी की वार्षिक आय दस लाख डालर से भी ऊपर पहुँच चुकी थी।

जॉन मैरिक, जो नाई का काम करते थे, २१ वर्ष तक कम्पनी के अध्यक्ष रहे। उनकी मृत्यु के पश्चात् डा० मूर ने इस पद को ग्रहण किया। इन लोगों ने डरहम के नीग्रो नागरिकों के लिए अनेक भलाई के कार्य किये। नीग्रो नागरिकों को सार्वजनिक पुस्तकालय से पुस्तकें लेने की आज्ञा नहीं थी इस कारण इन दोनों ने एक नीग्रो सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की। डा० मूर ने स्वयं बहुत-सी पुस्तकें पुस्तकालय को दीं। नीग्रो चिकित्सकों और नर्सों को नगर के चिकित्सालय में काम करने की आज्ञा नहीं थी। इस पर इन लोगों ने धनी ड्यूक परिवार पर जोर डालकर नीग्रो रोगियों के लिए लिंकन अस्पताल की स्थापना कराई। इस चिकित्सालय में नीग्रो चिकित्सकों और नर्सों के काम सीखने की पूरी व्यवस्था की गई। ग्राम्य स्कूलों की शोचनीय स्थिति के बारे में अपने व्यक्तिगत अनुभव को याद करके डा० मूर ने नीग्रो स्कूलों के एक निरीक्षक को अपने पास से एक वर्ष का वेतन केवल इसलिए दिया कि वह स्कूलों की स्थिति की सूचना व्यवस्थापिका सभा तक पहुँचा सके। निरीक्षक का काम इतना सफल रहा कि अगले वर्ष राज्य ने स्वयं उसके पद को स्थायी बना दिया।

नार्थ कैरोलिना म्युचुअल इन्श्योरेन्स कम्पनी के दोनों संस्थापकों की जब मृत्यु हो गई तो चार्ल्स सी० स्पॉल्डिंग ने उसी उत्तरदायित्व का अनुभव करते हुए कम्पनी के काम को जारी रखा। उन्होंने केवल बीमा को ही अमरीका की एक बड़ी व्यावसायिक संस्था नहीं बनाया, वरन् स्वयं भी विभिन्न गति-विधियों में भाग लिया। सन् १९२१ में उन्होंने नेशनल नीग्रो इन्श्योरेन्स एसोसिएशन की स्थापना की और उसके अध्यक्ष बने। सन् १९२६ में वह नेशनल नीग्रो विजनेस लीग के अध्यक्ष बने। वह हावर्ड तथा शॉ विश्व-विद्यालयों और नार्थ कैरोलिना स्टेट कालिज के ट्रस्टी रहे। वह युवक ईसाई समिति की राष्ट्रीय परिषद् तथा डरहम चैम्बर ऑव कामर्स के सदस्य थे। उन्हें अनेक उपाधियों से सम्मानित किया गया। सन् १९२६ में उन्हें महान् कार्यों के लिए हार्मन गोल्ड पुरस्कार दिया गया।

डरहम में नार्थ कैरोलिना म्युचुअल कम्पनी से सम्बन्धित दो अन्य व्यावसायिक संस्थाओं की स्थापना हुई---दि मैकेनिक्स एण्ड फार्मर्स बैङ्क तथा म्युचुअल बिल्डिंग एण्ड लोन एसोसिएशन। सन् १९२० के बाद चार्ल्स सी० स्पॉल्डिग इन दोनों के अध्यक्ष बने। बीमा कम्पनी की स्थापना के समय मैरिक और मूर के ध्यान में नीग्रो युवकों को व्यावसायिक शिक्षा देने की बात भी थी। उनकी इच्छा ऐसी व्यावसायिक संस्थाएँ खोलने की थी जहाँ नीग्रो युवक-युवतियाँ उन कामों को प्राप्त कर सकें जो दक्षिण में उन्हें नहीं दिये जाते थे। वे यह भी जानते थे कि नीग्रो नागरिकों के लिए गृह-निर्माण आदि के लिए ऋण प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए ही उन्होंने बैंक तथा वित्त-संघ की स्थापना की।

सन् १९५२ में जब चार्ल्स सी० स्पॉल्डिग की मृत्यु हुई तो "दि न्यूयार्क हैरल्ड ट्रिब्यून" नाम के समाचार-पत्र ने लिखा कि नार्थ कैरोलिना म्युचुअल लाइफ इन्श्योरेन्स कम्पनी विश्व की सबसे बड़ी नीग्रो व्यावसायिक

संस्था है । पत्र ने लिखा कि इस कम्पनी के पास तीन करोड़ तीस लाख डालर की पूँजी है और आठ राज्यों में इसके सोलह करोड़ पचास लाख डालर के बीमे चल रहे हैं। स्पॉल्डिग अत्यन्त सौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे और बुकर टी० वाशिंग्टन के "अवसर का लाभ उठाने" के सिद्धांत में पूर्ण विश्वास रखते थे । कठिन परिश्रम के बल पर ही उन्होंने इतनी सफलता प्राप्त की । वह स्वयं आगे बढ़कर काम करने में विश्वास करते थे । युवकों को सम्मति देते समय वह बहुधा कहा करते थे, "पर्वत पर चढ़े बिना तुम पर्वत पर बहने-वाली नदी का पानी नहीं पी सकते ।"

ए० फिलिप रैन्डॉल्फ

जन्म १८८९

अमरीका की पहली शयनकक्षयुक्त रेलगाड़ी का नाम "पाइनीअर" था। उसका सबसे पहला कुली एक नीग्रो था। सन् १८६७ से संयुक्तराज्य अमरीका की सब ऐसी गाड़ियों पर नीग्रो कुली काम करते आ रहे हैं। आज उनकी संख्या लगभग १८,००० है। इनमें से अधिकांश विश्व के सबसे बड़े नीग्रो श्रमसंघ "ब्रदरहुड आव स्लीपिंगकार पोर्टर्स" के सदस्य हैं। इस संघ का संघटन असा फिलिप रैन्डॉल्फ ने किया था।

रैन्डॉल्फ का जन्म १५ अप्रैल सन् १८८९ को फ्लोरिडा के क्रैसैन्ट नगर में हुआ। इनके पिता एक मैथोडिस्ट पादरी थे जो आस-पास के गाँवों में घूम-घूमकर धर्मोपदेश दिया करते थे। उनके घर में धार्मिक पुस्तकों का एक अच्छा-सा पुस्तकालय था। रैन्डॉल्फ इनमें से धार्मिक पुस्तकें तथा शेक्सपीअर के नाटक बहुधा जोर-जोर से पढ़ते रहते थे। स्कूल में यद्यपि वह एक अच्छे विद्यार्थी समझे जाते थे परन्तु वह अत्यन्त कुशाग्र बुद्धिवाले विद्यार्थी नहीं थे। जैक्सनविले के कुकमैन इन्स्टीट्यूट से हाईस्कूल पास करके उन्होंने आगे पढ़ने का विचार छोड़ दिया। शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् उन्होंने उत्तर में जाकर भाग्य-परीक्षा करने का निश्चय किया। इस कारण फिलिप न्यूयार्क पहुँचे, जहाँ उन्होंने छोटे-मोटे कामों के साथ-साथ नगर के कालिज में पढ़ाई भी जारी रखी। कुछ दिनों बाद उन्हें हडसन नदी की नावों में भोजन वितरण करनेवाले का काम मिल गया। परन्तु वहाँ पर काम करनेवाले नौकरों को दिये गये खराब घरों के विरुद्ध आवाज उठाने के कारण उन्हें वहाँ से निकाल दिया गया। अपनी युवावस्था से ही उन्होंने नीग्रो लोगों की ओर विशेष रूप से

ए० फिलिप रैन्डॉल्फ

श्रमिकों की दशा सुधारने में रुचि लेनी आरम्भ कर दी और शीघ्र ही उन्होंने हार्लेम की सड़कों पर खड़े होकर इस विषय पर बोलना भी प्रारम्भ कर दिया। इस सम्बन्ध में वह बीच-बीच में आने-जानेवाली भीड़ को शेक्सपीअर की रचनाओं से उद्धरण भी सुनाते रहते थे।

बाल्यकाल में जब वह फ्लोरिडा में थे, तो उनकी माँ सदैव उन्हें ऐसी गाड़ियों में चढ़ने के लिए मना करती रहती थीं जिनमें केवल श्वेत नागरिकों को ही चढ़ने की आज्ञा थी। उनका कहना था कि अपमानित होकर अलग खड़े रहने से पैरों चलना कहीं अच्छा है। इस कारण रैन्डॉल्फ प्रारम्भ से ही इस पक्षपात की नीति को घृणा की दृष्टि से देखने लगे थे। सन् १९१७ में उन्होंने नीग्रो नागरिकों को जनतंत्रीय अधिकार दिलाने के लिए "दि मैसेन्जर" नाम की पत्रिका के संचालन में सहायता दी। पत्रिका के नाम के नीचे छपा रहता था, "अमरीका की एकमात्र क्रान्तिकारी नीग्रो पत्रिका"। पत्रिका के सम्पादकीय तत्कालीन अवस्था की कटु आलोचना करते थे। प्रथम विश्व महायुद्ध के समय इस पत्रिका ने सरकार के इस नारे को कि वह युद्ध द्वारा संसार को जनतंत्र के लिए एक सुरक्षित स्थान बना रहे हैं, ढोंग बतलाया। "दि मैसेन्जर" ने लिखा जहाँ दक्षिण में नीग्रो नागरिकों को मताधिकार नहीं दिया गया है, जहाँ उनके साथ पक्षपात किया जाता है और जहाँ उन्हें प्रत्येक प्रकार से सताया जाता है, ऐसे नारे लगाना निरा ढोंग है। सन् १९१८ में कुछ समाचार-पत्रों ने फिलिप को अमरीका का "सबसे खतरनाक नीग्रो" कहा, और क्लीवलैण्ड में दिये गये एक भाषण के कारण उन्हें बन्दी बना लिया गया। परन्तु कुछ ही दिनों बाद बिना किसी मुकदमे के उन्हें छोड़ दिया गया। अपने लेखों और भाषणों में रैन्डॉल्फ का यही कहना था कि वह केवल उन्हीं सांविधानिक अधिकारों के लिए आन्दोलन कर रहे हैं जिनके अन्तर्गत प्रत्येक नागरिक को कानून का संरक्षण पाने का अधिकार है। अपने भाषणों में वह

बहुधा कहते थे, "यदि आप अधिकारों का प्रयोग नहीं करते तो उनका कोई मूल्य नहीं है।"

युद्ध के पश्चात् रैन्डॉल्फ ने समाजवादियों की ओर से राजनीतिक क्षेत्र में पदार्पण किया। उन्होंने कई सार्वजनिक पदों के लिए चुनाव में भाग लिया परन्तु उन्हें कहीं सफलता नहीं मिली। नीग्रो दलों में भाषण देने के लिए उन्हें बहुत बुलाया जाता था। एक रात उन्हें पुलमैन पोर्टर्स ऐथलैटिक एसोसिएशन में भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया। वहाँ उन्होंने अमरीकी जीवन में व्यावसायिक संघों के बढ़ते हुए महत्त्व पर प्रकाश डाला। उनके भाषण से प्रभावित होकर रेलगाड़ियों में काम करनेवाले कुछ श्रमिकों ने एक श्रमसंघ की स्थापना में उनके सहयोग की माँग की। इससे पूर्व देश के विभिन्न स्थानों में चार बार ऐसे श्रमसंघ की स्थापना का प्रयास असफल हो चुका था। उन्हें इस समय कम्पनी द्वारा नियंत्रित केवल एक साधारण से बीमे की सुविधा प्राप्त थी। परन्तु उनके काम के घंटों को कम नहीं किया गया था और न रेलगाड़ियों में उनके सोने की व्यवस्था की गई थी। उनके वेतन भी बिल्कुल नहीं बढ़ाये गये थे। इन कुलियों को जब-तब मिले इनाम के पैसों पर ही जीवन व्यतीत करना पड़ता था। घर से दूर काम करते समय भोजन और निवास-स्थान के लिए उन्हें अपने पास से खर्च करना पड़ता था, यहाँ तक कि यात्रियों के जूतों पर पालिश करने के लिए भी उन्हें अपने पैसों से ही पालिश खरीदनी पड़ती थी।

रैन्डॉल्फ स्वयं कभी कुली नहीं रहे थे, परन्तु श्रमसंघों के संघटन और उसके सिद्धान्तों में सदैव से उनकी रुचि थी। उन्होंने अनुभव किया कि नीग्रो श्रमसंघों की स्थापना का समय आ गया है। इस कारण न्यूयार्क के कुलियों ने जब श्रमसंघ के संघटन में उनकी सहायता माँगी तो उन्होंने प्रारम्भ में बिना कोई वेतन लिये ही उनका काम करना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार

सन् १९२५ में हारलेम के ऐल्कसहॉल की सभा में ब्रदरहुड ऑव स्लीपिंग कार पोर्टर्स का निर्माण हुआ। प्रारम्भ में कुछ कठिनाइयाँ आईं। संघ का सदस्य बन जाने के कारण अनेक कुलियों को काम से छुड़ा दिया गया। अनेक लोग श्रमिक-संघ का सदस्य बनने से डरते थे। कुछ का विचार था कि बहुत से संघ नीग्रो श्रमिकों के लिए बन्द थे, इस कारण श्रमसंघों से कोई लाभ नहीं है। श्रमसंघों के महत्त्व को समझाने के लिए प्रमुख नगरों में श्रमसंस्थाएँ खोली गईं। रैन्डॉल्फ ने नये सदस्य बनाने के लिए तथा नीग्रो श्रमिकों को संघों का महत्त्व समझाने के लिए स्वयं देश में भ्रमण किया। उन्होंने अनेक धार्मिक सभाओं में भी भाषण दिये और यह समझाया कि चर्च भी अपने सिद्धान्तों की किसी प्रकार अवहेलना किये बिना श्रम-आन्दोलन में सहयोग दे सकता है। उन्होंने कहा कि ईसा मसीह स्वयं एक बढ़ई और उनके शिष्य श्रमिक थे। "दि मैसेन्जर" पत्रिका कुलियों के संघ की प्रमुख पत्रिका बन गई। दो वर्ष के अन्दर ही नये संघ की सदस्य-संख्या दो हजार से भी ऊपर पहुँच गई। परन्तु अभी भी हजारों कुली शेष थे। बेकारी और काम से निकाले जाने की आशंका से अनेक श्रमिकसंघ की गतिविधियों में भाग लेने से डरते थे। इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी संघ की सदस्य-संख्या बढ़ती रही। सन् १९२९ तक रेलगाड़ियों में काम करनेवाले अधिक से अधिक श्रमिक इस संघ के सदस्य बन चुके थे। अंत में अमेरिकन फैडरेशन ऑव लेबर ने ब्रदरहुड ऑव स्लीपिंगकार पोर्टर्स के लिए एक अधिकार-पत्र स्वीकृत किया। अमरीका के किसी नीग्रो संघ को दिया जानेवाला यह प्रथम अधिकार-पत्र था। ए० फिलिप रैन्डॉल्फ इसके अध्यक्ष बने।

बेकारी के दिनों में इस संघ को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बेकारी के कारण अनेक सदस्य चंदा नहीं दे पाते थे, फलस्वरूप संघ की ऐसी दशा हो गई कि उसके पास बिजली का खर्च देने तक के लिए धन नहीं

रहा । संघ के न्यूयार्क-स्थित कार्यालय में अधिकारियों का अँधेरे में काम करना पड़ता था परन्तु वे श्रमिकों की दशा सुधारने के लिए निरन्तर प्रयत्न करते रहे। अन्त में सन् १९३७ में रैलवे कम्पनी ने ब्रदरहुड के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किये । इस समझौते के अनुसार श्रमिकों के वेतन में दस लाख डालर से भी अधिक वार्षिक वृद्धि कर दी गई, उनके काम के घंटे कम कर दिये गये, और अतिरिक्त काम के लिए अच्छे वेतन की व्यवस्था कर दी गई। यह सब काम बिना हड़ताल के ही हो गया । आज ब्रदरहुड ऑव स्लीपिंग कार पोर्टर्स की गणना देश के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण श्रमसंघों में की जाती है। कोलम्बिया विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र के आचार्य लिओ वोल्मोन ने इस संघ का वर्णन करते हुए लिखा, ''इस संघ की गतिविधियों का इतिहास यह प्रकट करता है कि नीग्रो जाति के लोगों में जनतंत्रीय सिद्धान्तों के आधार पर एक बड़े श्रमसंघ का संघठन करने एवं बुद्धिमत्तापूर्वक अपने स्वामियों से अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने की क्षमता है।''

श्रमिकों के नेता होने के नाते ए० फिलिप रैन्डॉल्फ का महत्त्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। ''अमेरिकन फैडरेशन ऑव लेबर'' में भी इनकी गति-विधियाँ बढ़ती गईं। इसके एक वार्षिक अधिवेशन में उन्होंने उन श्रमसंघों से भी रंगभेद की बाधा को दूर करने का प्रस्ताव रखा जो अभी तक नीग्रो सदस्यों को प्रोत्साहन नहीं देते थे । उन्होंने घोषणा की, ''श्रम आन्दोलन की पूर्ण विजय तब तक नहीं हो सकती जब तक इसके द्वार श्वेत-अश्वेत सब श्रमिकों के लिए समान रूप से न खोल दिये जायँ।'' परन्तु द्वितीय विश्वमहायुद्ध के समय जब तक सरकार ने स्वयं इस समस्या को अपने हाथ में नहीं लिया तब तक इस क्षेत्र में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई। युद्ध की सामग्री बनानेवाले अनेक कारखानों में नीग्रो श्रमिकों को जब काम नहीं दिया गया और अनेक श्रमसंघों ने भी जब रंगभेद की नीति का त्याग नहीं किया तो रैन्डॉल्फ ने इस क्षेत्र में दृढ़ नीति

अपनाने की आवश्यकता का अनुभव किया। उन्होंने कष्ट-निवारण के लिए निवेदन करने के पुराने अमरीकी अधिकार का सहारा लेने का निश्चय किया। उन्होंने नीग्रो नागरिकों को कारखानों में बिना किसी पक्षपात के काम दिलाने की माँग को वाशिंग्टन जाकर राष्ट्रपति और काँग्रेस के सम्मुख रखने के लिए एक प्रदर्शन का संघटन करना प्रारम्भ कर दिया।

अनेक संस्थाओं, चर्चों और समाचार-पत्रों ने उनके इस विचार का समर्थन किया। "वाशिंग्टन चलो" आन्दोलन के समर्थन में देश भर में सभाएँ होने लगीं। सैकड़ों दलों ने वाशिंग्टन जाने के लिए प्रतिनिधि तैयार किये। ऐसी आशा थी कि जून सन् १९४१ तक लगभग पचास हजार नीग्रो नागरिक वाशिंग्टन जाकर समान अधिकारों की माँग करेंगे। सरकारी अधिकारियों ने इस बात का अनुभव किया कि नीग्रो नागरिक वास्तव में अत्यन्त असंतुष्ट हैं और जहाजों तथा अन्य शस्त्रों के कारखानों में काम न पाने के कारण बहुत क्षुब्ध हैं। यह देखकर राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने "वाशिंग्टन चलो" आन्दोलन के कुछ दिनों पूर्व एक आदेश जारी किया जिसके अनुसार युद्ध-सामग्री का निर्माण करने वाले कारखानों में, बिना किसी पक्षपात के, नीग्रो नागरिकों को काम करने की आज्ञा दे दी गई। इस ऐतिहासिक आदेश में स्पष्ट शब्दों में कहा गया कि, "समस्त श्रमसंघों एवं युद्ध-सामग्री बनानेवाले कारखानों के स्वामियों का यह कर्त्तव्य है कि कारखानों में काम देते समय वह जाति, रंग अथवा राष्ट्रीय स्रोत के आधार पर कोई पक्षपात न करें।" इस आदेश को कार्यान्वित करने के लिए वाशिंग्टन में एक समिति भी बनाई गई और यह नियम बना दिया गया कि भविष्य में जिस किसी को भी युद्ध-सामग्री बनाने का ठीका दिया जायगा उसे इस आदेश के अनुसार चलना पड़ेगा।

इतिहासकार, जॉन होपफ्रेंकलिन ने इस आदेश का उल्लेख करते हुए अपनी पुस्तक "फ्राम स्लेवरी टू फ्रीडम" में लिखा, "दासत्व-उन्मूलन की घोषणा

के बाद जितने भी नियम बने नीग्रो नागरिकों ने उन सबमें इस आदेश को सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कह कर इसका स्वागत किया ।'' उन्होंने आगे लिखा कि कुछ व्यापारिक संस्थाओं ने इस आदेश के बाद भी पक्षपात की नीति को नहीं त्यागा । परन्तु क्योंकि सरकार ने उनके अधिकार को मान्यता प्रदान कर दी थी और उनकी कठिनाई को कानून द्वारा दूर कर दिया था इस कारण नीग्रो लोगों ने ''वाशिंगटन चलो'' आन्दोलन के आयोजन का विचार छोड़ दिया। इसके स्थान पर २०,००० नीग्रो नागरिक न्यूयार्क के मेडीसन स्क्वायर गार्डेन में रैन्डाल्फ के नेतृत्व में एकत्र हुए और उन्होंने इस क्षेत्र में अपने प्रयत्नों को जारी रखने की शपथ ली । अवश्य ही पहले की तुलना में अब बहुत अधिक नीग्रो श्रमिकों के लिए उद्योगों के द्वार खुल गये थे । और ए० फिलिप रैन्डाल्फ नीग्रो जाति के व्यक्तियों की दृष्टि में अब एक श्रमिक नेता से बढ़कर राष्ट्रीय नेता हो गये थे ।

रॉल्फ बंच

जन्म १९०४

प्राचीन काल में इजराइल देश, डेविड द्वारा विजित होने से पूर्व, कन्नान की भूमि कहलाता था। बाद में जैसा कि बाइबिल में लिखा है, "डेविड जब वृद्ध हो गया तो उसने अपने पुत्र सोलोमन को इजराइल का राजा बनाया।" कुछ वर्षों बाद इजराइल पर बेबीलोन ने अधिकार कर लिया। इसके बाद फारस तथा मेसीडेनिया के लोगों ने इजराइल पर अधिकार किया। ईसा मसीह के जन्म के समय पैलेस्टाइन रोमन लोगों के हाथ में था। कुछ समय बाद पैलेस्टाइन होलीलैण्ड (पवित्र भूमि) के नाम से पुकारा जाने लगा। रोमन साम्राज्य के ह्रास के पश्चात् जब यह देश मुसलमानों के हाथ में आ गया तब भी इसका होलीलैण्ड नाम चलता रहा। ईसाईधर्म के प्रचार के लिए किये गये युद्धों के समय यहाँ से मुसलमान राजाओं को भगा दिया गया, परन्तु वे फिर वापिस आ गये। प्रथम विश्व-महायुद्ध तक यह प्रदेश तुर्क राजाओं के अधिकार में था। युद्ध के पश्चात् यह अँगरेजों के अधिकार में आ गया। बीसवीं शताब्दी में नात्सियों के अत्याचारों से त्रस्त यहूदी लोग पैलेस्टाइन को अपना घर बनाना चाहते थे। मुसलमानों ने इसका विरोध किया। इस कारण १९३६ में पैलेस्टाइन के यहूदियों और अरबों में आंतरिक संघर्ष प्रारम्भ हो गया। द्वितीय विश्व-महायुद्ध की समाप्ति पर इंगलैण्ड ने अरब-यहूदी समस्या को संयुक्तराष्ट्र-संघ के सम्मुख रखा। संयुक्त-राष्ट्र-संघ ने अंत में इस समस्या को सुलझाने के लिए एक अमरीकी नीग्रो युवक डा० रॉल्फ बंच को नियुक्त किया। डा० बंच ने पहले दोनों दलों में सन्धि कराई और उसके बाद सन् १९४९ में इस संघर्ष को समाप्त कराया।

रॉल्फ बंच

रॉल्फ जॉन्सन बंच का जन्म ७ अगस्त सन् १९०४ को डेट्रॉयट, मिशीगन, में हुआ। इनके पिता नाई का काम करते थे। रॉल्फ का जन्म दूकान के ऊपर एक कमरे में हुआ था, जहाँ उनके माता-पिता, नानी तथा उनकी माँ की दो बहिनें रहती थीं। घर के सभी बड़े लोग काम करते थे। रॉल्फ ने भी परिवार की आय बढ़ाने के लिए बाल्यावस्था में ही समाचार-पत्र बेचने का काम करना प्रारम्भ कर दिया। उनकी नानी बाहर जाकर केवल काम ही नहीं करती थीं वरन् अपने बड़े परिवार की देखभाल भी करती थीं और घर को साफ तथा स्वच्छ रखती थीं। उनके पास सदैव थोड़ा-बहुत अतिरिक्त धन रहता था, जो कठिन समय में काम आता था। जब रॉल्फ के माँ-बाप बीमार हुए और चिकित्सकों ने उन्हें शुष्क वायु वाले पश्चिम प्रदेश में रहने की सम्मति दी तो उनकी नानी ने ही उन्हें वहाँ ले जाने का सब प्रबन्ध किया।

पूरा परिवार, जिसमें वह स्वयं, उनके माँ-बाप, उनकी एक छोटी बहिन, उनकी माँ की दो बहिनें तथा उनकी नानी थीं, धूप और शुष्क वायु की खोज में न्यू मैक्सिको के ऐल्बुकर्क नगर की ओर चल दिया। सैन्टलुई नगर में, जहाँ से गाड़ी दक्षिण की ओर जाती थी, रॉल्फ को प्रथम बार गाड़ी में श्वेत लोगों से दूर अलग स्थान पर खड़ा होना पड़ा। रंगभेद पर आधारित पक्षपात को देखने का रॉल्फ का यह प्रथम अवसर था, इस कारण ट्रेन जब टैक्सास राज्य से निकलकर न्यू मैक्सिको, जहाँ पर नीग्रो नागरिकों को समानाधिकार प्राप्त थे, पहुँची तो रॉल्फ को बहुत प्रसन्नता हुई। दक्षिण-पश्चिम प्रदेश के पर्वतों, रेगिस्तानों तथा निवासियों का देखकर ग्यारह वर्ष के रॉल्फ का हृदय प्रसन्नता से भर गया। उन्होंने धूप और हवा वाले इस नगर को तथा वहाँ के नये स्कूल को बहुत पसन्द किया। परन्तु धूप और हवा से उनकी माँ का गठिया का रोग ठीक नहीं हुआ। वहीं उनकी मृत्यु हो गई।

माँ की मृत्यु के बाद उसके पिता क्षय से अत्यंत कमजोर हो गये और वह भी स्वर्गवासी हुए। माँ-बाप की मृत्यु के पश्चात् नानी ने दोनों बच्चों के पालन-पोषण का काम सँभाल लिया। सबसे पहले उन्होंने रॉल्फ की शिक्षा पर ध्यान देने का निश्चय किया। सन् १९१६ में उनकी नानी उन सबको लेकर पश्चिम में आ गईं। वहाँ पर दो वर्ष बाद लॉस ऐन्जेलेस में रॉल्फ ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त की। उनकी नानी स्कूल का उत्सव देखने गईं जहाँ रॉल्फ को इतिहास तथा अँगरेजी में सबसे अच्छा कार्य करने के लिए दो पुरस्कार दिये गये।

जैफरसन हाईस्कूल में रॉल्फ ने वाद-विवाद प्रतियोगिता, फुटबाल, बास्केटबाल, बेसबाल तथा दौड़ में भाग लिया। वह एक अच्छे खिलाड़ी तथा एक अच्छे विद्यार्थी थे। उनकी नानी स्वयं काम करके रॉल्फ को खेल और पढ़ाई के लिए बहुत-सा समय देती थीं। हाईस्कूल में उनकी सफलता देखकर वह बहुत गर्व का अनुभव करती थीं। गर्मी की छुट्टियों में रॉल्फ काम करके स्कूल की पढ़ाई के लिए धन एकत्र करते थे। पहली छुट्टियों में उन्होंने दरा रँगने के कारखाने में काम किया और दूसरी में हालीवुड के एक अभिनेता के घर में नौकरी की, इसके बाद वह एक समाचार-पत्र के कार्यालय में नौकर हो गये। एक बार जब वहाँ काम करनेवाले सब व्यक्ति बाहर घूमने के लिए गये तो रॉल्फ भी उनके साथ गये। परन्तु वहाँ उन्हें नीग्रो होने के कारण तैरने के हौज में नहीं जाने दिया गया। इस प्रकार की रंगभेद की नीति से वह बहुत क्षुब्ध होते थे। इन सब बातों को देखकर उन्होंने समाज-शास्त्र, नागरिक-शास्त्र, इतिहास आदि विषयों का अध्ययन यह जानने के लिए करना प्रारम्भ कर दिया कि लोकतंत्रीय शासन में भी नीग्रो नागरिकों के मार्ग में इतनी बाधाएँ क्यों उपस्थित की जाती हैं। हाईस्कूल की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर रॉल्फ को नागरिक शास्त्र एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में विशेष योग्यता दिखाने के लिए पुरस्कार दिये गये।

हाईस्कूल तक की शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् रॉल्फ कोई स्थायी काम करने का विचार करने लगे। परन्तु उनकी नानी ने कहा, "युवक, तुम्हें कालिज जाकर पढ़ाई जारी रखनी है।" नानी ने उन्हें आगे पढ़ाने का निश्चय कर लिया था। इस कारण लॉस ऐन्जेलेस में उन्होंने कोलम्बिया विश्वविद्यालय में प्रवेश किया। वहाँ पर उन्हें अपने हाईस्कूल के खेलों की योग्यता के आधार पर चार वर्ष के लिए छात्रवृत्ति मिल गई। परन्तु अपनी पुस्तकों इत्यादि का व्यय निकालने के लिए उन्होंने वहाँ की क्रीड़ा और व्यायामशाला के प्रबन्ध का काम अपना लिया। प्रतिदिन, प्रातःकाल के समय पाँच बजे उठकर वह फर्श इत्यादि साफ करके खेलों के सब सामान को ठीक करते थे। कुछ महीनों तक सब काम ठीक-ठीक चलता रहा, परन्तु शीघ्र ही रॉल्फ के कान में एक फोड़ा निकल आया। उनके कान में एक साधारण-सा तिनका चला गया था जिसका घाव बढ़कर फोड़ा बन गया था। उनके कान में दो बार आपरेशन किया गया। फलस्वरूप वह एक कान से बिल्कुल बहरे हो गये। रोग के कारण कालिज में भी उनका एक वर्ष बेकार गया। यह सब होते हुए भी १९२७ में उन्होंने वहाँ की शिक्षा समाप्त कर ली। परीक्षा में उत्तम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के कारण उन्हें पाँच पदक, पुरस्कार-स्वरूप, मिले और हार्वर्ड विश्वविद्यालय में आगे पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति भी दी गई। लॉस ऐन्जेलेस का नीग्रो समाज रॉल्फ की योग्यता से बहुत प्रभावित हुआ। वहाँ के नीग्रो नागरिकों ने उनके अतिरिक्त व्यय के लिए उन्हें एक हजार डालर दिये। इस विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए पूर्व की ओर उनके प्रस्थान करने के कुछ ही दिन बाद उनकी उन्हीं नानी की मृत्यु हो गई जिन्होंने उन्हें इतने प्रेम और परिश्रम से स्कूल की शिक्षा समाप्त करने में सहायता दी थी।

कैम्ब्रिज में राजनीति-शास्त्र का अध्ययन करते समय रॉल्फ ने एक ऐसे व्यापारी के यहाँ काम करना प्रारम्भ कर दिया जिसकी दृष्टि बहुत निर्बल थी।

वह व्यक्ति रॉल्फ के सद्व्यवहार और ज्ञान से अत्यन्त प्रभावित था। एक दिन कुछ ग्राहकों ने रॉल्फ से काम लेने में आपत्ति दिखाई। व्यापारी ने रॉल्फ की सुनहरी त्वचा को छूकर पूछा कि क्या तुम नीग्रो हो। रॉल्फ के यह बताने पर कि वह नीग्रो है, वृद्ध व्यापारी ने कहा कि मैंने इस बारे में कभी सोचा ही नहीं था और मैं इस पर ध्यान नहीं देना चाहता। उसने उनसे उसी प्रकार काम करते रहने के लिए कहा। न्यू इँगलैण्ड निवासी यह सज्जन रॉल्फ के अभिन्न मित्र हो गये। सन् १९२८ में रॉल्फ नें हार्वर्ड से एम० ए० की परीक्षा पास की। एम० ए० करने के पश्चात् उनके पास पढ़ाने के लिए अनेक निमंत्रण आये। रॉल्फ ने वाशिंग्टन, डी० सी० स्थित हार्वर्ड विश्वविद्यालय में राजनीति-शास्त्र विभाग की स्थापना करके वहाँ शिक्षक का कार्य करने का पद अपना लिया।

रॉल्फ बंच ने अन्य नगरों की तुलना में वाशिंग्टन में रंगभेद की नीति को सबसे अधिक उग्र रूप में देखा। बाद में एक बार उन्होंने बताया कि वह अपना अधिकांश समय कांग्रेस के पुस्तकालय में व्यतीत करते थे, क्योंकि यहीं एक ऐसा स्थान था जहाँ पर नीग्रो नागरिकों को जाने की आज्ञा थी, शेष सब स्थान—थियेटर, चल-चित्रगृह, भोजनालय इत्यादि के द्वार नीग्रो नागरिकों के लिए बन्द थे। राजनीति-शास्त्र के विद्यार्थी होने के नाते रॉल्फ बंच अमरीकी जाति समस्याओं के मूल कारण का ज्ञान प्राप्त करने में रुचि रखते थे। इस विषय का ज्ञान प्राप्त करने के लिए देश की राजधानी सबसे अधिक उपयुक्त स्थान था। इस प्रकार से २४ वर्षीय रॉल्फ अध्ययन करते रहे। इसी बीच अपनी कक्षा की एक लड़की से उन्हें प्रेम हो गया। सन् १९३० में उन्होंने उससे विवाह कर लिया और घर लेकर वाशिंग्टन में ही स्थायी रूप से रहने का निश्चय किया। हार्वर्ड विश्वविद्यालय में वह एक वर्ष तक और अध्ययन करते रहे। कुछ दिनों में वह एक सहायक प्रोफेसर हो गये। उसके बाद वह हार्वर्ड विश्व-

विद्यालय के प्रेसीडेन्ट के सहायक बना दिये गये। सन् १९३१ में उन्हें अपने निबन्ध के लिए सामाजिक समस्याओं पर यूरोप और अफ्रीका जाकर सामग्री एकत्र करने को रोजेनवाल्ड फैलोशिप दी गई। और सन् १९३४ में हार्वर्ड विश्वविद्यालय ने उन्हें राजनीति-शास्त्र में पी·एच० डी० की उपाधि दी। दो वर्ष पश्चात् वह हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हो गये। अब तक वह दो पुत्रियों के पिता बन चुके थे। रॉल्फ बंच वाशिंग्टन में स्थायी रूप से रहकर पढ़ाने का काम करने लगे परन्तु यह क्रम अधिक दिनों तक नहीं चला। जातियों के सम्बन्धों के पंडित के रूप में उनकी ख्याति धीरे-धीरे फैलने लगी थी और अनेक स्थानों से इस क्षेत्र में सहायता देने के लिए उनके पास निमंत्रण आने लगे थे।

सन् १९३६ में डा० बंच स्वैर्थमूर कालिज की इन्स्टीट्यूट ऑव रेस रिलेशन्स के सह-संचालक नियुक्त हुए। सन् १९४१ में स्वीडन के प्रसिद्ध समाज-शास्त्री गन्नर मर्डल को, कार्नेगी फाउन्डेशन ने संयुक्तराज्य अमरीका में नीग्रो-श्वेत सम्बन्धों का विशद अध्ययन करने के लिए नियुक्त किया। उन्होंने रॉल्फ बंच को अपना मुख्य सहकारी चुना। हार्वर्ड विश्वविद्यालय ने डॉ० बंच को यह काम करने के लिए छुट्टी दे दी और वह मर्डल तथा अन्य व्यक्तियों के साथ दक्षिण प्रदेश में घूम-घूमकर नीग्रो और श्वेत नागरिकों से हजारों प्रश्न पूछते हुए सामग्री एकत्र करने लगे। मर्डल और उनके साथियों को पिछड़ी जातियोंवाले लोगों के साथ बातचीत करते समय अनेक बार कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। ये लोग अपने नीग्रो-विरोधी कामों का विवरण नहीं देना चाहते थे और पूछने पर मारपीट तक करने के लिए तैयार हो जाते थे। परन्तु अंत में "ऐन अमेरिकन डाइलेमा" शीर्षक से उनकी पुस्तक प्रकाशित हो ही गई। इस पुस्तक के लिए बंच ने तीन हजार पृष्ठों से भी अधिक की सामग्री एकत्र की थी।

द्वितीय विश्व-महायुद्ध के समय बंच को, एक कान से बहरा होने के कारण, सैनिक सेवा में नहीं लिया गया। परन्तु सरकार ने उन्हें स्टैटेजिक सर्विसेज (युद्ध के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण स्थानों से सम्बन्धित विभाग) के कार्यालय में ले लिया, और उन्हें अफ्रीका तथा अन्य ऐसे औपनिवेशिक प्रदेशों के बारे में सूचना देने के लिए नियुक्त किया जो मित्रराष्ट्रों के लिए सैन्य-दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण थे। जनरल बिल डॉनोवन उन्हें "चलती-फिरती औपनिवेशिक संस्था" के नाम से पुकारते थे, क्योंकि उन्हें अफ्रीका के ऐसे क्षेत्रों का बहुत अच्छा ज्ञान था जहाँ से हिटलर की सेनाओं पर आक्रमण किया जा सकता था। अफ्रीकी जातियों की युद्ध के सम्बन्ध में क्या धारणा है, उनके स्थानीय रीति-रिवाज कैसे हैं, श्वेत व्यक्तियों के सम्बन्ध में उनके क्या विचार हैं, उनके क्षेत्र में हवाई अड्डा बनाने की उन पर क्या प्रतिक्रिया होगी इत्यादि युद्ध के लिए महत्त्वपूर्ण बातों का उनका ज्ञान बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। रॉल्फ बंच ने अपना काम इतनी सफलता से किया कि सरकार ने सन् १९४४ में उन्हें अधीनस्थ प्रदेशों का सहायक प्रधान नियुक्त कर दिया। विभाग के कुछ व्यक्तियों ने एक नीग्रो को इतना महत्त्वपूर्ण पद देने का विरोध किया। परन्तु सेक्रेटरी ऑव स्टेट ने रॉल्फ बंच का समर्थन किया और स्वयं टेलीफोन द्वारा उनके नये पद की नियुक्ति-सूचना उन्हें दी। इस प्रकार से डॉ० बंच की नियुक्ति के साथ अमरीका के इतिहास में प्रथम बार एक नीग्रो को एक राजकीय विभाग का पूर्ण अधिकारी बनाया गया।

युद्ध की समाप्ति पर सरकार ने रॉल्फ बंच को डम्बरटन ओक्स कान्फरेन्स में एक सलाहकार के स्थान पर नियुक्त किया। परिषद् का आयोजन युद्ध से क्षत-विक्षत संसार के आर्थिक पुनर्निर्माण के सम्बन्ध में किया गया था। संयुक्तराष्ट्र-संघ की स्थापना के लिए सॉनफ्रांसिस्को में जब सभाएँ हुईं तो उस समय रॉल्फ बंच कमान्डर हैरल्ड स्टैशन के परामर्शदाता के रूप में

काम कर रहे थे। बंच ने इन सभाओं के लिए बहुत-सी सामग्री एकत्र की। निकटपूर्व, अफ्रीका तथा प्रशान्त महासागर के वह प्रदेश जो शत्रु राष्ट्रों के उपनिवेश थे, उनके लिए युद्ध के पश्चात् ट्रस्टीशिप की व्यवस्था करने में रॉल्फ ने बहुत सहायता दी। रॉल्फ बंच के अनेक सुझावों को संयुक्त राष्ट्र-संघ के चार्टर में सम्मिलित कर लिया गया। विश्व के सभी राज्यों के राजनीतिज्ञ इस विद्वान् नीग्रो युवक से अत्यन्त प्रभावित हुए।

एक के बाद एक करके रॉल्फ बंच की अनेक स्थानों पर नियुक्तियाँ हुईं। सन् १९४५ में वह संयुक्त राज्य प्रतिनिधि मंडल के साथ अन्तर्राष्ट्रीय श्रम परिषद् में भाग लेने पेरिस गये। सन् १९४६ में उन्हें राष्ट्रपति ने कैरीबियन आयोग के लिए नियुक्त किया। वर्जिन द्वीपसमूह में आयोजित वेस्ट इन्डियन परिषद् में उन्हें संयुक्त राज्य कमिश्नर बनाकर भेजा गया। उन्होंने लन्दन और पेरिस में संयुक्तराष्ट्र-संघ के अनेक अधिवेशनों में भाग लिया और सन् १९४७ में संयुक्तराष्ट्र-संघ के जनरल सेक्रेटरी, ट्रिगवेली ने उन्हें अरबों और यहूदियों में समझौता कराने का प्रयत्न करनेवाली संयुक्त-राष्ट्र-संघ की विशेष समिति की सहायता करने के लिए पैलेस्टाइन में भेजा। जब काउन्ट फॉक बर्नेडॉट को वहाँ का मध्यस्थ नियुक्त किया गया तो रॉल्फ बंच को उनका मुख्य सहकारी और उनके सचिवालय का प्रधान बनाकर भेजा गया। स्वीडन के इस राजनीतिज्ञ के साथ उन्होंने पैलेस्टाइन के युद्ध-क्षेत्रों का भ्रमण किया। उनकी मोटरकार पर संयुक्तराष्ट्र-संघ का ध्वज लहराता था। एक ही भूमि पर शताब्दियों से रहती चली आ रही भिन्न-भिन्न धर्मोंवाली इन दोनों जातियों के बीच रक्तपात और विद्वेष को दूर करने के लिए उन्होंने अनेक बैठकों का आयोजन किया। संयुक्तराष्ट्र-संघ की उनकी गाड़ी पर बहुधा आक्रमण किये जाते थे। एक बार उनकी गाड़ी का शोफर मार डाला गया। अत्यन्त शीघ्रता से काम लेने पर ही रॉल्फ बंच गाड़ी को गड्ढे में

गिरने से बचा सके। पैलेस्टाइनवाला उनका काम अवश्य ही अत्यन्त खतरनाक था और उसके पूरे होने की आशा भी बहुत कम थी। राष्ट्रीय, धार्मिक एवं जाति सम्बन्धी समस्याएँ अत्यन्त दुरूह थीं। इसी बीच काउन्ट बर्नेडॉट की हत्या होने से वहाँ की स्थिति और भी अधिक खराब हो गई। आतंकवादियों ने एक सड़क पर उनकी कार रोककर उनकी तथा उनके कई साथियों की हत्या कर दी थी तथा अनेकों को घायल कर दिया था। संयुक्तराष्ट्र-संघ ने तुरन्त ही रॉल्फ बंच के पास तार द्वारा सूचना भेजकर उनसे मृत काउन्ट के मध्यस्थ के पद को सँभालने को कहा।

इस प्रकार की कठिनाइयों के बीच रॉल्फ बंच ने अरबों और यहूदियों के मध्य युद्ध को रोकने और शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया। किसी को भी यह आशा नहीं थी कि उन्हें सफलता मिलेगी। परन्तु उन्होंने अरबों और यहूदियों के प्रतिनिधियों को ग्रीक आइलैंड ऑव रोड्स के एक होटल में सन्धि की बातचीत के लिए बुलाया। प्रारम्भ में दोनों ने आपस में बातचीत तक करने से इन्कार कर दिया। परन्तु अपने धैर्य, सदिच्छा और कौशल के द्वारा रॉल्फ बंच उनमें बातचीत कराने में सफल हुए। अंत में दोनों दलों ने संधि के लिए बात करने की भी स्वीकृति दे दी। बयालिस दिनों तक दोनों में वार्त्ता चलती रही। रॉल्फ बंच को कभी-कभी रात में केवल तीन-चार घंटे ही सोने को मिलता था। उन्होंने इस काम में अपने सलाहकारों एवं सचिवालय की पूरी शक्ति लगा दी। अंत में वह एक अस्थायी सन्धि कराने में सफल हुए। इसके एक महीने पश्चात् युद्ध बन्द कराने का पूरा-पूरा समझौता हो गया। परन्तु सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर आदि होने में एक महीना और लग गया। सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए अरबों और यहूदियों के बीच जो अंतिम बैठक हुई वह लगभग २४ घंटों तक चली। सम्पूर्ण संसार ने इस सन्धि का स्वागत किया। इजरायली प्रतिनिधि-मंडल के नेता ने कहा कि बंच

ने मानवता के हित में बहुत बड़ा काम किया है। अरब दल के नेता शेख ने बंच को विश्व का सबसे महान् व्यक्ति कहकर पुकारा। संसार के सबसे बड़े पुरस्कारों का निर्धारण करनेवाली समिति ने भी इस बात को माना। सन् १९५० में शान्ति स्थापना के लिए रॉल्फ बंच को नोवेल पुरस्कार दिया गया।

आजकल संयुक्तराष्ट्र-संघ के ट्रस्टीशिप विभाग के संचालक के नाते रॉल्फ बंच अपनी योग्यता और विद्वत्ता द्वारा मानवता की सेवा कर रहे हैं। संसार के अनेक स्थानों में अभी भी ऐसे लाखों मनुष्य हैं जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की है। रॉल्फ बंच इन्हीं मनुष्यों की समस्याएँ सुलझाने में लगे हुए हैं। डा० बंच का विश्वास है कि इन मनुष्यों की समस्याएँ सुलझाई जा सकती हैं। उनका कथन है कि उन्हें ऐसे विश्व के निर्माण का पूर्ण विश्वास है जिसके लिए संयुक्तराष्ट्र-संघ सतत प्रयत्न कर रहा है। यह विश्व एक शांतिमय विश्व होगा, इस विश्व में जाति और लिंग के भेद, भाषा अथवा धर्म के आधार पर किसी को भी मानवीय अधिकारों से वंचित नहीं किया जायगा। ऐसे विश्व में सब मनुष्य सम्मान के साथ समानता के स्तर पर जीवन-यापन करेंगे।

मेरिअन एन्डर्सन

मेरिअन एन्डर्सन का जन्म फिलाडेल्फिया के लाल ईंटोंवाले एक छोटे-से घर में हुआ था। इनके जन्म के पूर्व ही नीग्रो गायकों का प्रसिद्ध दल, फिस्क जुबली सिंगर्स, सम्पूर्ण यूरोप में घूम-घूमकर धार्मिक गीतों का प्रचार कर चुका था। इस क्षेत्र में एक नीग्रो स्त्री लोक-गीतों और शास्त्रीय गीतों की गायिका के रूप में काफी प्रसिद्ध भी हो चुकी थी। श्वेत और अश्वेत दोनों जातियों के संगीतज्ञों ने अमरीकी गीतों को बहुत प्रचलित कर दिया था। बर्ट विलियम्स और जार्ज वॉकर के नीग्रो संगीत नाटक ब्राडवे में काफी सफलता प्राप्त कर चुके थे। परन्तु तब तक संगीत में पारंगत कोई ऐसा नीग्रो नहीं हुआ था जो शुबर्ट, हैन्डेल तथा अन्य महान् संगीतज्ञों के गीतों को सफलतापूर्वक गा सके। अधिकांश व्यक्ति नीग्रो गायकों को केवल धार्मिक गीत गाने में ही कुशल समझते थे। रोलैण्ड हेज और मेरिअन एन्डर्सन ने सबसे पहले इस रूढ़ि को तोड़ा।

मेरिअन एन्डर्सन की माँ को चर्च से बहुत प्रेम था। वह घर में सदैव भजनों को गुनगुनाती रहती थीं। मेरिअन के पिता की मृत्यु के बाद उनकी चाची भी उन्हीं के घर में रहने के लिए आईं। उन्हें भी धार्मिक भजनों से बहुत प्रेम था। उनके माता-पिता वर्जिनिया के रहनेवाले थे। उनकी माँ वहाँ पर एक स्कूल में शिक्षिका थीं और पिता खेतों में काम करते थे। फिलाडेल्फिया आने के बाद उनके घर तीन पुत्रियों ने जन्म लिया। मेरिअन के पिता की मृत्यु के बाद उनकी माँ ने एक दूकान में काम करना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु वे इस बात का निरन्तर ध्यान रखती थीं कि उनकी पुत्रियाँ नियमित रूप से स्कूल और चर्च जाती रहें। मेरिअन के पिता यूनियन बैप्टिस्ट चर्च

में काम करते थे इस कारण चर्च ने इन तीनों लड़कियों की देखभाल करना अपना कर्त्तव्य समझा। मेरिअन इन तीनों में सबसे बड़ी थीं। प्रत्येक रविवार को स्कूल के सम्मिलित गानों में भाग लेने के कारण आठ वर्ष की अवस्था से पूर्व ही उन्होंने अनेक भजन और धार्मिक गीत याद कर लिये।

एक दिन मेरिअन ने एक दूकान में एक वायलिन रखी हुई देखी, जिसका मूल्य तीन डालर पैंतालीस सैन्ट था। उन्हें वह वायलिन बहुत अच्छी लगी। पड़ोसियों के घरों की सीढ़ियों को साफ करने का काम करके उन्होंने तीन डालर इकट्ठे कर लिये और दूकानदार ने वह वायलिन उन्हें कम दामों में ही दे दी। परन्तु मेरिअन वायलिन बजाने में कभी प्रवीण नहीं हो सकीं। कुछ वर्षों बाद उनकी माँ ने जब एक पियानो खरीदा तो वह इस नये बाजे के सामने वायलिन को बिल्कुल भूल गईं। मेरिअन जब चौदह वर्ष की थीं तभी उनके मधुर स्वर से चर्च का संगीतकार बहुत प्रभावित हुआ और उन्हें चर्च के प्रमुख संगीत कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर दिया। यहाँ पर उन्होंने भजनों के लय, सुर का पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त किया।

मेरिअन की असाधारण संगीत-प्रतिभा को देखकर चर्च के कुछ सदस्यों ने उन्हें संगीत की शिक्षा दिलाने के लिए धन एकत्रित करना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु उनकी नीग्रो जाति की संगीत-शिक्षिका ने इतनी प्रतिभाशालिनी शिष्या को पढ़ाने के लिए किसी प्रकार का पारिश्रमिक लेने से स्पष्ट इनकार कर दिया। यह देखकर चर्च के सदस्यों ने एकत्रित धन को बैंक में जमा कर दिया जिससे वह मेरिअन की आगामी शिक्षा में काम आ सके। इस बीच मेरिअन ने दक्षिण फिलाडेल्फिया के एक महिला विद्यालय में पढ़ना प्रारंभ कर दिया। यहाँ वे विभिन्न सम्मिलित गानों में भाग लेती थीं और बहुधा प्रधान गायिका बनती थीं। पन्द्रह वर्ष की अवस्था में उन्होंने हैरिसबर्ग के एक सन्डे स्कूल कन्वेशन में अकेले ही अनेक गीत गाये। इसके पश्चात् सम्पूर्ण राज्य में उनकी प्रतिभा की

मेरिअन एण्डर्सन

चर्चा होने लगी। जब उन्होंने हाई-स्कूल की शिक्षा समाप्त की तो फिलाडेल्फिया कोरल सोसायटी ने, जो कि एक नीग्रो संस्था थी, उनकी आगे की शिक्षा में सहायता देने का निश्चय किया और उनके लिए एक योग्य शिक्षक नियुक्त कर दिया। सन् १९२५ में वे तीन सौ अन्य गायक-गायिकाओं के साथ न्यूयार्क फिलहारमोनिक प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए न्यूयार्क गईं। प्रतियोगिता में वे प्रथम आईं। इसके लिए लेवीसॉन स्टेडियम में उन्हें वाद्ययंत्र भेंट किये गये।

मेरिअन की इस सफलता का काफी प्रचार किया गया। पर बहुत से कार्य-क्रमों में भाग लेने का अवसर न मिलने के कारण उन्होंने अपनी शिक्षा जारी रखी। न्यूयार्क में उनके संगीत का कार्यक्रम रखा गया परन्तु वह असफल रहा। इस बीच वे चर्च तथा अन्य स्थानों पर निरन्तर गाती रहीं। सन् १९३० में उन्हें यूरोप जाकर संगीत-शिक्षा प्राप्त करने के लिए रोजेनाल्ड फ़ैलोशिप दी गई। यूरोप में अपने प्रथम वर्ष में सबसे पहले उन्होंने बर्लिन में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। स्कैन्डिनेविया के एक प्रसिद्ध संगीतकार ने उनके इस कार्यक्रम के बारे में सुना। उनके गीतों के विषय में समालोचकों ने कुछ लिखा था, पर उससे भी अधिक वह उनके "एन्डर्सन" नाम से आकर्षित हुआ। उसने कहा, "ओह! स्वेडिश नामवाली नीग्रो गायिका! स्कैन्डिनेविया में इसको अवश्य बहुत सफलता मिलेगी।" उसने अपने दो मित्रों को उनका संगीत सुनने के लिए जर्मनी भेजा। उनमें से एक का नाम कौस्ती वेहनन था। बाद में चल-कर यह व्यक्ति मेरिअन के साथ बहुत दिनों तक रहा।

मेरिअन एन्डर्सन को निश्चय ही स्कैन्डिनेविया में बहुत सफलता मिली। वहाँ उन्होंने फिनलैण्ड और स्वीडन दोनों देशों की भाषाओं में गाना सीखा। उनकी प्रथम यूरोपीय संगीत-यात्रा बहुत सफल रही। अमरीका वापस आने पर उन्होंने अनेक संगीत-कार्यक्रमों में भाग लिया, परन्तु यहाँ उनको आर्थिक दृष्टि से कोई लाभ नहीं हुआ। इधर स्कैन्डिनेविया के निवासी, जो उनके संगीत को

बहुत पसन्द करने लगे थे, स्कैन्डिनेविया आने का निमंत्रण दे रहे थे। इस कारण सन् १९३३ में वे फिर यूरोप गई जहाँ नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क तथा फिनलैण्ड देशों में उन्होंने १४२ गीत सुनाये। डेनमार्क और स्वीडन के राजाओं ने उनका सम्मान किया। सिबेलिअस ने उनके सम्मान में उन्हें एक गीत समर्पित किया। आगामी वसंत ऋतु में मेरिअन ने पहली बार पेरिस में अपना कार्य-क्रम प्रस्तुत किया। पेरिस में उनके संगीत को इतना अधिक पसन्द किया गया कि वहाँ उन्हें एक ही ऋतु में तीन बार संगीत कार्य-क्रमों का आयोजन करना पड़ा। इसी प्रकार अन्य यूरोपीय देशों की राजधानियों में भी मेरिअन को असीम सफलता मिली। सन् १९३५ में प्रसिद्ध संगीतकार, ऑर्टुरो टास्कैनिनी, ने उन्हें साल्जबर्ग में गाते हुए सुना। उसने कहा, "जो संगीत मैंने आज सुना वह इतना उच्च कोटि का है कि सौ वर्षों में केवल एक बार ही उसे सुनकर कोई व्यक्ति अपने को धन्य समझेगा।" यूरोप में संगीत-समालोचकों ने मेरिअन एन्डर्सन को "विश्व की सर्वश्रेष्ठ गायिका" बताया।

मेरिअन एन्डर्सन जब दोबारा अमरीका लौटीं तो वे एक प्रवाण कलाकर्त्री हो चुकी थीं। उनकी सफलता का समाचार पहले से ही अमरीका में फैल चुका था। इस कारण उनके आते ही न्यूयार्क में एक विशाल संगीत समारोह की योजना बनाई गई। परन्तु न्यूयार्क पहुँचने के कुछ दिन पूर्व ऐटलांटिक महासागर पार करनेवाले जहाज में एक तूफान के समय गिर जाने के कारण मेरिअन एन्डर्सन के एक पैर का टखना टूट गया। किन्तु उन्होंने चोट के होते हुए भी कार्यक्रम में भाग लेने का निश्चय किया और अपनी चोट के बारे में लोगों को कुछ बताया भी नहीं। कार्य-क्रमवाली रात को मेरिअन ने एक बहुत लम्बा वस्त्र पहिन लिया जिससे उनके पैर ढक गये और पैर पर चढ़े प्लास्टर को कोई देख भी नहीं सका। पर्दा उठने से पूर्व ही उन्होंने पियानो के पीछे अपने पैरों को छिपा लिया और एक ही पैर पर खड़े होकर

संगीत-प्रदर्शन किया। अगले दिन "दि न्यूयार्क टाइम्स" समाचार-पत्र में हावर्ड टाबमैन ने प्रशंसा-युक्त शब्दों में उनके बारे में लिखा :—

"मेरिअन एन्डर्सन के रूप में हमारे युग की एक महान् गायिका अपनी मातृभूमि में लौट आई है—इसमें कोई सन्देह नहीं है कि संगीत के क्षेत्र की मेरिअन एकछत्र सम्राज्ञी हैं—शब्दों-द्वारा उनके संगीत की प्रशंसा नहीं की जा सकती।"

इसके पश्चात् मेरिअन एन्डर्सन ने सम्पूर्ण अमरीका का भ्रमण किया और तभी से वे देश की प्रमुख गायिका मानी जाने लगी हैं। "वैरायटी" पत्रिका के शब्दों में मेरिअन देश की उन प्रमुख दस गायिकाओं में से हैं जिनकी आय एक लाख डालर प्रति वर्ष है। मिस एन्डर्सन ने श्रेष्ठ वाद्य-यंत्रों के साथ अनेक बार देश के रेडियो और टेलीविजन पर अपने संगीत के प्रेमी लाखों नर-नारियों के लिए संगीत प्रस्तुत किया है। इन वर्षों में उन्होंने यूरोप का भी कई बार भ्रमण किया है। इंगलैण्ड के सम्राट् और सम्राज्ञी तथा फिनलैण्ड की सरकार ने उन्हें विशेष रूप से सम्मानित किया है। अन्य स्थानों की भाँति ही दक्षिणी अमरीका और एशिया में भी उनका संगीत अत्यन्त सफल रहा है। सन् १९३५ से अब तक वियना, ब्यूनोस एअरीज, मास्को तथा टोकियो जैसे दूर-दूर स्थित नगरों में उनके संगीत के कार्यक्रम का औसत सौ प्रति वर्ष रहा है। उनके गीतों के लाखों रिकार्ड समस्त संसार में बिक चुके हैं। अनेक बार ह्वाइट हाउस में गाने के लिए उन्हें बुलाया गया है। उन्होंने पेरिस ऑपेरा तथा न्यूयार्क के मैट्रोपोलिटन ऑपेरा हाउस में गाया है। अनेक कालिजों ने उन्हें उपाधियाँ देकर सम्मानित किया है। सन् १९४४ में स्मिथ कालिज ने मेरिअन एन्डर्सन को डाक्टर ऑव म्यूजिक की उपाधि दी।

इन सब बातों के होते हुए भी मेरिअन एन्डर्सन जाति-भेद के कारण उत्पन्न उन कठिनाइयों से अछूती नहीं रही हैं जो संयुक्तराज्य अमरीका में

भ्रमण करनेवाले नीग्रो कलाकारों के सामने आती हैं। उनके साथी वैहनन ने अपनी पुस्तक "मेरिअन एन्डर्सन" में लिखा है कि किस प्रकार से अनेक होटलों और भोजनालयों में उन्हें सुविधाएँ देने से इन्कार किया गया है। उसने लिखा है कि एक बार दक्षिण के एक नगर में संगीत कार्य-क्रम में भाग लेने के बाद उसके कुछ श्वेत मित्र उन्हें रेलवे स्टेशन के एक प्रमुख प्रतीक्षा-गृह में ले गये। परन्तु एक सिपाही ने उन्हें वहाँ, नीग्रो होने के कारण, नहीं घुसने दिया। इस पर वे नीग्रो यात्रियों के लिए बने हुए छोटे से प्रतीक्षा-गृह में गये, परन्तु वहाँ से भी उन्हें निकाल दिया गया क्योंकि उस प्रतीक्षा-गृह में श्वेत नागरिक, जो इनके साथ थे, नहीं प्रवेश कर सकते थे। इस प्रकार से ट्रेन के आने तक सबको प्लेटफार्म पर ही खड़ा रहना पड़ा।

रंगभेद से उत्पन्न कठिनाई का सबसे अधिक नाटकीय अनुभव मेरिअन को सन् १९३९ में हुआ, जब वाशिंगटन के कान्स्टीट्यूशन हॉल में उन्हें गाने तक की आज्ञा नहीं दी गई। समाचार-पत्रों ने इस समाचार को प्रथम पृष्ठ पर बड़े-बड़े अक्षरों में प्रकाशित किया और अनेक अमरीकी यह जानकर अत्यन्त क्रोधित हुए। इसके विरोध में प्रमुख व्यक्तियों की एक समिति बनाई गई जिसमें महान् कलाकार और प्रमुख सरकारी पदाधिकारी भी सम्मिलित थे। इस समिति के प्रयत्नों के फलस्वरूप मेरिअन एन्डर्सन को वाशिंग्टन में अब्राहम लिंकन की मूर्त्ति के सामने अपना संगीत प्रस्तुत करने की आज्ञा मिल गई। एक ही समय में किसी गायक को इतने अधिक व्यक्तियों ने बहुत कम सुना होगा। ईस्टर सन्डे के दिन खुले मैदान में ७५,००० व्यक्तियों ने खड़े होकर उसका संगीत सुना। अन्य लाखों व्यक्तियों ने इसी कार्य-क्रम को रेडियो तथा बाद में न्यूजरील में देखा। इस कार्यक्रम में सेक्रेटरी हैरल्ड इक्स ने मेरिअन-एन्डर्सन को जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया और उन्होंने इस महान् गायिका को सम्मानित करके जन-तंत्र और समानता के मूल आदर्शों की दुहाई दी।

सन् १९४३ में मेरिअन एन्डर्सन ने आर्फिअस एच० फिशर नाम के एक शिल्पकार से विवाह कर लिया और उसके साथ कनेक्टीकट के एक गाँव में एक सुन्दर घर बसा लिया। यहाँ वह नये गीतों का अभ्यास करती रहती हैं। खेतों में काम करनेवाले उनके पड़ोसी कभी-कभी अँगरेजी, फ्रान्सीसी, फिनिश अथवा जर्मन भाषा में गाये गये उनके मधुर गीत दूर से सुनते रहते हैं और कभी-कभी उन्हें मेरिअन का पुराना नीग्रो गीत भी सुनाई दे जाता है।

मेरिअन एन्डर्सन के मित्रों का कहना है कि उन्होंने अपने धन को अचल सम्पत्ति और सरकारी बांडों में लगा दिया है। अपने जीवन में वे बहुत ही सादगी से रही हैं। उन्होंने अपने साथ कभी किसी नोकरानी या सेक्रेटरी को नहीं लिया। ट्रेन, पानी का जहाज अथवा हवाई जहाज जिस किसी भी सवारी से वे यात्रा करती हैं, अपने कपड़ों को अपने आप ठीक करने के लिए वे एक मशीन अपने साथ रखती हैं। सन् १९४१ में फिलाडेल्फिया में जब उन्हें दस हजार डालर का बॉक पुरस्कार दिया गया तो यह सब धन उन्होंने एक ऐसे ट्रस्ट की स्थापना में लगा दिया जिसकी सहायता से सब जातियों के प्रतिभा-शाली कलाकार उन्नति कर सकें। आजकल इस धन से प्रतिवर्ष प्रतिभाशाली संगीतकार ही छात्रवृत्ति पाते हैं।

जैकी रॉबिन्सन

जन्म १९१९

फ्लोरिडा राज्य की सीमा से थोड़ी ही दूर दक्षिण जॉर्जिया में कैरो नाम का एक गाँव है। वहाँ ३१ जनवरी सन् १९१९ को एक निर्धन कृषक परिवार में जान रूजवेल्ट रॉबिन्सन का जन्म हुआ। पाँच भाई-बहिनों में वह सबसे छोटे थे। उनके होश सँभालने से पहले ही उनके पिता की मृत्यु हो गई और बालकों के पालन-पोषण का सब भार उनकी माँ पर आ गया। इस कारण जब वह चौदह महीने के हुए और उनके अन्य भाई-बहिन ढाई वर्ष से लेकर दस वर्ष के थे तब उनकी माँ, श्रीमती माली रॉबिन्सन, कैलीफोर्निया चली गईं। उन्होंने सुन रखा था कि कैलीफोर्निया में बेकारी कम है और स्कूलों में नीग्रो विद्यार्थियों को पढ़ने की अनुमति है। पैसेडेना में श्रीमती रॉबिन्सन के एक सौतेले भाई रहते थे। उन्होंने उन्हें आश्रय देने का वचन दिया। बच्चे उन्हें मामा बर्टन कहते थे और उन्हें अपने पिता के समान मानते थे। इस प्रकार से ये चार भाई और एक बहिन उनके दो कमरोंवाले घर में रहने लगे।

सबसे छोटे बच्चे को उन्होंने जैकी कहकर पुकारना प्रारम्भ कर दिया। बालक जैकी कैलीफोर्निया की धूप और हवा में बढ़कर खूब हृष्ट-पुष्ट होने लगा। श्रीमती रॉबिन्सन कभी घरों में काम करके और कभी कपड़े धोने का काम करके अपने बच्चों को काफी स्वच्छ रखती थीं। परन्तु इतने बड़े परिवार में बच्चों को कभी-कभी पेटभर खाना तक नहीं मिल पाता था। बालक जैकी कभी-कभी एक दयालु शिक्षिका के साथ भरपेट खाना खाते थे और कभी-कभी वे बाजार से मटर लाते और अपना पेट भरने के लिए केवल दाने

ही नहीं बल्कि उसका छिलका तक खा जाते। उनकी माँ प्रत्येक शनिवार की रात्रि को उनके कपड़े धोकर उन पर लोहा करती थीं जिससे रविवार के स्कूल में सब बच्चे स्वच्छ कपड़े पहिनकर जा सकें। वह प्रत्येक प्रकार से अपने बालकों को स्वच्छ रखने का प्रयत्न करती थीं। उनके खाने, कपड़े और घर के खर्च के लिए उन्हें बहुधा घर से बाहर काम करने जाना पड़ता था। परन्तु अकेली स्त्री के लिए बच्चों के लिए पाँच जोड़ी जूते तथा पर्याप्त भोजन का प्रबन्ध करना सरल नहीं था। बच्चों के पालन-पोषण के लिए उनके पास पर्याप्त साधन नहीं थे फिर भी बच्चों पर उनका स्नेह बहुत अधिक था।

सन् १९३० में जो बेकारी फैली उससे इनके परिवार को बहुत कठिनाई हुई। परन्तु मॉली रॉबिन्सन के पाँचों बच्चों ने क्लीवलैण्ड ऐलीमेन्टरी स्कूल या म्योर टैक्निकल हाईस्कूल में पढ़ाई जारी रखी। म्योर स्कूल में जैकी के बड़े भाई मैक दौड़ और कूद के खेलों के चैम्पियन हो गये। हृष्ट-पुष्ट बालक जैकी भी अपने स्कूल की फुटबाल टीम के सदस्य बन गये और उन्होंने अपने खेल में सफलता प्राप्त करनी प्रारम्भ कर दी। रॉबिन्सन परिवार के ये दो लड़के प्रारम्भ से ही अच्छे खिलाड़ी कहलाने लगे।

चौदह वर्ष की उम्र में जैकी ने हाईस्कूल में प्रवेश किया। वहाँ उन्होंने अपने भाई का अनुसरण करते हुए फुटबाल, बास्केटबाल, बेसबाल, दौड़ तथा अन्य खेलों में सफलतापूर्वक भाग लिया। जिस समय उन्होंने म्यार स्कूल की शिक्षा समाप्त की उस समय वह पूर्ण युवक हो चुके थे। उनकी लम्बाई ६ फुट और वजन १७५ पाउन्ड था, परन्तु उनका शरीर अभी भी बढ़ रहा था। पैसेडैना जूनियर कालिज के शिक्षकों ने हृदय से उनका स्वागत किया। यहाँ भी वह खेलों में निरन्तर प्रगति करते रहे। कुदान में उन्होंने अपने कालिज में २५ फुट ६½ इंच का नया रिकार्ड स्थापित किया। इसी प्रकार से बेसबाल के खेल में उन्होंने बहुत प्रगति का। बास्केटबाल के एक

जैकी रॉबिन्सन

ही खेल में उन्होंने अकेले २८ प्वाइन्ट बनाकर एक नया रिकार्ड बनाया। वह एक प्रसिद्ध, मृदुल स्वभाव तथा गर्व-रहित विद्यार्थी थे। जैकी जब तीसरी कक्षा में थे तभी से वह अपने सहपाठियों से अपने खेल के बारे में प्रशंसा भरे शब्द सुनते आ रहे थे, इस कारण जूनियर कालिज के खेलों की सफलता को उन्होंने कोई विशेष महत्त्व नहीं दिया।

जूनियर कालिज में दो वर्ष पढ़ने के पश्चात् सन् १९३८ में, जैकी ने शारीरिक व्यायाम आदि की शिक्षा प्राप्त करने के लिए लास ऐन्जेलेस में, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में प्रवेश किया। पैसेडैना से प्रतिदिन सुबह को वहाँ तक बस द्वारा पहुँचने में एक घंटे से भी अधिक समय लगता था। इसी बीच उनके भाई मैक ने १९३६ में बर्लिन में होनेवाले ऑलम्पिक खेलों में भाग लिया। वहाँ वह २०० मीटर की दौड़ में दूसरे स्थान में रहे, परन्तु कुछ दिनों बाद ही पेरिस में उन्होंने इसी दौड़ में रिकार्ड स्थापित किया। जैकी अपने बड़े भाई मैक पर बहुत श्रद्धा रखते थे और निरन्तर उनका अनुसरण करने का प्रयत्न करते रहते थे। थोड़े दिनों बाद जैकी यू० सी० एल० ए० की ओर से फुटबाल खेलने गये। वहाँ उन्होंने इस खेल में बहुत ख्याति प्राप्त की। वाशिंग्टन विश्वविद्यालय के विरुद्ध यू० सी० एल० ए० को जिताने में जैकी का काफी भाग था। खेल में उनके पैर के एक टखने में काफी चोट आई परन्तु इससे पहले ही उन्होंने अपने खेल की श्रेष्ठता का परिचय दे दिया था। इस क्षेत्र में भी उन्होंने एक नया रिकार्ड बनाया। इस खेल के पश्चात् जैकी का नाम एक अच्छे खिलाड़ी के रूप में दूर-दूर तक फैल गया।

बास्केटबाल के खेल में भी उन्हें ऐसी ही सफलता मिली। जैकी ने बारह खेलों में भाग लिया और सब में उन्होंने अपनी श्रेष्ठता का परिचय दिया। उस वर्ष पैसिफिक कोस्ट कान्फरेन्स में उन्होंने इस खेल में सबसे अधिक प्वाइन्ट (१४८) बनाये। और कूद के खेल का भी रिकार्ड तोड़ा तथा वैस्ट कोस्ट

टीम के साथ खेलकर नार्थ वैस्टर्न की प्रसिद्ध टीम को हराया। इसी समय एक लड़की से उनका प्रेम हो गया और वह विवाह करने का विचार करने लगे। इन्हीं दिनों मामा बर्टन बीमार हो गये। जैकी ने पूरे परिवार का भार अकेली अपनी माँ पर छोड़ देना अनुचित समझा। इस कारण १९४१ में, जब यू० सी० एल० ए० में उनका द्वितीय वर्ष था, उन्होंने कालिज छोड़ दिया और एक सरकारी सिविलियन कन्जर्वेशन कोर में खेलों के संचालक का पद ग्रहण कर लिया।

सरकारी कैम्प के बन्द हो जाने पर वह शिकागो ट्रिब्यून आल-स्टार फुटबाल के खेल में भाग लेने शिकागो गये। इसके बाद उनके पास लास ऐन्जेलेस बुलडाग फुटबाल टीम के साथ अच्छे वेतन पर खेलने के लिए निमंत्रण आया। परन्तु होनोलूलू में कुछ दिन खेल खेलने के बाद ही पर्लहार्बर पर बम-वर्षा का समाचार आया और इसके साथ अमरीका भी द्वितीय विश्व-महायुद्ध में सम्मिलित हो गया। इससे जैकी सेना में चले गये। उन्हें फोर्टरिले, कन्यास, भेजा गया, जहाँ लुई से उनकी मित्रता हो गई। घोड़ों का निरीक्षण करते हुए जैकी उन्हें टीका लगाकर अपना समय व्यतीत करने लगे। प्रारम्भिक सैन्य-शिक्षण के बाद उन्होंने आफिसर स्कूल के लिए आवेदन-पत्र भेजा। सन् १९४३ में उन्हें सैकिंड लैफ्टिनैन्ट बनाकर टैक्साज भेज दिया गया, जहाँ कुछ ही महीनों बाद उनके अफसर ने उनके कार्य की प्रशंसा करके उनकी सिफारिश की। परन्तु उनके टखने की पुरानी चोट उन्हें फिर से कष्ट देने लगी थी, इस कारण ३१ महीने की सैन्य सेवा के पश्चात् उन्होंने यह काम छोड़ दिया।

पैसेडैना में उनकी माँ के चर्च के एक पादरी टैक्साज के एक छोटे से नीग्रो कालिज के अध्यक्ष हो गये थे। जैकी जब सेना के काम से छुट्टी पाकर घर वापिस आये तो उन्हें घर पर एक पत्र मिला जिसमें उनसे उस कालिज के खेलों के संचालक का पद ग्रहण करने के लिए कहा गया था। जैकी युवकों के

साथ काम करना पसन्द करते थे, इस कारण उन्होंने इस पद के लिए अपनी स्वीकृति दे दी। परन्तु वह अधिक दिनों तक वहाँ नहीं रहे, क्योंकि वहाँ वेतन बहुत कम मिलता था और घर पर मामा बर्टन के बहुत बीमार हो जाने के कारण उनकी माँ काफी कठिनाई में पड़ गई थीं। नीग्रो अमराकी बेसबाल लीग की एक टीम कन्सास सिटी मौनार्क्स ने जब उन्हें चार सौ डालर प्रति मास के वेतन पर काम देने को कहा तो उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया और वह दक्षिण से लेकर उत्तर तक सब प्रदेशों में घूम-घूमकर खेलने लगे। इस भ्रमण का अर्थ था, खराब होटलों में रहना, श्वेत व्यक्तियों से अलग बैठकर भोजन करना, बसों में बैठकर धूल फाँकते हुए दूर-दूर जाना और एक दिन में बिना आराम किये छः-सात खेल तक खेलना। परन्तु इस काम में जैकी को इतना पारिश्रमिक मिल जाता था कि वह कुछ डालर, घर भेजकर भी अपने विवाह के लिए धन एकत्र कर सकते थे। सन् १९४६ में उन्होंने रेशेल इसम नाम की उस लड़की से विवाह कर लिया जिससे उन्हें प्रेम हो गया था।

शिकागो में एक खेल के पश्चात् मध्याह्न के समय ब्रुकलिन डाजर्स बेसबाल टीम के एक स्काउट, क्लाइड स्यूकफोर्थ ने जब जैकी से न्यूयार्क जाकर डाजर्स के प्रेसीडेंट, ब्राँच रिके से भेंट करने को कहा तो जैकी ने उसकी बात पर ध्यान देने से बिल्कुल इनकार कर दिया। यह ठीक मालूम नहीं कि वह स्यूकफोर्थ पर अप्रसन्न हुए थे या उन्होंने हँसी उड़ाई थी। परन्तु इतना निश्चित था कि वह अन्य नीग्रो खिलाड़ियों की भाँति ही बड़ी टीमों के साथ खेलने के झूठे प्रलोभन में नहीं आना चाहते थे। उन दिनों नीग्रो खिलाड़ियों की दृष्टि में "महान् अमरीकी खेल", "महान् अमरीकी श्वेत खेल" था। नीग्रो खिलाड़ियों को बड़ी टीमों में कभी नहीं लिया जाता था। सैचेल पेज तथा जोश गिब्सन-जैसे श्रेष्ठ नीग्रो खिलाड़ियों तक को बड़ी अमरीकी टीमों के साथ खेलने का अवसर नहीं दिया गया था। वे केवल भ्रमण करनेवाली नीग्रो टीमों में ही

खेलते थे। इस कारण जब क्लाइड स्यूकफोर्थ ने जैकी से ब्रुकलिन डाजर्स के प्रेसीडेन्ट से मिलने को कहा तो उन्होंने समझा कि वह केवल परिहास कर रहा है। जब स्यूकफोर्थ ने उन्हें समझाया कि वह परिहास नहीं कर रहा है, बल्कि उनके खेल को कई दिनों से देखकर वह उनसे बहुत प्रभावित हुआ है और चाहता है कि वह न्यूयार्क जाकर ब्राँच रिकी से अवश्य भेंट करें, तो जैकी ने वहाँ जाना स्वीकार कर लिया। जैकी के कन्धे में चोट आ गई थी, इस कारण बिना जुर्माने के वह कुछ दिन के लिए न्यूयार्क जा सकते थे। इस घटना के बाद जो कुछ हुआ, वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

द्वितीय विश्व-महायुद्ध के समय अमरीका की श्वेत और अश्वेत जातियों के पारस्परिक सम्बन्ध काफी अच्छे हो गये थे। ए० फिलिप रैन्डाल्फ के "वाशिंग्टन चलो आन्दोलन" की धमकी के बाद युद्ध-सामग्री बनानेवाले सब कारखाने नीग्रो नागरिकों के लिए खोल दिये गये थे। नीग्रो जाति की प्रगति के लिए निर्मित नेशनल एसोसिएशन में नीग्रो और श्वेत उदारवादियों के दबाव डालने पर नौ-सेना, वायु-सेना तथा अन्य ऐसे विभागों के द्वार नीग्रो नागरिकों के लिए खोल दिये गये थे जो उनके लिए इससे पहले बन्द थे। भारतवर्ष और सुदूर-पूर्व से लेकर संयुक्तराष्ट्र-संघ तक विश्व की समस्त अश्वेत जातियों के लोगों को समानता के स्तर पर लाने के लिए एक आन्दोलन चल पड़ा था। अमरीकी नीग्रो भी, देश के प्रमुख नेताओं का समर्थन प्राप्त करके, मत-दान, गृह-निर्माण, शिक्षा आदि में नीग्रो जाति के लोगों के लिए समान अधिकारों की माँग कर रहे थे। बेसबाल के खेल में भी स्वभावतः ही समानता का व्यवहार अपेक्षित था। बड़ी-बड़ी टीमों में नीग्रो खिलाड़ियों को सम्मिलित करने का अब समय आ गया था। इसके अतिरिक्त युद्ध में बहुत से श्रेष्ठ खिलाड़ी मारे गये थे। अमरीका की बड़ी टीमों के नये खिलाड़ियों की आवश्यकता थी। नये नीग्रो खिलाड़ियों में जैकी निश्चय ही एक अच्छे खिलाड़ी थे, जिन्होंने कालिज में

खेलों की अच्छी शिक्षा पाई थी। ब्रांचरिकी ने ब्रुकलिन डाजर्स का एक छोटी टीम, मान्ट्रियल रायलस ऑव दि इन्टर्नेशनल लीग में जैकी रॉबिन्सन को स्थान दिलाने की व्यवस्था कर दी।

मान्ट्रियल में अपने प्रथम खेलों में जैकी ने अपनी योग्यता का अद्भुत परिचय दिया। न्यूयार्क बीयर्स के विरुद्ध अपने पहले खेल में जैकी ने बहुत सफलता प्राप्त की। अंत में मान्ट्रियल ने इन्टर्नेशनल लीग को जीत लिया। मान्ट्रियल में लुई विले कर्नेलस के विरुद्ध भी विजय प्राप्त की। अपना टीम में जैकी का खेल सबसे श्रेष्ठ रहा उनके इतने अच्छे खेल के बाद भी लोग उनके डाजर्स में लाये जाने का विरोध करते थे। कुछ लोगों का कहना था कि खिलाड़ी और दर्शक दोनों जैकी का विरोध करेंगे और सेन्टलुई-जैसे नगरों में तो जैका को मैदान में देखकर मार-पीट तक हो जाने की आशंका है। प्रथम नीग्रो खिलाड़ी को एक बड़ी टीम में रखने से पहले ब्रांच रिकी को इन सब बातों पर विचार करना था। परन्तु १० अप्रैल १९४७ को उन्होंने पाँच हजार डालर के वेतन पर रॉबिन्सन को डाजर्स का एक सदस्य बना ही लिया।

जैकी के खेल के कारण कहीं भी मारपीट और झगड़े नहीं हुए। उनकी टीम का खेल देखने के लिए दर्शक उमड़े पड़ते थे। जैकी का खेल अत्यन्त सफल रहा। रिकी ने उन्हें अपने सुन्दर खेल द्वारा सब कठिनाइयों को दूर करने की सम्मति दी थी। दर्शकों और उनके साथी खिलाड़ियों ने उनके साथ बहुत सुन्दर व्यवहार किया। कभी-कभी उन्हें चिढ़ाने के लिए कुछ लोग उनके खेल के समय एक काली बिल्ली को मैदान में छोड़ देते थे परन्तु उन्होंने इन सब बातों की कोई चिन्ता न करके अपना खेल जारी रखा। धीरे-धीरे वह एक प्रसिद्ध खिलाड़ी हो गये और नेशनल लीग का उन्हें एक अत्यन्त उपयोगी सदस्य समझा जाने लगा। सन् १९४९ में वह इसके बैटिंग चैम्पियन हो गये। जिस वर्ष वे टीम में सम्मिलित हुए उसी वर्ष डाजर्स ने पुरस्कार जीत लिया। रॉबिन्सन

को "वर्ष की रुकी" कह कर पुकारा जाने लगा। एक समय ऐसा आया जब समाचार-पत्र अन्य किसी खिलाड़ी की तुलना में रॉबिन्सन के बारे में ही सबसे अधिक लिखते थे। जैकी रॉबिन्सन युद्ध के बाद अमरीका में नीग्रो जाति की प्रगति के प्रतीक बन गये।

डॉजर्स ने रॉबिन्सन को लाखों दर्शकों के सम्मुख खेलने का अवसर दिया। एक टीम में एक नीग्रो के प्रवेश करते ही सब टीमों ने नीग्रो खिलाड़ियों-को लेना प्रारम्भ कर दिया। डॉजर्स ने स्वयं डान न्यूकॉम्बे, रॉय कैम्पैनेला तथा डैन बैन्कहैड को अपनाया। इस प्रकार से "महान् अमरीकी खेल" वास्तव में एक "अमरीकी" खेल बन गया। ऐबैट्स फील्ड में प्रथम बार खेलने के लिए जाकर जैकी रॉबिन्सन ने जन-तंत्र का दीपक जला दिया।